





ई अंकमे अछि:-

सखाबी-पेठाबी-(वधु कथा संग्रह)- लक्ष्म विवास बाय

भाषागत बचन-लेखन -[मानक मैथिली]

 बिदेह मैथिली पोथी डाउनलोड साइट


 VI DEHA MAI TH I L I BOOKS FREE DOWNLOAD SITE


बिदेह ई-पत्रिकाक सञ्चालन प्रबन्धन अंक (ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी मे) पी.डी.एफ. डाउनलोडक लेन नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि । All the old issues of Videha e journal (in Braille, Tirhuta and Devanagari versions) are available for pdf download at the following link.

बिदेह ई-पत्रिकाक सञ्चालन प्रबन्धन अंक ब्रेल, तिरहुता आ देवनागरी कगमे Videha e journal's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

बिदेह ई-पत्रिकाक पहिल ३० अंक

बिदेह ई-पत्रिकाक ३०म सँ आगाँक अंक


 बिदेह आब.एस.एस.एफ.डी एनीमेष्ट-बलेकें अपन साइट/ ईमेलपर लगाउ ।


 ईमेल "लेखाईष्ट" पर "एड गाडजेट" मे "हरीड" सेलेक्ट कर "हरीड सु.आब.एन." मे <http://www.videha.co.in/index.xml> ईमेल केलसँ सेहो बिदेह हरीड प्राप्त कर सकैत छी । गुगल बीडवमे पढ़ी लेन <http://reader.google.com/> पर जा कर Add a Subscription ईमेल लिंक कर आ खाली स्थानमे <http://www.videha.co.in/index.xml> पोस्ट कर आ Add ईमेल दराउ ।




Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

 [Join official Videha facebook group.](#)

 [Join Videha google groups](#)

 विदेह वेडियो:मैथिली कथा-कविता आदिक पहिन पोडकास्ट सागुष्ट

<http://videha123radio.wordpress.com/>

मैथिली देरनागरी वा मिथिलाक्षरमे नहि देखि/ लिखि पाबि रहल छी, (cannot see/write Maithili in Devanagari / Mithilakshara follow links below or contact at ggajendra@videha.com) तँ एहि हेतु नीचाँक लिंक सभ पब जाउ। संगहि विदेहक सुभ मैथिली भाषापाक/ बचना लेखक नर-पुवान अंक पढ़ू।

<http://devanaagari.net/>

<http://kaulonline.com/uninagari/> (एतए रीँअमे आँनलाइन देरनागरी थाँगप कर, रीँअसँ काँपी कर आ रड डाक्यूमेण्टमे पोस्ट कए रड हाँगनेँ मेर कर। विशेष जानकारीक लेन ggajendra@videha.com पब संपर्क कर।)(Use Firefox 4.0 (from WWW.MOZILLA.COM) / Opera / Safari / Internet Explorer 8.0 / Flock 2.0 / Google Chrome for best view of 'Videha' Maithili e-journal at <http://www.videha.co.in/>.)

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Book/ paintings/ photo files. विदेहक पुवान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ ह्यागुष्टे सभक हाँगने सभ (उँचावा, रँड सुख साव आ दुर्लभित मंत्र सहित) डाउनलोड करबक हेतु नीचाँक लिंक पब जाउ।

[VIDEHA ARCHIVE विदेह आर्काइव](#)



ज्यातिबीघ्नर पुरि महाकरि रिद्यापति । भावत आ लपानक माष्टिमे पसवत मिथिनाक धवती
प्राटीन कानहिसेँ महान प्रकय ओ महिना लोकनिक कर्मभूमि बहन अछि । मिथिनाक महान प्रकय ओ महिना
लोकनिक छि मिथिना बने से देखु ।



शौबी-शिकवक पानरशे कानक मुर्ति, एहिमे मिथिनाकबसे (१२०० रर्य पुरिक) अलिजेथ अकित
अछि । मिथिनाक भावत आ लपानक माष्टिमे पसवत एहि तबहक अत्याच प्राटीन आ नर स्वागत, छि,
अलिजेथ आ मुर्तिकनाक हेतु देखु मिथिनाक खोज

मिथिना, मैथिल आ मैथिलीसेँ सङ्गित सुचना, सम्पर्क, अद्ययण संगति बिदेहक सर्ट-गजल आ नृज सर्सि आ
मिथिना, मैथिल आ मैथिलीसेँ सङ्गित लेरसांगठ सभक समग्र संकलनक जेन देखु बिदेह सुला सर्क
अद्ययण

बेषन बाब भाबना (बेषनाक सभस लोकलपुत्र भावत) भाब भाब ।

सखाबी-पेटीबी

(वघु कथा संग्रह)

कन्द रिवास बाय

एकसतुबि-

१. **असव छेटी**



२. अजाति
३. पौषिषिष
४. निरास शयापत्र
५. निगुतवाल
६. महाजन
७. तौरवरीचनी
८. पौषाहावक गहूम
९. सभसँ पेष पुजा
१०. जेठ
११. सोगरी उछावर
१२. नन्दि-जेछाग
१३. रौराधाय
१४. टोछसक दली
१५. जाति-गाति
१६. बिरकक बिरक
१७. राउ १क गहूँथा
१८. अकृषव छेँ
१९. शाल्सव छेँ
२०. सोट
२१. एना



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



असव लैषी

निर्मली मणेशेनमँ पदुछिम एकठी गाम छै डुजणा । डुजणा मधुरैणी जिनक लोकली थाणामे पडै छै । रैस मणेशेनमँ गाम । पठन-लिखन लोकक गाम । गजरीनगर-डाकूठव आ आला केतेक सबकारी लोकरी करैत गामक लोक । मामुठवक कमी ले । निर्मली रोजाव नग बहराक कावा, किछ लोक रिजलेस-रैगाव करैत । जेकवा कोला लोकरी ले, ओ निर्मली रोजावक सेठ-माहुकाव ओगठाम लोकरी कइ अपन गजब-रैसव करैत । किछ लोक निर्मली रोजावमे निजि मकुन थोनि अपन धंधा करैत । किछ लोक रोजावमे चर्षिया सबके धुंशेन पठरैत आ ओगमँ जे आमद होगत तओमँ रैगवता शीत करैत ।

डुजणा गाममे एकगोठे डन जीतन दुधिया । जातिक मनाह, दुदा माड मालेक कोला नुर्छा ले । अपन जातिक पेशा जोर्छा निर्मली एशेनक रैगनमे एकठी चह दोकाष चना अपन परिवारक गजब-रैसव करैत । चह पीरैजे बेनरैक कर्मचारी मभ अरैत, चहो पीरैत आ बँग-रिबंगक गणो करैत । एशेनक रैगनमे चहक दोकाष हेरैक कावणे ट्रेण पकडैरैना मोसाहिव मभ सेहो चह पीरैत । जीतन नीक चह रैतै तँ आला गहिकी मभ दोकाषपर आरि-आरि चह पीरैत । जीतनके धीरे-धीरे नीक आमदनी हुअ नगन । रोजावमे बहक कावा आ नीक-नीक लोकक गण सुनि जीतना बुनियाव भइ गेन । चहक मंग रिमफुठे बाखन नगन । जओमँ आमदनी आरो रैठि गेन । जीतन सेनद्रेन रैक निर्मलीमे खाता थोना किछ कपेआ खातामे जमा कवइ नगन ।

निर्मली एशेनमँ ददुछिम निर्मली हाग मकुन । मकुनक मठजे चाँवक मिनक बमला । रैस-पदुछिम रैबख पहिल ओग बमलापर धान सुखाएन जागत डन । दुदा एहव आरि कइ मिन रैस भइ गेन अछि । तँ आरि बमलापर घाम-पात जमनि गेन अछि । जीतनके मानुम भेन जे मिनक बमलारैना जमीन रीकि बहन अछि ओ गण सुनि जीतन मिनक मलजब मिश्रीजी नग गेन । मिश्रीजी कखला-कखला जीतन दोकाषपर चह पीरै डन । जीतनके देखैत राजन-

“आरह-आरह जीतन रैसह ।”

जीतन हाथ जोर्छा मिश्री जीके प्रणाम करैत एक रैगन गठ भइ गेन, रैसन ले । मिश्रीजी केतरौ रैसजे जीतनके कहनथि दुदा जीतन ले रैस राजन-

“मानिक गीके छै, हम तुवत छनि जखर । किछ गण कवरैक अछि तँ ए अरौ ।”

मिश्रीजी नग तीन-चारि गोठे पहिलमँ रैसन डन । मिश्रीजी पढनथि-

“कोला खाम रौत छह की ?”

जीतन राजन-

“है, मानिक । दुदा अथनि अपन नग आरो लोक मभ दुधिय तँ हम दोसव घड़ी आरै ।”

मिश्रीजी कहनथि-

“गीक छै । गीक छै । तौवा रैसी ले लोकरैह, तौहव चहक दोकाष रैबदेतह । हम सामे रोजाव जाएँ तँ तौवे दोकाषपर चहो पीरै आ गणो बुमि जेर । जा ।”

जीतन राजन-

“रैस मानिक ।”

जीतन अपना दोकाषपर आरि गेन । सामथि मिश्रीजी दोकाषपर एना । जीतन एकठी मणेशेन चह रैना मिश्रीजीक हाथमे देनक । मिश्रीजी चहक दुस्की जैत पढनथि-

“कहए जीतन, कोन गणे हमरा देवापर गेन छेनह ?”

जीतन राजन-

“मानिक, सुननिह हें जे बमलारैना जमीन रिकक छै । सह बुनेजे गेन बही ।”



मिश्रोजी कहलथि-

“है, जमीन तँ रीकि बहन अछि। अदहसँ रेंनी जमीन रिंकिओ गेन। केकवा जेन तँ गप करै छह।”

जीतन रोजन-

“मानिक, एक कष्टा जमीनक केते कपेखा देरैए पड़त।”

मिश्रोजी कहलथि-

“तँ जेरैह तँ तोवा एकू नाथमे दिया देरैह। दोसब जेन सरौ नाथ।”

जीतन हाथ जोड़त रोजन-

“हमही जेरै मानिक। दुजगसँ आरि कइ दोकान थोलेमे अरैव भइ जाए। नगमे बहरै तँ सरैले दोकान थोनरै आ देवीसँ रँग कवरै तँ आमादनीओ दोरैव भइ जाएत। जँ जमीन भइ जाएत तँ एकठा थोपड़ि गठका देरै।”

मिश्रोजी कहलथि-

“ग्रीक छै। ग्रीक छै। काहि बोले आठ रँजे आरैह। जमीना देखा देरैह आ तोवा नामे रूको कइ देरैह। जेतके कपेखा हेतह से तारै जमो कइ दिखह। रीकी मास भविमे पुवा कइ दिहक। महिना दिन पछाति सेठजी दिनगीसँ एता। सरैहक बजिसुट्टी हेते तहीमे तोरो हेतह।”

जीतन हाथ जोड़त रोजन-

“ग्रीक छै मानिक। हम आठ रँजे आरि जमरै।”

मिश्रोजी जखनि चाहक दाम देरैए नगना तँ जीतन कहलथि-

“ले मानिक, पाग बाखु।”

मिश्रोजी कहलथि-

“ले जीतन, अखनि ले। जखनि तोवा जमीन भइ जेतह तखनि चाहो पीअरै आ रिसकठे खाएरै। अखनि पाग बधि छैह।” अ कहि मिश्रोजी जीतनक गननापव एकठा सिका बधि रँजाव दिन रिदा भइ गेना।

अगिना दिन बोले जीतन मिश्रोजीक डेवापव पहुँचन। मिश्रोजी बगलक रँगनमे अणष घब रँलल छथि। जीतनके देखते मिश्रोजी पहिल जमीन देखोनथि। जीतनके जमीन पमि भइ गेलै। गदपीव आरि अणषा नामे रूक कवा जेनक। रेंकसँ कपेखा निकानि मिश्रोजी नग जमा कइ आएन। पटामे हजाव ठाका खातामे छेलै। असनी हजाव निकानि मिश्रोजी नग जमा कइ आएन। अगिना महिनामे सेठजी दिनगीसँ आरि सभके जमीन लिखि देनथि। जीतन अणषा जमीनमे माँठ भवा एकठा थोपड़ि रँगा ओगमे बहन आगन। आरै ओ सरैले चारि रँजे दोकान थोले आ वारि तक दम रँजे रँग कव।

जीतन जे चारि रँजे बोले दोकान थोले चह रँगरैए तँ सभसँ पहिल एक कप चह सुठैशेन माम्ठव अनीन चठजीके दइ अरनि। तेकव पछाति ओ अणषा चह पीरैए आ रेंचरौ कव। निर्मनी सुठैशेनक सुठैशेन माम्ठव अनीन चठजी नगधग पचण-छुण रँखक रेंकती। पणो शीतिनिकेतनमे प्राणसव। एकठा रेंठे आसणसोनमे गजनिगव दोसब रेंठे अमेरिकामे गजनिगव। रेंठे कनकतामे रेंक मलजव। तँ अनीन चठजी असणले निर्मनीमे बहि लाकवी करै छथि। चठजीक रिचाव बहन जे पणो लाकवी छोड़ि हमवा रंग बधि। दूदा पणो क रिचाव ओगसँ तिन बधि। हूकव रिचाव बधि जे एम.ए.-पी.ए.ड. केरौ तँ ओकवा रेंकाव किअए जाए देरै। पटामे हजाव ठाका महिना दवमाहा भेठैए। जखनि कि चठजी सहिरके पटामे हजाव भेठै छथि। तँ चठजी सहिर असणले बहे छथि। एकठा हेठनरैना दिक थोलाग डेवापव पहुँचा दग छथि। बतका थोलाग हेठनेमे जा कइ थो पड़ छथि।

जीतन दिनमे चारि रेंव हूकवा ठेरुणपव चह पहुँचा अरै छथि।



बरि दिन दस रोजे दिनमे जखनि जीतन चाह नऽ कऽ छैजी सहैर नग गेल तँ छैजी सहैर जीतनकेँ पुछनखि-

“कहअ जीतन की हान-दान छै ।”

जीतन जरारै देनकनि-

“सब, सब ठीक छै ।”

“आछा जीतन, अ रौतारैह तौवा केते रौन-रौटा छह ।”

“सब, हमरा दूरी रौटी आ एकरी रौटी अछि । जेठकाक नाँ सुकन आ जौठकाक रिकन । सबसँ जेठ रौटी अछि जेकब नाँ सुकनी बखल जी । किशक तँ उ सुकन दिन जन्मन छैनए ।”

छैजी सहैर तीन बरिसँ निरमलीमे स्पेशल मास्टर छथि । तँए थोड़-रूत मैथिली रोजे छन । छैजी सहैर जीतनकेँ हएव पुछनखि-

“आछा, अ रौतारैह । रौन-रौटा सबकेँ पठरै छहक की ले ।”

जीतन रौजन-

“कहाँ पठ रौ छिँ सब । दूरी रौटी दोकानपब बहए । रौटी गाममे बहए । एकरी रिकनी बखल अछि ।”

छैजी सहैर कहनखि-

“ले जीतन, अ नीक रौत ले जी । तँ, अपना रौटाकेँ सुकन ले भेजे छह । पठरै-निखरै ले छहक । एसँ हमरा तौवा प्रति रौट दूथ छह । देखह हमर एकरी रौटी अमेरिकामे अछि । दोसर अमनसोममे अछि आ रागत नीति निकेतनमे प्राप्ति आ रौटी रौक मलजब अछि । हम अमनमे एतए बहै जी । दूथ सहे जी । सब अगन-अगन कएना कमाए । देखह जीतन, कालिसँ तौथँ अपना रौटी-रौटीकेँ पठनाग सुक कबह । नीकसँ पठ रौह । अछि-आक-आक रौन-रौन । हमर हादर कनकतौमे मोष्टियाक काज करैत बहथि । रूमकन जीतन ? हमरा रौतपब रियास दहक । कालि एगारह रोजे हम तौवा दोकानपब आधर । जँ तौवा दूरी रौटीकेँ चाहक दोकानपब देखरह तँ तौवा हाथक चाह पीअर जेठ देर ।”

जीतन हाथ जोड़त रौजन-

“सब, कालिसँ रौटा सबकेँ अमन पठरै ।”

छैजी सहैर रौजना-

“सुनह जीतन, सबकाबी सुकनमे पठ । ग ले होग छै । तँ, अपना रौटी-रौटीकेँ कन्तेनमे पठ रौह । आ देवापब शुभन सेहो पठ रौह ।”

जीतन हाथ जोड़त रौजन-

“ठीक छै सब । ज्ञान भावती अमनमे नाँ निखा देरै । ओग अमनक हेड मास्टर हमरे गामक गोपान साहू जी । हमरा दोकानपब सब दिन साँममे चाह पीरैले अरै छथि । आग साँममे हूकसँ गप कवरै ।”

छैजी सहैर रौजना-

“आछा जीतन, आर ज्ञान । हमरा गपक थियान बथिअ ।”

“जी सब, एकदम थियान बथरै ।” कहि जीतन अपना दोकानपब आरि गेल ।

साँममे जखनि गोपान साहू चाह पीरैले दोकानपब एना तँ जीतन हूकसँ दूरी रौटी आ रौटीकेँ पठ । ग ले गप केनक ।

“पचास ठीका महिलामे तीनु रौटाकेँ पठ । देरै ।” अ रौत गोपान साहू कहनखि ।

जीतन गोपानजीसँ एकरी शुभियाँ मास्टरक सेहो रेरुखा कबए कहनकनि । गोपानजी कहनखि-

“हमी पठ । देरै अहाँ छिता ले कक । महिलामे सए ठीका देरैए पछत । पहिल कालि दस रोजे कन्तेनपब आरि तीनुक नाम निखाड ।”



जीतन हाथ जोड़ते गोपानजीके कनकनि-

“रहूत-रहूत धैरवाद ।”

गोपान साहू चार पीर चलि गेला । दोसर दिन जीतन दूनु रैठी आ रैठीके नर सुकनपव पहुँच नाँउ लिखा देलक । सामने गाम जा पगोउके निर्मलीए आनि लेलक । पूवा परिवारक संग जीतन आरि निर्मलीएसे बहए नगन । एकठा घर बहरै करै एकठा ठोवा एकटावी ठाँनि लेलक । तीनु भिया-पुत्रा सब दिन सुकन जाए-अरैए नगले । सामे-साम गोपानजी धुँशेन पट्टरैए जीतनक डेवापव आरैए नगनथि ।

समय रिठैत देरी ले होग छै । आग जीतन निर्मली हाग सुकनक रंगनमे बसावना जमीनपव तीन मजिना मकास रंवा लेलक । आरि जीतन चारक दोकान छोड़ि देलक । किएक ले जोड़त दूनु सुकन आ रिकन गज्जिनियव भऽ गेल । रैठी-सुकनी निर्मली कण्याँ उँट्ट रिद्यानयमे शिक्षिका पदपव कार्यवत भेली । जखेकि जेठका रैठी-सुकन दूरगमे गज्जिनियव आ छेठका रैठी-रिकन दिनीमे गज्जिनियव ।

जीतनक गच्छा ले बहए जे चारक दोकान छोड़ि दूदा रैठी-रैठीक जिदक काषा दोकान छोड़ए पड़ल । रैठीक जिद रैनी बहनि किएक तँ निर्मलीएसे लोकवी करै छथि । दूदा जीतनक गच्छा बह जे एही चारक दोकानसँ हम एते केरौँ तँए एकवा रँग केलाग ठीक ले रहत ।

तीनु मन्तानक रिखाह-दुवागमन भऽ गेल । जेठका रैठी सुकन दूरगमे मकास खरीद उतग रँसि गेल । छेठका रैठी दिनीमे जमीन कीनि आनीमाल मकास रँलनक । दूदा जीतनक हुँपव दुखक पहाड़ धुँष्ट पड़ल । पगो-जीतनी जीतनके छोड़ि दूनिगसँ चलि गेली । माएक किरियाक्रमे दूनु भाँग गाम आएन छन । माएक मवना पछाति सुकनी रूपे संग बहन नगनी । सुकनीक दूना शकवजी गनाहराद रँक दवतंगमे लोकवी करै छथि । भेनि-भेनि बातिमे निर्मली अरै छथि आ सोमे-सोम बोले दवतंग चलि जाग छथि । सुकनी अपणा पिता नग बहि हुँक सेरा-ठहन करैत लोकवी करैए ।

पगोके दूगना तीनिघ मास पछाति जीतनके नकरा नपकि लेलक । सुकनी पिताके लेल आव.री.मेमोरियन निजि अस्पतानमे भती करौनक किएक तँ सबकारीमे गनाज रँठा या जकाँ सबके ले होग छै । पिताक रिमावीक खरिबि दूनु तैयाके सुकनी योरांगनपव देलक । दूनु भाँगक रँसतता तंगी आरैए तँ ले देलके दूदा कपेआ पठा देलके आ कहलके जे रँठा याँ जकाँ गनाज कवाली । सुकनी आ हुँकव दूना शकवजी दुष्टी नऽ जीतनक देख-लेख कवए नगनथि । एक हपता राद आवरी मेमोरियनक डाकूठव सुकनी आ शकवजीके कहनथि-

“बोगीके आरि घले नऽ जाँ । अ आरि किछए दिक मेहमास छथि । घलेपव जेतेक सेरा-ठहन रहत करै जेरँसि ।”

डाकूठव सहैरँक रात सुनि सुकनी कान्ध नगन । शकवजी अस्पतानक रँकाया टुकता कऽ एकठा गाड़ी आननथि । उग गाड़ीसँ सब कियो निर्मली एना । निर्मली आरि सुकनी तैया सबके सब समाचाव रँता देलक । दवतंगसँ एनाक तेसरे दिन लेल जीतन दमा तोड़ि देलक । सुकनीक कलैत-कलैत आँधि नान भऽ गेल । गोपानजी मासूठव सहैरँके पता नगनथि तँ जिगेसामे एनथि । सुकनीके असगरे देखि गोपानजी हणपव दूनु भाँगके जगतरे देनथि । गोपानजी सुकनके योरांगनपव पढनथि-

“नहामेके दाहसंकाव कएन जाए आकि अहाँक एना पछाति कएन जेते ?”

सुकन आ रिकन दूनु भाँग कहनथि-

“ले थकदेर, जारै धरि हम दूनु भाँग ले आरि तारै धरि हमवा राबूजीके रँवफमे बाखन जाए । हम सब राबू जीक दर्शन करब तेकव राद दाह-संकाव करब । हम सब पलेसँ पठना आरैए आ पठनासँ निजि गाड़ी ताड़ । कऽ निर्मली आरैए ।”



जीतनक मबनाक तेसब दिन दूनु भाँग अगन-अगन परिवारक मंग रोजेरो गाड़िसँ निर्मली पहुँचन । तेगो सबकेँ देखि सुकनी कलैत दूनुक पएवपव गिब पड़न । सुकन-रिंकन अगना रापक पएवपव माथ बगड़-त-बगड़-त कानि कइ आँधि नान कइ जेनक । गोपान राँरुकेँ खरँबि तेन तँ ओहो एना । गोपान राँरुकेँ देखिते दूनु भाँग हुनका पएवपव गिब आरो जोब-जोबसँ कए नगन । गोपान राँरु दूनु भाँगकेँ टुप हूअ कहनथि-
“दाह-संस्कारक तैयारी करै जाह ।”

तुबत नकड़-ी-सब-घी-कपड़ । गत्यादि गजाम तेन । तीनजूगा नदीक कडेबेमे जीतनक दाह-संस्कार कएन गेन । जेठका रैथी सुकन पिताक झूठेमे आगि देनकनि । जेठ भाए रिंकन भोज-भातक गजामे नगि गेन । सुकनी अगन सकुनसँ छुट्टी नइ किवियाएमाक सामग्रीक ओगिषाण कए नगनी । नह-केस दिन कठिगारीरना सरहक जेन सुकनी खीबक भोज केनक । शीह दिन पुवा डुजना गामक लोक सबकेँ बसगुला-नामोहनक भोज दि खाएन गेन ।

आग संगीण्डन अछि । प्रातः आठ बजेसँ राबह बजे धरि कबम तेन । तेकब राँद पाँटो ब्रौण्णक भोजन सेहो तेन । आग निर्मलीक मेठ-साहूकाब आ शिक्क, लता आ आला-आन प्रतिष्ठित रोकती सब आमंत्रित छथि । रैठि या जकाँ सब भोजन केननि आ दूनु भाँगकेँ जमे दग गेनथि ।

जखनि गोपानजी अगना सहयोगीक मंग भोजन कइ करीपव रैसना तखनि दूनु भाँग सुकन-रिंकन गोपानजीक पएव डुरी प्रणाम केनकनि । गोपानजी अनीबराद दैत कहनथि-
“भगराण अहाँ दूनु गोठे जकाँ रैथी सबकेँ देखू । जे मए-रापक किविया-कबम, भोज-भात, मेरा-ठहन अहिना कबतनि । अहाँ दूनु भाँग जीतन जीक अमन रैथी मारित भेलौ ।”

गोपान मासुठेव सहिरक ग गग सुनि सुकन राजन-

“ले गुरुदेव, हम दूनु भाँग राँरुजीक अमन रैथी ले छी । हम सब राँरुजीक मेरा-ठहन कहाँ केनियनि । हमरा सरहक हाथक एक गिनस पाणियो कहाँ भेठेननि राँरुजीकेँ । अमन रैथी तँ हमब रँहिन सुकनी आ रँहलाग शिकवजी छथिन । जे राँरुजीकेँ मेरा-सुत्रुसा केनथि ।”

बिच्छेमे रिंकन राजन-

“हँ सब, तेगो ठीके कह छथि... ।”

दूनु भाँगक आँधिसँ दहो-रँहो लाव जए नगन ।

f



ज्जाति

“हे भगवान जे हमर खेमावी चबेनक तेकर पुतक योगति देखरिहः ।”

अ कहि मैनामरानी रौम फाड़ा काषए नगनी । भोरे-भोव ओ कनरौ कबधि आ गरियेरौ कबधि ।

भोरे ज्जाति मैनामरानी जौव नः कः खेमावीमे जौठेजे खेत जेनी तँ सद्गुटा खेतक खेमावी चबन देखनी । देखिते नगा जेनी । खेतसँ कलैत आ गरियरैत गामपव एनी । गामोपव अणधुन खानी रौठे नगा-नगा गरियारै नगनी । मैनामरानीकेँ कलैत आ गरियरैत देखि सौंसे खतरैठेनीक ज्जाति सभ जमा भः जेन । ओगमे सँ गामरानी पुढनकनि-

“अ दाग, की भेननि जे एना रैताह भेन छधि ?”

मैनामरानी कलैत रैजनी-

“की कहरैह कनियाँ, पाँच कष्टाये खेमावी छेनए, फुन-रैतियामँ नदन बहए, भिसबरौमे ले ज्जाति केकर पुत मवन जे महिससँ सद्गुटा खेतक खेमावी चवा जेनक । ज्जाति भेवमे जौव जौठेजे जेनी तँ देखरौ ।”

गामरानी रौजनि-

“जुनि काषथु । भगवान ओही चबनाह खेतमे पुवा कः देतनि ।”

मैनामरानी रौजनी-

“हे कनियाँ, देखरैहक ले तँ देवजता ले बहतह । कष्टी-कष्टी कः सद्गुटा खेतक खेमावी चवा जेनक ।”

अ कहि मैनामरानी डाती पीठेत खेव गरियारै नगनी ।

“हे रैबहमारौरी, जौ खेमावी चबेनिहाबक पुत मवत तँ हम तोवा जोड़ । डागव तोन रैजा कः चढेरैह ।”

फुनचन बाँउतक पनी तिनारानीकेँ जौव पापेल कहए आएन छेनी । ओहो मैनामरानीकेँ ठेरियापव ज्जाति सभक तीड़ देखि मसनि कः नग जा सभ गप बुनननि । ओहो मैनामरानीकेँ ठाठस रैन्हित कहनकनि-

“आरै गरियेना आ कनवासँ कोष नाभ हेतनि । दिसबरौरीपव आशि कबथु । रएह सभै पुव कबधि ।”

फुनचन बाँउतकेँ गामक सभ जौठे खनीहा कहे छन्हि । हुनकव देहो खनीहा जकाँ नहो छन्हि । पहनमानीओ करै छधि । गामक अखवाहापव नरतुविया सभकेँ कष्टीओ सिखरै छधि । दूदा छधि रैड़ मोचण्ड । हुनकव उमेव नगवग तीस रैवख छएत । पाँच रीया खेत छन्हि । जोड़ । रैवद आ दूरी महिस पोसल छधि । महिस अणलसँ चबरै छधि । दूरौ-गावरौ अणल करै छधि । भोवमे महिस दुहि एक जोड़ी काँटे दुध नीत पीरै छधि । भिसबरौमे दूनु महिस खोजि पोसव चबरै छधि । केकरो मसुवी, केकरो खेमावी तँ केकरो गहु भिसबरौमे चवा अरै छधि । जौ कियो देखरौ करै छन्हि तँ की मजान जे हुनका उपवाग देखि । गामक जोक प्रायः हुनकासँ डरैत बहए । दूदा हुनकव पिताजी रैरौरी मडव रैड़ नीक जोक । गामक जोक हुनका मडव कहि आदर करै छन्हि । रैरौरी मडव अणल रैठक कबतुतसँ रैड़ दुधी बहै छधि । हरिदमा फुनचनकेँ समझरैत बहै छधि-

“रौआ, रैड़ मेहनतिसँ जोक खेती करैए । केकरो ज्जाति चबेरैहक तँ ओ जे कनपत तँ पड़तह ।

तँ केकरो ज्जाति ले चवारी । आ ले केकरो कोला अणवाध कबहक । गहुमक तुसी आ रौसक पत्राक कष्टी, रैवदकेँ खुआरैह । महिसकेँ तुसी आ खेमावीक दूरी दहक । अहीमे रैवकति हेतह ।”

दूदा फुनचन खनीहाकेँ पिताक रातक कोला अणव ले । आओ भिसबरौमे मैनामरानीक खेमावी चवा अणनक ।



मैनामरानीक घबरौना पट्टु दिन्नीमे लोकरी करैत । अगहन आ अखाव माममे गाममे बहि
थेती-राउ ी करैए आ आष माममे दिन्नीएमे काज करैए । किएक तँ पट्टुकेँ मात्र एक्क रीघा थेत आ
पाँट णोलक आश्रम । एक रीघा थेतसँ परिवार चरै मोसकिन तँ दिन्नीमे लोकरी सेहो करैत ।

फुनचन खनीफा जूथनि जनथे करैले अँगना एना तँ पनी-तिनाठरानी कहनकनि-
“हे सुले छै ? ”

फुनचन रँजना-

“की कह छै ? ”

“मैनामरानी रँड परिवारै छुनि । कह छेलै सभ्ठा थेसारी चवा जेनक ग२ । खानी रँठै नगा-नगा
परिवारै छुनि । अ ल तँ ओकव थेसारी तिसबरौमे चवा अणनक ग२ ? ”

“रँठै नगा-नगा परिवारैत छेलै ? ठीक छै । गारिसँ हमरा रँठैकेँ किछ ल रहत । गारि देल किछ
ल होग छै । लोक अँगना मसकेँ रूमरैए । ”

“हे, हमरा गागबिक रँड डब होगए । हम देखनिँ मैनामरानीकेँ छाती पीठैत आ कानि-कानि खुम
परिवारैत । से हमरा ले नीक नगन । भगराण णोनाक दम रँवथ पढाति एगो रँठै देननि । जौ
ओकवा किछ भ२ जाएत तँ एतेक धन कि रहत । एकवा रँव-रँव कह छिँ जे केकवा जजाति ले
चवारौ । ”

अ गग होगते छन तारैतमे फुनचन खनीफाक पिता-रँगरावी मडव जनथे करैले अँगना एना । सभ
रात बुनि रँजना-

“रौआ, रँहुनिया निके ल कह छह । हम तोवा रँव-रँव रूमरै छिँह । ह्रद तँ हमर गगक कोला
मानि ए ल दग छहक । ”

फुनचन रँजना-

“मैनामरानी रँड परिवारै छेलै तँ ओकव फन ओ अणल भोगि लेत । ओकवा हम हकणी लाव ले कणए
देनिँ तँ हमर नाम फुनचन ले कँटचन । अरौ सभ जूनि चिंता कक । हमरा रँठैकेँ कशप कसेप ले
नगते । ”

फुनचन खनीफा आ तिनारानीक द्वागमक दम रँथक पढाति एकठा रँठै भेन । जेकव उमेव
छह मास अछि । ए दम रँथक रीच दुनु पवानी कोण-कोण गहरव आ कोण-कोण डाकूठव नग ले
गेन । वातिमे फुनचन मैनामरानीक थेतसँ दु कष्टक मसुरी उखाडि अणनक आ वातिमे रँवद आ
महिसकेँ खुआ जेनक । जूथनि वातिमे मसुरी रौमे न२ क२ अएत तँ हकव रौरुजी जगजे बहथि ।
कहनथि-

“रौआ, एहेन काज किअए करै छह । अ नीक गग ले । ”

फुनचन रौगकेँ उँठैत रँजना-

“तौ चुप बह२ । मैनामरानीक थेतमे कोला जजाति ले बह देरै । ले देखनक जे भोरे-भोरे
रँठै नगा-नगा गरियोल बहए । ”

भोवमे मैनामरानी जूथनि दुनु कष्टक मसुरी उखावडन देखनक तँ ओ हकव गरियोलाग शुक
केनक । मसुरी उखवनिहावक रँठैकेँ सवापए नगन ।

रँगरावी मडव सोचनक जे आर कोला उपए कवक चली । ले तँ फुनचनमाक आदतिमे सुधाव
ले रहत ।

फुनचन खनीफा रँक पहव ताउ ी पीरैले नबहिया गेना तही रीच मडव तिनारानीसँ रिटाव
केनक ।

रँगरावी मडव तिनारानीकेँ कहनक-

“वातिमे, अणन कणचनमारौना थेतसँ एक रौम रँदम उखाडि आगरि आ रँवद-महिसकेँ खुआ देर ।



जखनि हुनचनमा भोवमे खेत देखत तखनि ओकवा जज्जातिक लोकमानक मवम रूमेते । कहरो ले मे मियास बखर । ”

तिनाठरानी कहनक-

“हमरुँ सौमखिन ओछागल पकडि लेरै । जखनि खनीफा ताडि पीरै कइ नबहिसासँ ओत तखनि रौंखाक लेबामक रैहना कवरै । कहरो जे रौंखा दुखित तइ गेन अछि । अही रैहनासँ खनीफाकेँ रूमाधरै । ”

मडव रैजना-

“ग्रीक रिटाव केनह लेन । ”

बातिमे जखनि हुनचन ताडि पीरै निसामे रूत तइ माँड लल अँगना आधन तँ तिनारानीकेँ हाक देनक । हुन तिनारानी घबसँ ले निकनन आ ले किछ रैजरो कएन । तीस-टासि हाक सुनना पछाति तिनारानी घबसँ रौंजनि-

“की कहे छै । रौंखाक रैड मल खवाग छै । मगव टिचिआग छेले । कखला हुँह साग्रुठे ले नग छै । टासि लेब उन्नीओ भेले गइ । दुधो ले धड छेले । केतेक गोसाँग-पीतवकेँ करुना केनिथं गइ तखनि जा कइ अखनि सुनत गइ । लोकक हँकान पडि बहन गइ । एकरा लेब-लेब कहे छिथं जे केकरो जज्जाति ले रिदत करौ, केकरो कोला अपवाध ले करौ हुन हमर के सुले छै । ”

पशोक रात सुनि हुनचनक निसाँ हाँठ गेन । माँडक मोवा ठँठमे ठँगि घब गेन आ रौंखाकेँ देखनक ।

तिनाठरानी हँव रौंजनि-

“रैडि कान तक कले छनए । अखल सुतन गइ ओ रौंख जड । रीष हाथ-पएव धोल रैछटा नग आरि गेले । ”

हुनचन रैजना-

“एक कियो ताकुव माँड अलल छी । माँडकेँ की कवरै । जौं बातिमे ले तवरै तँ मोहकि जएत । ”

तिनाठरानी रौंजनि-

“तारै ओ हाँसुन नइ कइ माँड रैलोत । रौंखा जखनि नीक जकाँति सुति बहत तखनि हम आरि कइ भासन कवरै । ”

हुनचन अपहसँ माँड रैनरै नगन । बातिमे खेलाओ अरैवसँ रैनन । खाति-पीरैत अपवतिया तइ गेन । आग हुनचन तिसबरारामे महिस पौसव चवरोले ले गेन । किएक तँ अरैव सुतल नील ले छँठनि ।

भोवमे जखनि ओ पौखरि दिस जागत बरुथि तँ अपना खेतमे नगधग दस धुव रैदाम उँखाडन देखनि । देखिते सौंमे देहमे जेला आगि लस देनकनि । रैताह भेन गामपव आरि अरुँ-सगुँ रैजए नगना-

“केकवा होसपीठन जागक मल भेलेए जे हमर रैदाम उँखाडि अलनक । जौं कनिको पता टगि जएत तँ ओकरा अपमोगति कइ होसपीठन पठा देरै । गाममे आरि केकरो रैदाम ले बहरै देरै । सरहक रैदाम उँखाडि -उँखाडि रैवद-महिसकेँ खुँआ देरै । ”

दनापव घबरनाकेँ रैताह भेन देखि तिनारानी अँगनासँ डेठि मापव आरि घबरनासँ पुछनक-

“मव, की भेले गइ जे एना रैताह भेन छै ? ”

हुनचन रैजना-

“अपना खेतसँ दु कपी रैदाम उँखाडि कियो नइ अलनक । हम आरि केकरो बरि-वाग ले बहए देरै । सतुँठा उँखाडि आगि मान-जानकेँ खुँआ देरै । ”

तिनाठरानी रौंजनि-

“एहेन काज हँव जूमि कवह । बातिमे केतेक देरता-पीतवकेँ करुना केरौ तरे जा कइ रौंखा नीक भेन । हम धवमाज रौराकेँ कहनिथं- जौं हमरा रौंखाक मल नीक तइ जएत तँ हँव खनीफा केकरो कोला अपवाध ले कवत । ”



रौंठी नामापर फुनचन किछु शोणत भेन । शोणत भेन देखि तिनारानी राजनि-

“रौंदाय उंखाडी जेनके तँ की हेते । तगराण हमवा ओहीमे पुवा कइ देखिष । अहाँ महिस दुख चाह रौंदा दग छी ।”

तारैतमे रौंदा रौंदावी मडव पहुँच गइलथि-

“रौंदा, किअए हनुवा करै जेनहक ? हम तोहव हनुवा सुनि ि रौंदा कर्वा केल पौथरिक घाँपव मँ दोगन एलौं हेल ।”

फुनचन रौंदा-

“रौंदा हौ, बातिमे कियो अणवा कँचमारौंदा खेतसँ दु कण्ठा रौंदाय उंखाडी जेनक । तँ जेव-जेवसँ हनुवा करै छेलिष ।”

“अछडा, पहिल महिस दुहइ अरौंव भइ गेल । चाहो पीअर ।”

सम्बरक गण सुनि तिनारानी रौंदाके रौंदा-

“रौंदा, यह एकवा सममारौंदा । लोकक हँकान पड छै । बातिमे रौंदाक मल खाप भइ गेल छेलै । केतेक कान देर-धरवाकेँ सुनलौं तँ रौंदा नीक भेल । गौंदाक दस रौंदाक पछाति धरवाजराँदा एकठाँ रौंदा देनथि । गामक लोक रौंदा-रौंदाक कहै छेलै । अरौं जे केकरो अ केकरो कोला अणवाध कवत तँ हम रौंदा नइ लेहवा छनि जाएँ । अणव रौंदा आ महिसकेँ अणव जज्जाति उंखाडी -उंखाडी खुआरौंवत बहत ।”

रौंदावी मडव फुनचनकेँ कहलथि-

“रौंदा, रौंदा नीके कहै छह । केकरो जज्जाति ले रिद्धत कवहक । जज्जाति नगरैमे रौंदा मेहनति नलौ छै । देखहक तँ तोहव रौंदाय उंखाडी जेल तोवा केहल समूछा देहमे आगि लमल छह । तहिना तँ आला गोठेकेँ होगत हएत ल । तौ केतेक गोठेकेँ खेमावी पौमव थोनि चवरे छह । केतेक गोठेकेँ मसुवी आ रौंदाय उंखाडी रौंदा-महिसकेँ खुआ दग छहक । जेहल अणव जज्जाति तेहल ल अणको । जहिना तोवा आग कठ होग छह तहिना ल आलाकेँ होगत हएत ।”

फुनचनक तक्रु खुजि गेल । पिताक पएव छुरी सगुत खेनक । जे आग दिसँ हम ल केकरो जज्जाति रिद्धत कवरौं आ ल कोला अणवाध ।

f



पौनिक

कमलक रैषीक रिखाह छन । नडकारनाक कहरी छेलै जे खेलागमे माँड-भात हेरौक चाली । हम सभ डनडारना पुवी आ मागवक दुबक रँगन मिठाग ले खाएँ । हमरो कमल रिखाहक काड देल छन तँए हमरुँ रँवियातीक सुरागत लेन पहुँचन छेलौं । राबह रँजे वाति रँवियाती आएन । राबहखणा रँवियाती निमाँमे रँत बहए । जुराण सरँहक गग कि कही जे रँडरौ सभ डीजेक धुषपव षटैत बहथि । हम कमलकेँ कहनिधँ-

“हौ कमल, राबहखणा रँवियाती पील छह तँए जन्दी-जन्दी रिधि-रँरहाव समावल चनह ।”

कमल कहनक-

“से तँ ठीके कह छिधँ ।”

हम कहननिधँ-

“सभ रँवियातीकेँ पँडानमे रँसारेह । आ चह-नासता कवारँह । तेकव पछाति रिधि-रँरहावक काज शुक्र कवरँह ।”

कमल अपन भातिज रँ रँसादकेँ रँजा कहनक-

“मैकसँ सभ रँवियातीकेँ पँडानमे रँसक आग्रह कवही ।”

मैकसँ कतेको रँव आग्रहक पछातिओ अदहा रँवियाती डीजेक धुषपव षटैत बहन । हवि क२ जे रँवियाती पँडानमे रँसन छन तिनका सभकेँ नामता देन गेन । दुनहक पिताजीकेँ कहन गेन जे वाति रँसी भ२ गेन अछि तँए डीजेकेँ रँग क२ चह-नासता करै जाड । तेकव पछाति रिधि-रँरहावक काज हएत । नडकारना केतेक निहोवा-रिणती केनक तथनि जा क२ डीजे रँग लेन आ रँवियाती सभ चह-नासता लेन पँडानमे रँसन । हरक सभकेँ आग्रह देन गेन जे चह-नासताक पछाति अहाँ सभ डीजे रँजाक आग्रह जेरँ । सए लेन । नरहरक रँवियाती सभ डीजे रँजा चानु कवा हएवो नाए नगन । घबरावी आ रँवियातीक रँड-रँडुआ रिधि-रँरहावक काजमे नगि गेन । मडरौ नग रँव-कनियाँक तिनक पछाति दुरँकत लेन । रँवकेँ रिखाह करैले छोडा रँवियाती सभ जुरासामे आएन । हम कमलकेँ रँजा कहनिधँ-

“जन्दी-जन्दी पँडानमे रँरँन सेठ क२ रँवियातीकेँ भोजन लेन रँसारेह ।”

सए लेन । पँडानमे रँवियाती सभ आरि रँसना । डीजे रँग लेन । रँवियाती सभ अपन-अपन ग्रुपमे रँसना । सरँहक आगु गलेठ आ गिनास देन गेन । माँड-भातक रँग सनादक सेहो रँरसथा छन । अथनि भोजन शुक्र लेन तँ कमल हमरोसँ भोजनक आग्रह केनक । हम कहनिधँ-

“रँवियातीक पछाति हम खेलाग खाएँ ।”

कमल हमरोसँ हएव आग्रह केननि-

“तथनि पँडानमे भोजनक रँरसथा देखियौ । कोला रँरँनपव कोला टिजक अतार ले हेरौक चाली ।” हम पँडानमे गेलौं तँ देखे छी जे नगधग अदहा रँवियाती पौनिकसँ दक गिनासमे न२ न२ पीरँ बहन छथि । किछ रँवियाती अथेजी दकक रँगत सेहो खोलल छथि । किछए रँवियाती छना जे खाली भोजनक क२ बहन छना । देखि क२ हम छगुतामे पडि गेलौं । पौनिकमे देशी दक बहए जेकव रँ हमरा रँवदास ले लेन । हम पँडानसँ रँहव भ२ गेलौं ।

रँवियातीक भोजन पछाति सव-रँधुम आ रँगोआ-घकआकेँ भोजनक लेन रँसोन गेन । ओहमे देखे छी जे अदहासँ रँसी लोक पौनिक आ अथेजी दक भोजनक रँग पीरँ बहन छथि । हम एकरँव हएव छगुतामे पडि गेलौं । कमलकेँ कहनिधँ-

“हौ कमल, रँसी लोक पीखाके भ२ गेन अछि ।”

ओ राजन-

“यौ नषद भागजी, पाणि उँघेरनासँ न२ क२ मडरौ सजुरँरना आ बसोआ सभकेँ रँनु घुसमे पौनिक



देरैए पड़न अछि । रिषा दाकक कोला काजे ले हएत । पिछना मान मैनामे एकठा भोज डन । हमर पितिया मनुव मरि गेल बहथि । ओहू भोजमे देखलिं जे पाणि उँघेरनासँ न२ क२ बसोअखा तकलेँ घबरावी पौलिथिण आनि-आनि दग ड्वेनथि । यो भाग, आरँ तँ रिष दाकक कोला काजे ले समरैए । ”

हम कहलिं-

“हम कपेखा द२ देरैँ दूदा पौलिथिण रा कोला दाकक रौतन ले देरैँ । छह हमर काज हूअ अथरौ ले हूअ । ”

कमान रौजन-

“जुथनि रैव पड़त तथनि बुँमरैँ । ”

कातिक मासक मग । सब गोठेँ अण-अण राड ी-माड ीमे तीमल-तबकारी रौपेमे रैमत् । हमरो कष्टा दुगएक तीठ खेत । ओग कोनामे सब मान अन्नु रोपे डी । एमाकीओ तीखनासँ हव मोन न२ खेत जोता तैयाव करेलौ । किएक तँ अणषा हव-रैवद ले । रैवद बथरौ कवरँ तँ जोतत के । अणषा हव जोतैक नुडा ले । दिनी-पंजराँ खूजरीक कावणे हवरीहा भेटैँरँ मोसकिन । तँए सब खेती-गिबहमतीक काज ठेकठलेसँ होगए । ठेकठवरँनाकेँ अणवरौले कपेखा द२ अरैँ डी आ ओ समेपव आरि खेत जोति दगए । दूदा अथनि खेत सभमे धाणक फर्मिन नगन अछि । तँए अथनि ठेकठलेसँ जएरँ मोसकिन । तही दुखारे तीखनासँ हव मोन न२ अन्नुक खेत तैयाव करेलौ । घोघवडीहा रँजारसँ मागकिनपव अन्नुक रीखा आ खादो कीनि अणरौ । आरँ समस्या अछि । जे रोपत के । रीखा आ खाद तँ अणषा गिवा जेरँ । दूदा कोदविंसँ दन के काठत ? अणषा जौँ काठरँ तथनि तँ पएले कष्ट जएत । पिछना मान मएह ले भेन बहए । जोशेमे आरि अणषा रिदा भेन बही दन कठेले आ पणैकेँ खाद आ रिखा गिबरेले न२ गेल बही । कोदविंसँ दू दन काठ क२ अन्नु तँ रोपलौ दूदा तेसव दममे तेहन ले पएव कष्टएन जे लोक सब षँणि क२ गामपव अणनक । दू मएसँ रैसी कपेखा दरौगमे नगन आ एक पणवहिया चन-हिनन ले भेन ।

वातिमे खागतकान पणै रँजनी-

“अन्नु पचता भ२ बहन अछि । पचता अन्नुमे मून्सा पकड़त । नती गनि जएत आ अन्नु किड ले हएत । केकरो पकड़ि अन्नु रोपा निअ । ”

हम कहलिं-

“से तँ ठीके कह छिं । ”

भोले हम तीखना नग गेलौ आ कहलिं-

“आग हमर अन्नु रोपा दए । ”

तीखना रौजन-

“हमवा एका पनक डुष्टी ले अछि । हमवा तँ हरे जोतैसँ डुष्टी ले बहए । दू मए षँकामे हव रैँटे डी । अथले तँ मग अछि जे किड कमा जेरँ । जुथनि धाण कष्ट जएत आ खेत खानी भ२ जएत तरँ सब गोठेँ ठेकठलेसँ हव जोताएत । अथनि तँ ठेकठव जागक रौठे ले छे । तँए लोक राड ी-माड ी करैले हव मोन नगए । ”

तीखनाक गप सुनि ओतएसँ हम रितरौ नग गेलौ ओकरो अन्नु रोपेक आग्रह केलिं । रितरौ कहनक-

“हम अणषा हिनसाण डी । मगनी मए लेहव छनि गेल । ओकरो माएकेँ नकरौ मरि देनके । हमवा मान-जान सबकेँ देखए पड़ए आ भासमो अणषा कवए पड़ए । किएक तँ रैँठी जे मगनी अछि ओ पठेले गसकुन छनि जागए । बुँमु अथनि सब काज अणषा कवए पड़ए । ”

हम कहलिं-

“ले, आरँ अन्नु पचता भ२ बहन अछि । अणषासँ दन काठले ले हएत । ”



तरै रितरौ कहनक-

“सो गिवहत, भिनरौ नग छल जाड । ओकरा रौनले देखे छिई । टाकिस दिन पांटासँ एरें कएन अछि । ”

भिनरौ नग गेलौ । ओ मोरौगनमे गीत सुले छन । हमरा देखते छैकनक-

“गिवहत गोब नली छी । ”

हम कहनिई-

“नीकके बहः । कहिया गाम एनहक ? ”

भिनरौ रौजन-

“टाकिस दिन एलौहें । केम्हब-केम्हब आएन छेलिई गिवहत ? ”

हम कहनिई-

“लौ, हमरा अननु बोपेरौक अछि । तँए ताले नग एलिअहें । कनी आग हमर रोगवता सम्हारि दैह । ”

तखनि भिनरौ कहनक-

“हमर तरियत गीक ले अछि । हमरा सक ले हएत । ”

हम कहनिई-

“लौ भिनाग तौवा नग रँड आसिसँ आएन छेलौ । आगएठा हमर काज सम्हारि दैह । ”

तारैतमे भिनरौक माए अंगणसँ निकसन । ओ भिनरौसँ कहनक-

“जो गिवहतकेँ अननु बोपि दली गः । गिवहतक हमरागब रँड उगकाव छै । रौमाथमे अण रँकवी नानरौरुकेँ खेवली छवि लेल बहे तँ ओ रँकवी रौगलि लेल बहए । हमरा पता नगन तँ नानरौरु नग गेन बली दूदा ओ रँकवी ले देनक । कहनक, रँकवी सबगट ओगठाम दः अरें छी ओतेसँ नः जाएर । गहए गिवहत नानरौरुकेँ रूमा अण रँकवी दियोनक । जाली हिकब काज कः दली गः । ”

भिनरौ रौजन-

“गिवहत, अहाँक अननु बोपि देरें । दूदा रौगणक उंगवसँ किछ आलो खटा कबए पडत । ”

हम प्रछनिई-

“की खट जेरँहक ? टाह-पाण नः किछ अनगसँ दः देरँह । ”

भिनरौ रौजन-

“से ले हएत । रौगणक अनारें एकठा पौनिथिन देरँए पडत । ”

हमरा कमनक गग मग पडि गेन । दूदा की कवरें । अननु पचता भः बहन छन । हम मोचमे पडि गेलौ जौ एकवा पौनिथिन गछि नग छी तँ अण सिछान्तक रिपवीत काज हएत ।

रिच्छेमे भिनरौ छैकनक-

“गिवहत, रीस ठाका तँ अनगसँ खट कबए पडत दूदा अननु तँ बोपा जाएत । ”

हम कहनिई-

“लौ रौड, रौत रीस ठाकाक ले छै । हम दाक पीणागकेँ नीक ले रूमे छी । हम तौवा मिठाग थागए पछिस ठाका दः देरँह दूदा पौनिथिन ले देरँह । ”

भिनरौक माए सब गग सुलेत, ओ रँजनी-

“जो, गिवहतक अननु बोपि दलि गः रौगणक अनारें किछ ले मागली । गीके कहे छथूण ज सब ले पी । ”

भिनरौ हमरा संगे रिदा भः गेन ।

f



निराम प्रमाण

बौद्ध विकास विभागमे किवाणी आ चपवामी लेन विज्ञापन निकसन छन । आरेदन पत्रक मंग शीकरीक योग्यता प्रमाण पत्रक अतिप्रमाणीत जायाप्रति आ निराम प्रमाण पत्रक अतिप्रमाणीत जायाप्रति देनाग अतिरार्य छन । आरम्भक नात लेन जाति प्रमाण पत्र देनाग सेहो अतिरार्य छन । ले तँ आरेदल बढ ।

हमरा निराम प्रमाण पत्र ले छन । प्रखण्ड कार्यालय गेलौ । ओत पता चनन जे कोना प्रमाण पत्र लेन आँनागण आरेदन कएन जाग छै । एकठा कठवावामे जा हठाँ मठेँ करैरनासँ निराम प्रमाण पत्रक फार्म कनिगौ । खानी स्वाणक पुति क२ नागणमे नगि गेलौ । पता चनन तीण रँजे धरि आरेदन लेन जेते । दु रँजेत बहए । हमरा आगुमे नगधग टागिस गेठेँ नागणमे छन । हमरा पावी अरेसँ पहिल तीण रँजि गेन । किवाणी, जे आरेदन नग छना, कहनि-
“ठैम ओतब, ठैम ओतब । अहाँ मत्त काहि आँ ।”

किवाणीक रौत सुनि मागकिन नग जा ताना थोनि रिदा भेलौ । बसतामे सोटेत बही जे काहि दसे रँजे आँ नागणमे नगि जाएँ ।

दोसब दिन नख रँजे घबसँ रिदा भेलौ जे घँषा भरि नगत पहुँट जाएँ । नबहिया रँजावामे मागकिनमे हरा दिया रिदा भेलौ । लेखिथ मसक मग बहए । मागकिनक पढिना ठाँव कमजोब छन । हुनपवामसँ आगु रँदरौ आकि धवामक खराज लेन । देखरौ तँ मागकिनक पढिना टाका ठाँव-धुरँ हठाँ गेन छन । स्थिति से छन जे रँदरनल गनजागि ले । जेरौमे मात्र पटामी ठाँका बहए । जखनि कि तीण मएक जकबति छन । मागकिन खबकोले रँनना-रँखना टोक तक एलौ । एकठा टिन्हाब मिस्त्री नग गेलौ आ कहनिगि अपन दुखा । दूदा हुनका नग ठाँव-धुरँ ले बहनि । तँ कहनिगि-

“हम काहि ठाँव-धुरँ न२ क२ आएँ । तारँ मागकिन बाखु ।”

मिस्त्री रँजना-

“ठीक छै । काहि दसे रँजे तक आँ जाएँ । ले तँ मागकिनक जरारदेही हमरा डुगव ले । किएक तँ तीड रँदरन तनदेही घँषा जाग छै ।”

हम रँनना-रँखना टोकसँ पएले घोघवडीहा दिस रिदा भेलौ । एगावह रँजे प्रखण्ड कार्यालय पहुँट नागिमे नगि गेलौ । हमरसँ आगु कवीर पनवह गेठेँ छन । बूनाएन डेठ रँजेसँ पहिल कागत जमा भ२ जाएत । आँ हमरसँ आगु मात्र दु गेठेँ छन । मन तनफणागत बहए जे आँ कागत मागत तरँ कागत मागत । अगिना रँकती रँजले-

“ले रँलेया, जेनवेठेले खवाप भ२ गेलै । कखनि ठीक हएत कखनि ले ।”

“यो भाग, की भ२ गेलै ? ” हम पुछनि ।

ओ रँजना-

“देखे ले छिँ जेनवेठेले रँन भ२ गेलै । रिना रिजनीक कम्प्युटर केशा चनत । रिनु कम्प्युटर चनल आँनागण केशा होएत ।”

दु-तीण गेठेँ हमरसँ पाडु टाट छन । ओ मत्त जेनवेठेले नग गेन । आँवेठेले सहिरँ मशीन थोनि बहन छना । दस घिण्ट पढाति एक गेठेँ आँ रिजना-

“आँवेठेलेक कहँ छै, रिना मिस्त्रीसँ ठीक ले होगरना छै । आग आरेदन जमा देनाग अमतर ।”

हमसँ जेनवेठेले नग पहुँट आँवेठेलेसँ पुछनिगि-

“की यो रौरु सहिरँ, कखनि तक मशीन ठीक हेरौक मतरना अछि ? ”



रँजना-

“आग तँ कोला अमे ल कक । मिस्री जखनि अरैए दूदा सँम तक मशीन ठीक हएत कोलका आशी कक ।”

हम ओतएँ द्रैण पकडले स्रैशेण दिन चमलौ । स्रैशेणपव एलौ तँ पता चनन जे पाँट रँजे तक द्रैण आएत । समय कबीर तीण रँजेत बहए । अखनि दु घँटा गाडी अरैमे देवी अछि । मोचलौ किएक ल ठैमपु पकडि हुनपवास चलि जाग आ ओतएँ दोसव ठैमपु पकडि बबहिया चलि जाएर । बबहियामँ पएले गाम जागमे अदहा घँटा नलै छै । ताड । जोडलौ तँ पटिस ठीकाक खटि छन । पटिस ठीका खटि केना रौदो अदहा घँटा पएले चलैगए पडत । ओना द्रैणमँ गेल पवमा लँनछै उतबरँ । छँकछँक कोला दबकाले लै । पवमामँ सरौ घँटा गाम जागमे नगत । नजबिपव आएन पौतानीस चिनछै रँनी चनए पडत दूदा पटिस ठीकाक रँचत हएत । दस कपेआक चाहे-पाण था जेरँ तैयो पनबहक बहया । सएह केलौ । चाह-पाण था दूमाहिव थाणाक रिबिचपव आरि रँस गेलौ । एकठा दूमाहिव लिन्दुमताण पेपव पठि छन । हम हुनकेसँ पेपव मणि पढ्य नगलौ । बहि-बहि कइ मोरौगनमे समय देखी । जखनि साठे टारि रँजन तरँ स्रैशेण मस्रैबमँ गाडीक सुब-पता पडलौ । कहननि-

“दु घँटा जेठ अछि । सात रँजेमँ पहिल अरैक कोला चाम लै ।”

सुनिते ममा गेलौ । समता मरुग पडि बहन छन । साठे सात रँजे पवमा लँनछँपव उतबरलौ । द्रैणमँ उतरि गंधी टोक रँसुखावी एलौ तँ आगुमे पाँतव छेलै तँ कोला रंगी मिति जाएत तँ ठीक बहते । ताक्य नगलौ । एक गोठे चिनना । हुनको जेरौक बहनि आगु । दू गोठे चाह पीर रंगे-रंग रिदा भेलौ । भगष्टियाही दुर्गा मथान तक ओ रंग बहना । दुर्गा मथानमे भोजन-कीर्तन होगत बहै ओ ओहीगाम ककि गेना । हम मोरौगनक बोशियामे आगु रँठेत गेलौ । नख रँजे वातिमे घब पडलौ । घबपव पनौ आ रिदा-पुता चिनित बहनि । पनौकेँ पुवा दिनक घँटना सुना देलियनि ।

दोसव दिन भोले पनौसँ तीण सए कपेआ केकबोसँ पौट मणि कइ नारै कहलियनि जे मागकिनक ठाएव-धुरँ रँदनए पडत । अदहा घँटा पड्याति पनौ आरि कहनी-

“कियो कपेआ लै देनक ।”

“आरँ केना हएत । मागकिन रँनहा टोकपव पडन अछि ।”

दुप देखि पनौ रँजनी-

“तीण सए ठीकाक गहुमे दोकानमे रँटि लिख आ चलि जाड ।”

पुडलियनि-

“कि दब चलै छै ।”

“खुदवा नख साबहे नख कपेए नग छै ।”

“रँ बबानी-घोघवडीहामे तँ एगारह छँके नग छै ?”

पनौकेँ हमव रात जेना काण धरि लै गेलनि । किड ल रँजनी । हमरँ मोचए नगलौ, मागकिनो खवापे अछि । ओकले मरनाति खातिर तँ कपेआक रँगवता अछि । तखनि राहव केना आ कथीपव ताडी नइ जाएरँ... । तरु खुजन ।

हम तीस किलो गहुम नइ दोकान गेलौ । दस छँके रँटि तीण सए ठीका नइ घब एलौ । पनौ थिचडी आ अमनुक ममा रँलल छेली । जन्देए खेलाग आ द्रैण पकडले पवमा लँनछै रिदा भेलौ । द्रैण पकडि घोघवडीहा एलौ । मागकिनक ठाएव-धुरँ कीनि रँनहा-रँथनाहा टोक दिन रिदा भेलौ । नगपग एक रँजे टोकपव पडलौ । मिस्रीकेँ दोकानपव लै देखल पता केलौ । पाणरना कहनक-

“मागकिनमँ भोजन कव रँथनाहा गेल अछि ।”



मिस्रिके धव रंखणहे छै सेहो रूमजिध । दु रजे मिस्रिकी एना । हमवा देखिते पुढनमि-
“कहाँ अछि ठाँव-धूर । नाँउ पहिले अहीक काज कइ दग छी ।”

पणवह मिस्रिके ओ मागकिन ठीक कइ दइ देनक । दस ठका मिस्रिके दइ हम मागकिन नइ रिदा
भेलौ । तबि बसता एतरे सौटे बही जे हमर निराम प्रमाण पत्र लेना रंखत । अथमि धवि आरेदला
जमा ले भेल अछि । सौटेलौ काहि भेले जनथे कइ आँठे रजे रेलोक दिन रिदा भइ जाएँ ।
भिसमव भल टाबिठा सौहारी आ अलनुक भुज्जिआ नइ रिदा भइ जाएँ । सएह लेलौ । दोसव दिन हम
नख रजे रेलोक पहुँचेलौ । रेलोक तारै रंख छन । सौटेलौ जे आँग सभसँ आँगाँ बहर । सभसँ
पहिले हमरे कागत जमा हएत । खेलाँग खंगरेव गामेमे बहर । जनथे तँ सँगमे अगडे । नखसँ-
साँझ-दस रंजन । दूदा आँहिसक छेँक ताना ले खुगल । हम सौटए नगेलौ एते सभ्य भइ गेलौ
दूदा अथमि धवि किनको देखे कहँ छी । आँहिस किअए ले खुले छै । अरेदला कवेरना दोसव
कियो रेंकती ले आँव । कही आँग छुँडी तँ ले छै । रोडक रंखणमे टाह-पाणक दोकाष अछि । ओही
दोकाषव जा पुढेलौ-

“आँग आँहिस रंख छै की ?”

दोकाषदाव कहनक-

“अहाँकेँ ले रूमन अछि । पुरी दूखमिनी काहिहे मवि गेलौ ।”

हएव हम पुढजिध-

“काहि खुले की ले ?”

ओ हँसत कहनक-

“अहाँकेँ ले रूमन अछि, काहि बरि छि ।”

हमवा अणल-आणव गमनि हुअ नगन । दोकाषदाव पुढनक-

“कोष काज अछि से । किअए एते मिस्रिके छी ?”

हम ज्वारि देखिध-

“सौ भाव, हमवा निराम प्रमाण पत्र रंखरौक अछि । टाबि दिनसँ आँरि बहन छी । दूदा कागत जमे ले
भइ बहन अछि ।”

“अहाँ रूँडा छी ।” दोकाषदाव छँ दइ कहि देनक ।

हम पुढजिध-

“से किअए कह छी ?”

रंजन-

“टाबि दिनसँ घुँमे छी आ कागत जमा ले भेल । टाबि दिनमे कमतीमे टाबिस-पाँस ठाँका खँट कइ
लल हएँ । घबक काज हवजा भेल से कात । रंजावमे शिर्मा जिक गण्ठव लष्ट मेरापव टाबि
जगतौ दस ठाँका देखिध आ अहाँक आरेदल आँगनाँग जमा भइ जागत कथिने नाँगमे टाँट बहए
पड़त ।”

अथागामे हमवा दूहसँ निकलि गेल-

“सौ भाव, आँ गण तँ हमवा रूमने ले छन ।”

दोकाषदाव हएव छँकनक-

“कतए घब अछि ?”

“सखुआ भगँटिगाली ।”

“अर्द्धक नवहिया रंजावमे गँठवलेँ मेरा हएत । ले तँ शिर्मनीमे तँ हेरौ कवत आ फुनपवामे सेहो
अछि ।”

हम पुढजिध-

“सौ भाव आँग आँगनाँग हएत ?”



“ले आग ले हएत आग रँग हएत । छुट्टी दिन सब रँग बहे छै ।”

“सोमदिन फुनगवाम छनि जखरँ । काज भ२ जाएत ।”

हम पाणरौनाकेँ रौनराद दैत गाम दिन रिदा भ२ गेलौं ।

सोम दिन जवथे था एगावह रँजे फुनगवाम गेलौं । उगठाम एकठा दोकषणव जा भाँज
नगेलौं आ जगहणव जा कागत आणनागण कवरैलौं । आ पुढुलिधं-

“प्रमाण पत्र कहिया भेटैत ?”

दोकषणदाव कहलक-

“एकैस-राँगस दिन पढाति रँलोकमे भेटै जाएत ।”

हम पुढुलिधं-

“तगसँ पहिल ले हेते की । हमरा तँ जकरी अछि । आरेदन कवरौक अछि ?”

उ कहलक-

“हएत तँ दूदा किवाणी राँरुकेँ किछु देरैए पडत ।”

“केते देरैए पडते ?”

“एकठा प्रमाण पत्रक पचास ठाँकसँ रैसी ले जेरौक चली ।”

“दु-तीस दिन पढाति रँलोक छनि जखरँ आ पता कवरँ । ले हएत तँ कोला दवानकेँ पकड
जेरँ ।”

पुढुलिधं-

“के दवान छी से केना रूमरै ?”

“यो भाग, राड सदससँ न२ क२ दूथिया-सगिति सब दवालिधं करै छै । से ले रूमै छी । एकवा
सरँहक अनारै किछु आरो दवान अछि जे भवि दिन रँलोक-अन्याडन-जिना आ थानामे घुसैत बहे
छै ।”

हम रिटावेलौं जे राड सदससँ तँ हमरे ठैलक छी । जाग छी वातिअमे रात क२ जेरँ । वातिमे
पहुँचेलौं राड सदससँ नग । पता चनन अथनि तक रँलोकसँ ले आएन । हुनक पुत्र कहलनि जे पापा
नेठसँ अरै छथिन से ले तँ तिसमरे आँ ।

तोले राड सदससँ भेटै क२ अणन समस्या सुललिधं । कहलनि-

“अहाँ दोसव जगहसँ कागत आणनागण केल छी । तँए काज होगमे कठनाग अछि । जौ रँलोकमे
आणनागण करेल बहितिधं । तँ सए-दु-सए ठाँकामे काज कवा दगतौं । ओना हम जाग छी किवाणी
राँरुसँ रात कवरँ । काहि भेटै कर ।”

अणना एलौं तँ पनीकेँ सब रात कहलियनि । उ कहलनि-

“यो, दूथियाज्जी तँ अणन जातिक छथिन । भेटैक समेमे कहल बहनि । हमरा जीता दग जाँ ।
जौ कोला काज हएत तँ रँग पागएक कवा देरँ आ क२ देरँ ।”

हम कहलियनि-

“से तँ ठीके कहल बहनि ।”

पनी कहली-

“एकरैव भेटै करियनि ल । थानियो तँ जेरँ । सेव ल भेटैक समए उत ।”

हम दूथियाज्जी सँ भेटै क२ सब गण कहलियनि । कहलनि-

“अथनि हम रँड रैसत छी । मनेगा तहत पचायतक खानी जमीन सबगव गाड-रिबिड रोपराँक अछि ।
अथनि एका पनक छुट्टी ले अछि । हम आग काहि रँलोक ले जाग छी । हनौकी अहाँक काजो उँकडू
अछि । एना कक, अहाँ प्रदूथ सहिरँसँ भेटै करियनि । उ भवि दिन रँलोकमे बहे छथिन ।”

हम कहलियनि-

“प्रदूथ सहिरँक गति रिपीनज्जी हमर सँगथ छथि । रिपीन जिकेँ सब प्रदूथ सहिरँ कहे छथि । हुनक



पत्नी प्रदूषण सहित तै रैसके-रैसक घोषवडील जाग छथि। रिणीलजी सभ काज करै छथि। अहाँ हुनकसँ छैठै कर कज भऽ जाएत। सकुनक संगीओ छथि।”

“से तै छीहै।” रैजि ओतएसँ हम रिदा भेलौ।

अगिला दिन पत्नी जा रिणीलजी ओतए गेलौ, दररैज्जेपव बहथि। देखिते रैजना-

“आरैह भाग, आरैह।”

एकठै फवसी देखरैत रैसक ओशवा केनथि। हम फवसीपव रैस गेलौ। एकठै नडका दररैज्जापव पढैत बहथि। ओकवा दु कप चाह आलैले रिणीलजी कहथि। कर्ण कान पढाति ओ नडका दु कप चाह लल एनथि। रिणीलजी खुडनथि-

“भाग, जलो पीरैहक ?”

हम कहथि-

“ले जन ले पीअरै।”

रिणीलजी हमरा तबह चाहक एकठै कप रैठौनथि आ अगल एकठै कप लेनथि। दू लोठै चाह पीरैह नगलौ। रिणीलजी खुडनथि-

“केमहव-केमहव आगमल भेलह हेल ?”

“तोलैसँ किछ काज छन तैए एलौ हेल।”

“हमारसँ काण काज कहऽ, हमारसँ जे हएत से कवरैह। तू सकुनक संगी छह।”

हम हुनका सभ गण कहथिथि। रैजना-

“तौवा काजमे रैड खुसाद कव पडत। काजो हएत कि ले सेहो ठीक ले। तछमे कह छहक अगलागमे तीनि दिन रौकी अछि। आगलाग केना अकस-रौगस दिनपव प्रमाण पत्र भेटै छै। तौवा तै से चरिदि दिन भेलह हेल। जौ किवाणीसँ कहरै, रैड जकवी अछि तै ओ पाँट सए-छह सए मागत। रैसो अँठी-मोटाव कवत। की कहरैह। कहैत नाज होए। दूदा तू संगी छह तैए तौवा कह छीअ। रिना कपेआक कोला काज ले हेतह। हमरो रात कव-किवाणी ले मालैए। एना कवह एकलैव तू अगलसँ पविसाम कवहक। जौ काज भऽ जेतह तै रैड नीक ले तै हम तै छीहै। जे कपेआ खट हएत हएत। काज तै कवक अछि।”

हम मोटाछौ किहक ले किवाणीसँ छैठै कऽ अगलसँ कोशि कवी। सएह केलौ। कलि पहुँचलौ। पता नगरैत किवाणीसँ छैठै कऽ सभ रात कहथिथि। तै किवाणी दूवाबीजी रैजना-

“अथनि तै मोनह दिन रौकी अछि।”

हम हाथ जोडैत हुनकासँ आग्रह केथिथि-

“जौ अगलक प्रणा हएत तै आगओ हमर काज भऽ सकैए। रैड उँपकाव मागरै। अगल जे कहरै, हम तैयार छी।”

दूवाबीजी रैजना-

“दू सए ठीका जमा कव। तीण रैजे पढाति अहाँक निराम प्रमाण पत्र निश्चित कऽ देरै।”

हम आगलागलरना वसीद आ एकठै नमरी हुनका हाथमे दैत कहथिथि-

“आरै माफ कएन जाड।”

ओ कहए नगना-

“ले हएत, कमतीमे पाचामो ठीका ओव दियो।”

हम एकठै पचमठकही ओरो देथिथि।

दूडी डोनरैत कहथिथि-

“अथनि जाड, तीण रैजे छैठै कवरै।”

तीण रैजे हुनकासँ छैठै केथिथि। ओ हमरा निराम प्रमाण पत्र देथिथि। हम हुनका वैषराद दैत रिदा भेलौ। f



निपुतबाब

“बोले-बोब निपुतबाबक दर्शन भऽ गेल । आंग अलजला हएत कि ले से ले जालि ।”

अ कहि ओबहारानी झूह रिजकारै नगनी । बीता रँजनी-

“गग माए, तौ की रँजे छै । अ सभ मात्र कहरी छिअ । ओहो तँ मसुथे छुथि । भगवान रँथी ले देनथि तँ ओ निपुतब भऽ गेल । कोला रँम तँ ले छुथि । दुष्टी रँथी छुथिहै । एकठी री.ए. फागलनमे पठ’ छुथि आ दोसब गँठबक पवीष्काक फार्म भवले छुथि । अगला री.ए.सी. पास केल छुथि । बाजनीति सेहो करै छुथि । हुनकव भाषण रँड जेवगव होग छुथि । सुले डी ओ महित्यकारो छुथि । एहेन लोकक दर्शनकेँ अथना रँने छिनी ?”

ओबहारानी कहनथि-

“गग तँ की रँमरिली । निपुतब मसुथक दर्शन रँड अथना । पढिना सान हम उजाना ट्रेनिंगमे शामिल होगले घोघवडीहा जागत बनी, ओग निपुतबाबक दर्शन भऽ गेल । पाँचे मिश्र जेन ट्रेन छुष्ट गेल । सभ दिन तँ ट्रेन जेठे बहे छन झुदा ओग दिन ग्रीक साठे दस रँजे खुगि गेल । हमरा ट्रेनिंगमे जेनाग जकबी छन पढाति तेलव पापा मोठेव सागकिनसँ घोघवडीहा पहुँचोननि, जगसँ हुनका अगला सकुन पहुँचैमे देवी भऽ गेलनि । ओही दिन डी.ओ. सहिरँ एगावह रँजे रँगगामा हाग सकुनगव आएन बहथि । तेलव पापा साठे एगावह रँजे सकुन पहुँचन छेलथु । अथना घँठी समथ हुनका देवी भऽ गेल बहथि । डी.ओ. सहिरँ हुनकासँ स्पष्टीकवा मगनकनि । ओही दिनसँ हम निपुतबाबक दर्शनकेँ खराप रँने छी ।”

बीता रँजनी-

“अ सभ संजोगक रीत छी । तँ तँ मासुथी करै छिनी । पठन-लिखन छै । तखला ए कठिरीदीकेँ माली छिनी ? कह तँ जेँ अ रीत रिमानकाकाकेँ पता चनतनि तँ हुनका केतेक दुख हेतनि ? हमरा रिखाहमे ओ केते खँन बहथि । सभ रँवियातीकेँ भोजन कवा सरँहक पात रिमानकाका खँकल बहथि ।”

“से तँ तँ ग्रीके कह छै । तेलव रिखाहमे ओ रँड खँन बहथि । झुदा जहिया हमर ट्रेन छुष्ट गेल आ तेलव पापाकेँ डी.ओ. सहिरँ समयनामे दऽ देनथि तहिसासँ ओकव दर्शनकेँ हम रँड अथना रँने छिअ ।”

अ सभठी रीत ओबहारानी आ हुनकव रँथी बीताक रीच छले छन जखनि रिमानजी निर्मली जागत बहथि आ हुनके देख कऽ ओबहारानी झूह रिजकरैत रँजए नगन बहथि । ओबहारानीक मकान सडकक कातेमे अछि । मकानमे सडको दिससँ ओसावा छै । तही ओसावापव दू मागधी रँसन छेली ।

रिमानजी री.ए.सी. पास छथि । हुनकव उमेव नगधग चाकि रँथि छुथि । कखला कान मैथिलीमे कथा-कविता-हेकु-ठेनका-राका सेहो निथे छथि । पाँच रँथि तक एकठी संसृत उँट रिमाननमे रित्राण रिषयक पदगव शिक्षक काज सेहो केना । सकुन मजुब ले तेल रँबोजगले बहि गेल । सामाजिक काजमे कटि सेहो छुथि । लिका दुष्टी रँथी छुथि । रँडकी रँथी रीणा री.ए. कऽ बहन छुथि आ छेठकी गँठव ।

ओबहारानीक पति दिलेशजी रँगगामा उँट रिमाननक प्रधापाध्यापक छुथि । ओबहारानी गामेक प्राथमिक सकुनमे शिक्षिका छुथि । दुष्टी रँथी आ एकठी रँथी छुथि । जेठकी रँथी रीणा सासुरवास छुथि । छेठकी रँथी बीताक रिखाह कनीय अतिर्यतसँ भेल अछि । गँजिनियव सहिरँ नावखुँडमे लाकबी करै छुथि । नर-नर लाकबी छुथि । तँ बीता अथनि लेहलेमे अछि । सभसँ छेठ संतान संदीप छुथि ।

बीता मोचए नगनी, माएक रिटाव केतेक संकटित अछि । रिमानकाका समाजक सरँहक दुख-सुखमे हाथ रँथे छुथि । केकरो रँथीक रिखाहमे रिष रँजेल जे अगला सकुन भवि मदति करै



हुषि। हवर पापा ठँ हिस सुदि लेल लेकरो पाँटो कपेखा ले दग हुषि। रँडकी रँहिस बीणा कहियामँ एकठाँ ठैनीरिजण लेन किलोन करैए ह्नुदा ओ पाग बहिलो साधारण मँगक पुति ले क२ पलै हुषि। जखेकि एक मासक दवमाहा छिा क२ अस्मी हज्जामँ हुँगले होग हुषि। ठैपवमँ कमतीमे रीम हज्जाम कपेखा महिला सुदि-रिआजमँ आमादनी अलग हुषि। ह्नुदा हवर माए-रौरू एक नमावक मथीदुस। रिमनकाका हवरा पागामँ नीक लोक हुषि। एहेन नीक लोकक प्रति माएक अ मोट हुषि।

दिलेशेजी रँठैी सदीप भोगाममे गज्जीमियवक पठ ग क२ बहन अछि। डोलेशेणव नामाकिन भेन छै। तीण रँव कम्पीठीशेणमे रँसना पछाति सफल ले भ२ सकलै तखनि जा क२ डोलेशेण द२ पिता बाँठ निखोनकनि। आग-काहि सदीप गामे अछि। माए-रौपक दुनकखा रँठैी।

रिमन जीक मागकँ नकराँ मारि देनकनि। हूकका गनाज लेन आव.री.मेमोरियन, महेरियामवायमे भती करौन गेन। रिमनजी सेहो मंगे बहषि। एक सपताहक गनाजक पछाति सराम्थमे स्वभाव हूअ नगननि। रिमनजी चाह पीरैले आव.री.मेमोरियवक रौरव एना ठँ हूकक नज्जवि दिलेशेजीपव गेननि। दिलेशेजी एकठाँ रौरवो गाड़ मँ उतले हुना। रिमनजी गाड़ मँ नग पहुँचना ठँ गाड़ मँ सदीपकँ रँहोमि देखनषि। ओवहोरानी गाड़ मँमे छेनी। रिमनजी पुहुनषि-

“की भेलैए सदीपकँ ? एकवा माथमे पछी किअ रौरवहन छै ?”

ओवहारानीक आँथिमँ दहो-रँहो लाव ज्जव नगननि। दिलेशेजी कहनषि-

“पहिले सदीपकँ उतवि भितव न२ चनु। भती कवा गनाज चनु कवाँ। हानति रँड खवाप छै।”

मोठव सागकिन दूर्युषणामे सदीपकँ माथा फाँट गेलै। रँड नद्व रँहलै हेल। खुन सेहो चट्टरै पडते। हूकपवाम लेखवन अम्पतानमे पछी रौरवि डी.एम.सी.एच. लेखव क२ देनकै। पहिले ठँ डी.एम.सी.एच. अम्पतान न२ गेन हवषि दिलेशेजी ह्नुदा ओगठाम डाकूठव सरहक हड़तानमँ रँह बहन गाड़ मँ घुसा आव.री.मेमोरियन निजी अम्पतान आनन गेन।

रिमनजी आ दिलेशेजी दुनु गोले सदीपकँ उठाँ अम्पतानक भितव न२ गेनषि। गमवजेसी राडिमे भती करौन गेन। डाकूठव सहिरँ कहनषि-

“रोगीकँ रँड खुनक कमी भ२ गेन अछि। जन्दी पहिले खुनक रँरमथा करै जाँ।”

सदीपक खुनक जाँट भेन। जग जूपक खुन सदीपक शरीरमे हुन ओग जूपक खुन अम्पतानमे उगनरँह ले छेलै। दिलेशेजी आ ओवहारानी सेहो दुनु गोठैक खुनक जाँट भेन। दिलेशेजी खुनक जूप सदीपक खुनक जूपमँ गिनन। एक रौरतन खुन निकारि तकोन सदीपक गनाज शुक भेन। डाकूठव कहनषि-

“एक रौरतन आरौ चाली।”

दिलेशे जीक शरीरमँ अथनि आरौ खुन ले निकानन जा सके हुन। किअक ठँ कमजोव जकाँ रूमा बहन छेनषि। रिमनजी डाकूठवमँ अपन खुनक जाँट करैले कहनषि। हूकका खुनक जूप सदीपक खुनक जूपमँ गिनि गेन। रिमनजी डाकूठवकँ कहनषि-

“जेते खुनक खगता अछि। हवरा देहमँ निकारि सदीपकँ चट्टा दियौ।”

तकोन खगता भवि खुन रिमन जीक देहमँ निकारि सदीपकँ चट्टा गनाज रँड भेन गेन। जखनि रिमन जीक देहमँ खुन निकारि सदीपक देहमा डाकूठव चट्टरैत बहषि तखनि रिमनजी दिलेशे जीकँ कनषि-

“चनु एक-एक कप चाह पीरी। चाहो पीअरँ आ गणो कवरँ। भोजीले चाह सोहो लेल आएरँ।

जगहपव आरि गेन जी गनाजो भागव बहन अछि। भगराणक पुगामँ आरँ सदीपकँ किहु ले हएत।” दुनु गोठै चाहक दोकाणपव जा दोकाणद्वमँ रिमनजी दुठी चाह दगले कहनषि। दोकाणद्व दू कप चाह पकड़ दैनक। दुनु गोठै चाह पीरँह नगना। रिमनजी पुहुनषि-

“आरँ कद्व सदीपक माथ केणा फाँटन ?”



दिलसज्जी कहलखिण-

“अहाँकेँ तँ बूमलौ अछि सदीप फिकेठक गाड़ु रैतार अछि । आग सन्भावपुवमे फिकेठक मेच डन । सल्लेले आठ रैजे मेठव सागकिनसँ रैवना नऽ रिदा भेल । गाड़ु १पव तीन गोठे रैस गेल जखनि हुनपवास लोहिया टोकसँ रैवत तँ एकठा कृता मेठव सागकिनसँ ठकारा गेल । गाड़ु १ सगीडमे बहे षाटि कऽ सकडपव गिवन । तखल ओकव कपाव फाष्ट गेल । हेनमेठ पछिना सगीकेँ देल बरह ।”

घँठी भरि पढाति सदीप हेगिमे आएन । आँधि खोननक । डाकूठव कहलखिण-

“आरँ खतवाक कोला डव ले । सदीपक ज्ञान रैँटि गेल ।”

उवहारानी भरि पाँजमे रिमन ज्जीकेँ नऽ कामन नगनी-

“रौआ यौ रौआ, आग अहाँ ले बहिलौ तँ हमरा रौआकेँ की होगत से ले जानि यौ रौआ । हम अहाँक दर्शनकेँ रैड अथवा बूमै छेलौ । हमरा ग्राह कऽ दिअ यौ रौआ ।”

रिमनज्जी रैँजलखिण-

“हमरा खुन देनासँ सदीप रैँटि गेल । हमरा जेन एँसँ पौघ काज दोसव की भऽ सकैए । भगरान सदीपकेँ जन्दी स्रसथ कवथुन, सएह कामना अछि ।”

उवहारानी मोचए नगनी, एहेन पौघ रिटावक लोकक प्रति हमर केतेक खवाप मोच डन । बीता ठीके कहे डन... ।

उवहारानीक आँधिक लाव रँग ले भऽ अणरवत रैँहिते बहलौ ।

f



महाजन

“महाजन गोड नली छी ।”

“निकू बहख । कहख हज्जारी निकूना बहे छह किल ?”

“की निकू बहरै महाजन । अथाव आरि गेन दूदा अथनि धरि खूँझाव रैबद ले अएन ।”

“किअए, गहनका रैबद कि भेनह ।”

“गहनका रैबद मरि ल गेन । डकहा भ२ गेन बहे । एक हज्जार ठीका श्यामजी डाकूबकेँ देजियनि । ओहो रैड मेहनति केननि दूदा हमर भाग्ये खराग अछि । रैबद ले रैँटि सकन । श्यामजी अगन मेहताणा किछ ले केननि खानी दर्रागएक दाम केननि । रैड नीक लोक छथि श्यामजी ।”

“अच्छा केते दामक रैबद जेरैह ।” नगलेश्वर नानरौरु पुढनथि ।

“रैबदक दाममे तँ आगि नगन अछि । पटिस हज्जारसँ कममे जोते जोकब तँ हेरै ल कबत ।” हज्जारी राजन ।

नानरौरु हेब पुढनथि-

“अथनि जेरैह कपेआ ?”

“ले महाजन, एतेक कपेआ घबमे बखाराग ले ठीक हएत । फुसक घब छी टोवि भ२ ज्ञाएत तँ हुँहो अरफदे । काहि अथनि जोहा ठष्ट ज्ञाए नगर तथनि जेरै ।” हज्जारी कहनक ।

नानरौरु रैज्जनथि-

“ठीक छै जेहेन तोहब रिटाव ।”

नानरौरु आ हज्जारी दूनु गोठेक घब मेहन गाममे । दूदा ठेन अगन-अगन । नानरौरुक घब अगतठेनीमे जखेकि हज्जारीक घब खतरैठेनीमे । अगन-अगन ठेन भेल सभ घटना सभ ले बुनि सकए । तँ हज्जारीक रैबद डकहा रिमावीसँ मरन अ रात नानरौरुकै ले मानू भ२ सकन ।

नानरौरुक पुवा नाँ धनीमान बाँडत छियनि दूदा सभ कियो हूका नानरौरु कहे छन्हि । आरै तँ महाजन सेहो केते लोक कहे छन्हि । रापक एकलौता रैँ। रूँ, छेँ-छीन जमीनदाव । पक्काक घब । समुटा घब आ दररज्जा दरौनसँ घेवन आगुमे लोहाक फुँक । सभ कियो हूका घबकेँ हरेनी कहेत अछि । दररज्जापव पतियाणी नगन रैखारी छन्हि । पिताक अमानदारीमे सभ्ठा रैखारी धारसँ भवन बहे छन । जौ कोला मान लौदी भ२ ज्ञाग छेले तँ लोककेँ खेरागमे दिक्कत ले लोग तगने पोखरि उँवहि छना । पोखरिमे काज करैरैना रैँकती सभकेँ जनथे-कलोक अनारै पाँट सेब धार रौंगल दग छेनथि । अथला गाममे पाँटो पोखरि नानरौरुकै छन्हि । जगमे माँछ पोमन ज्ञाग । हान धरि हूका दररज्जापव हाथी-घोड । आ पाँट जोवा रैबद छेननि । दूदा अथनि तँ समए रैदनि गेन अछि । आरै, घोड । तँ दर-देहातमे अछियो दूदा हाथी तँ सबकमेठेमे देथे छी । हाथीक जगहपव नानरौरु रौनेवो गाड़ ी, घोड ीक जगहपव रूँछेँ मेठेब सागकिन बखल छथि तहिना रैबदक काज ठेकठेबसँ करै छथि । अथला हूका कमतीमे अस्नी पटसी रीघा खेत हेतनि । मिनिंग एकठ एनासँ किछ जमीन हूकव पिता रैँकेँ निधि देल बहथि । जन-मजदुर ले भेँकेँ कावण किछ जमीन नानरौरु अगना हाथे रैँटि देनथि । जमीन रैँटनसँ जे कपेआ भेन बहनि ओहीसँ नगानी-भिवानी करै छथि । मात्र पाँट रीघा खेत जे घब नग छन्हि से अगलसँ उँगजरेँ छथि रौँकी सभ्ठा मखग नगेल छथि ।

कमतीमे पषवह-मोनह सए मष धार अथला भ२ ज्ञाग छन्हि । पाँट सए मष धार रैखारीमे ठावि रौँकी धार रेगारी हाथे अगहल-पुसमे रैँटि दग छथि । अथनि हूकव दूख्य पेशी नगानी-भिवानी भ२ गेन अछि । अगन गाम जोडा पास-गड ीसक दम गाममे हूकव नहणापाती छेले छन्हि । धार सँगापव दग छथि माले आनीन-कातिकमे एक मष धारक पुस-गाघमे सरी मष नग छथि आ कपेआ तीन कपेए सैकड़ । सुदिपव । आन गोठे तँ पाँट कपेए सैकड़ । सुदिपव नगरै । अगनोआकेँ जेरैब बथि अथरा जमीन तका लिखा कर्जा दग छथि दूदा गोआकेँ रिष जमीन निथेल आ जेरैब लेल



कज्जा दग छथि । जौ कोणा थोदका नचवि जागए तँ ओकवा मुदि माफ क२ मात्र मुवि न२ फावकती क२ दग छथि ।

तेसब मानक गग छी । जंगनक रौपकेँ नकरौ नगकि जेनक । जंगन नानरौरूमँ पटिस हजाव ठाका कज्जा न२ पितारकेँ दबउंगामे गनाज करौनक दूदा पिता ले रँटि सकवनि । एमकी जंगन दिन्नीसँ आएन आ कज्जाक हिमारेँ सुननक तँ ओकवा माथमे चक्रव आरँए नगन । माट्टे तीण रँवथमे मुवि मुदि नगा दोरँव भ२ गेन । ओ काषए नगन । दिन्नीसँ दम हजाव ठाका महाजल नामे पठेल छन । रीस हजाव रंग अणल छन । महाजनक पएव पकज्जा काषए नगन । नानरौरू प्छनथि-

“कह२ जंगन किअए कले छह ?”

जंगन रौजन-

“महाजन, अहाँक कज्जा ले सदहा सकनिअ । रीसे हजाव ठाका छे । दिन्नीसे दूथित पज्जा गेनिअ । कमाएन ले भेले । केतएसँ अहाँ कज्जा सदहाएँ । जौ अहाँक कज्जा ले टुकता कवरँ तँ समाजमे रँव-रँववतापव के मदति कवत । सब कहत जंगना रँगमान अछि ।”

नानरौरू रँजनथि-

“सुनह जंगन, काषए जूनि । नारँह कनँ छह ठाका ।”

जंगन रौगनीसँ ठाका निकलि नानरौरूक हाथमे देनक । नानरौरू कपेआ गनि रँजना-

“रीस हजाव छह । दम हजाव पहिले भेजल बहक ।”

जंगन ठाठ भ२ हाथ जोडत रौजन-

“हँ महाजन, रीसे हजाव अछि ।”

नानरौरू प्छनथि-

“आरँ कह२ की कहे छहक ?”

जंगन हाथ जोडल रौजन-

“हम की रौजू महाजन, केणा रौजू । अहाँ एक दूसत पटिस हजाव ठाका देल बनी... । कोष दूहेँ रौजी ।”

नानरौरू प्छनथि-

“आबो केते द२ सके छहक ?”

जंगन रौजन-

“महाजन, एमकी आसीनमे जीड ी कठैले पंजारँ जाएँ । उतएसँ जे कमा क२ आषरँ से अहाँक पएवपव द२ जाएँ ।”

नानरौरू रँजनथि-

“ठीक छे । तारे धकाषव जोडि दग छिअह । जीड ी कठैसँ जे आमदनी हेतह पहुँटा जागह२ ।

तोवा फावकती द२ देरँह ।”

जंगन एकरँव लेव हाथ जोडत रौजन-

“जी महाजन, जे हएत पहुँटा देरँ ।”

नानरौरू कहनथि-

“अच्छा जा ।”

जंगन चलि गेन ।

नानरौरू एमए. पास छथि । उमेव माँटि-पैसँटि हेतनि । जग समेमे एमए.पास केल बहथि । कतेको कोलेजमे प्राफेसरवक लोकबी भ२ सके छन दूदा रौरूजी कहल बहनि जे लोकबी ले कवह । अणल समातिकेँ नड रँह-चवारँह । अहीसँ बिकास हेतह ।



नानरौरुकेँ दूषी रैषी आ दूषी रैषी । दूषु रैषी मान्नु रैसत । दूषु जमाए गज्जिगव । छेष्टका रैषी मज्जित गज्जिगवक पठ १ग पठ २त आ जेठका वज्जित वी.ए.पाम क२ गामेमे खेती-पथारी आ नगानीक काज देथेत दूदा अथला जूति नानरौरुक छन्हि घबमे ।

नानरौरुक साव हागसकुनक शिक्षक । ओ नानरौरुकेँ कहत वैह छथिन जे आरि हाथ-पव समूँ माले नगानी-तिवानी रैना काज रैल कक । जमाणा रैदनि गेन अछि । कथनि के रैगमानी क२ नेत तेकव कोन ठेकाण । दूदा नानरौरुगव सावक रातक कोलो असवि ले । अथला नगधग पनवहसँ वीस नाथ ठीकाक नगानी छन्हि ।

दिवावी पछाति जंगन पंजारीसँ आएन । बोले हरेलीगव गेन । नानरौरु दवररंज्जगव छेनथिन । “महाज्जण गोड नले डी ।” जंगन गेष्टेपवसँ हाथ जोड २त राजन ।

नानरौरु रैज्जणथिन-

“आरिह-आरिह जंगन । कहिया एनह पंजारीसँ ?”

“वातिए एलो हेल महाज्जण ।” जंगन ज्वारै देनकनि ।

“अच्छा रैसह, केहेन बहनह कमाग-धमाग ?” नानरौरु पुछनथिन ।

मगन ज्वारै देनक-

“मिना-जुना क२ ठीके बहन महाज्जण ।” राजि जंगन जमीनपव रैस गेन ।

नानरौरु कहनथिन-

“रिचिपव रैसह ले ।”

जंगन राजन-

“ले महाज्जण, हम मिच्छेमे ठीक डी ।”

नानरौरु पुछनथिन-

“हमवा दगले केतेक पाग अणनहक ?”

“सात हजार ठीका महाज्जण ।”

“कहाँ छह पाग नारिह ।”

जंगन रौगनीसँ ठीका निकालि महाज्जणक हाथमे दैत राजन-

“महाज्जण, हमवा हावकती द२ दिख ।”

नानरौरु पुछनथिन-

“पंजारीसँ एतरे अणनहक ?”

जंगन राजन-

“ले महाज्जण, आठ हजार भेल जगमे पाँच सए तँ ष्टकेमे चलि गेन आ पाँच सए पारनि ले बखल डी । जँ अगले कहर तँ हुँहो पाँच सए ठीका अगलेक पवपव बधि देर ।”

नानरौरु रैज्जणथिन-

“ले, बाथए पारनि ले । मान भविक पारनि डी । देखहक तँ वज्जित हरेलीमे अछि ?”

जंगन हरेलीक गेष्टेपव जा हाक देनक-

“वज्जित मारि नक, वज्जित मारि नक ?”

वज्जित चाह पीरै बहन छन । कप हाथेमे लले मोमहा आरि राजन-

“कहए जंगन, की रात छिथ ?”

जंगन कहनक-

“महाज्जण अगलेकेँ खोज करै छथिन ।”

“चनह चाह पीले अरि डी ।” वज्जितक दूहसँ रैहवाएन आ कनीए कान पछाति दवररंज्जगव आएन ।

नानरौरु वज्जितकेँ कहनथिन-

“कनी रैनी निकानह तँ ।”



बिजित अन्तर्गामी खोमि रैली निकाननक । नानरौरु हेलो रोजनखि-

“जगनक नाउपव सात हजार जमा कइ दहक आ रैली छेकि देहक । रोटावाक बाँपो मरि गेल ।

खिबीसाण अछि ।” बाँजि नानरौरु जगन दिस देखेत कहनखि-

“तुँ जा, पारमि-तिहावक समथ छी । केतेक बगक काज हेतह यवपव ।”

जगन हाथ जोड़त रोजन-

“महाजन, हमरा फावकती देखि ल ?”

नानरौरु-

“हँ हो, फावकती कइ देखिख । सुननहक ले जे बिजितकेँ रैली छेकेले कहि देखि ।”

“धनि छी महाजन अगल ।” आ कहैत जगन नानरौरुक पएव छुरि प्रणाम करैत रिदा भइ गेल ।

“मव आ की केनि रौरुजी । साते हजार नइ रैली छेका देखि । जगनपव तँ पटपण हजार ठाँका रैली छे । जगमे तीस हजार पहिल देल बहए आ सात हजार अखनि देनक हेल । अठावह हजार ठाँका छुट गेल । एषा जे फावकती देखै नगरेँ तँ सब अलिा कवत ।”

“बिजित तुँ तँ री.ए. पास छह । महाजनक अर्थ रूने छहक ?”

“हँ रूने छि । महा माल रौड जन माल आदमी । रौड आदमी ।”

“एकठाँ गप कहइ तँ, गाँधीजी केँ लोक महात्मा किअ कहैत अछि ? आ महात्माक की अर्थ होगत अछि ?” नानरौरु हेल प्छनखि ।

आ सुनि बिजित चुपे बहना । चुप देखि नानरौरु रोजन-

“हो, महात्माक अर्थ होगत अछि महान आत्मा । जेकव अत्मा महान अछि रहह महान भेल । आ से छना गाँधीजी । हुनकव अत्मा रौड महान छेलनि । दोसबक दूथ देखि ओ तुवत दूथी भइ जाग छना । सब जीरकेँ समाण नजबिस देखे छना तँए सब हुनका महात्मा कहैत अछि । तलिा महाजन, महा याणी महान आ जन माल आदमी । महान आदमी । सोचहक, लोक हमरा महान आदमी कहैत अछि । महान कथी ? धनीक छी तँए महान ? हो, जेकव दिन महान हुअए । जेकव आत्मा महान हुअए । जेकव मन महान हुअए । जेकव चरित्र महान हुअए । रहह महान आदमी हएत आ महाजन कहैत । रूमनहक ?”

बिजित कहनकनि-

“हँ रौरुजी रूमि गेलि ।”

मैनेहे खतरै छेनीमे एकगोठे बहए जाइल । जेहल पाकन जाइल काबी होगए तेहल ओकव चेहवाक बग काबी बहए । ओहो नानरौरुसँ महिस कीलेले तीस हजार ठाँका लेल बहए । सोचल बहए जे दुध रैति महाजनक पाग सठा देर । दूदा भाग साथ ले देनके । महिसकेँ साँप काँठ जेनके जगसँ महिस मरि गेल । नानरौरुकेँ पता चननि तँ ओ जिगेसा कवए जाइल ओगठाम गेलनि ।

जाइल नानरौरुक पएव पकड़ि काणए नगन । नानरौरु कहनखि-

“जुनि काणह, कणनासँ कोलो नात ले । भगणपव भरोस कवह रएह पुवा कवखि ।”

जाइल कलेत रोजन-

“महाजन, अहाँक कर्जा कतएसँ सठाएर ।”

नानरौरु कहनखि-

“तीण रौपुत कमागरेना छह । तीण महिा जँ गाम जोड़ि देरहक तँ हमर पाग सठा देरहक ।”

“हँ महाजन, सएह कवए पड़त । दस कष्टी रोपनि बहि गेल अछि । रोपनि कइ तीण रौपुत निकनि जाएर ।”

जाइल सएह केनक । पाँचे दिन पछाति जाइल तीण रौपुत दिनी जा एकठाँ दानि मीनमे नापि गेल । दियारती पछाति जेठका रैलीकेँ गाम पठनक । ओकवा कनियाँक पएव भावी छन । जाइलक जेठका रैली टोठिया डरन मटड । रौप तँ महाजनक पुवा ठाँका जोड़ि कइ रैली मावहद भेजक ।



रुदा टोठिया प्रवा पाग ले देनक । उ मोछए, महिस तँ मरि गेन तग दूखाले महाजनक सुदि किअए
देरै । मुड़ द२ दग डी सएह रँहूत ।

टोठिया नानरौरू अँठाग जा तिम हजाव ठोका निकारि क२ देनकनि । नानरौरू टोठियाकेँ प्छनखिण-

“जाहूण ले अएन ? ”

टोठिया जराव देनकनि-

“रौड, मायमे अँत । कहननि तेन रौली छेकि दगले । ”

नानरौरू हेबो प्छनखिण-

“रौरू सुदि किड ले देरैए जेन कहनकह ? ”

टोठिया राजन-

“सो महाजन, महिस मरि गेन । मुड़ द२ दग डी सएह रँहूत । सुदि केतएसँ देरै ? ”

बज्जितो नानरौरूक रँगनमे रैसन छन । जराव खूण । तेसमे अरि गेन । ठाठ भ२ टोठियाकेँ
कहनक-

“तोवा महिसक हम ठेका जेले बहियो की ? साँग काँष्ट जेनको अरि मरि गेलो तँ हमले पाग ले
देसए । हेबो रँगवता ले पछतो की ? ”

टोठिया राजन-

“ले देरै तँ की क२ जेरै ? गोली मरि देरै की ? ”

नानरौरू रात रँठते देखि रँठोकेँ छुप बहेले कहनखिण अरि टोठिया दिन देखेत कहनखिण-

“ग्रीक छै । हम पाग जमा क२ दग डी । जखनि जाहूण अँत तँ हम गप कवरै । ”

टोठिया कहनकनि-

“अरि किड ले देरै महाजन । रौली छेकि दिओ । रौडसँ कथी गप कवरै ? ”

नानरौरू कहनखिण-

“तो ज्ञ ले । पाग तोहव रौरू ले न२ गेन छन । तँए ओकनेसँ गप कवरै । ”

टोठिया भगभगगत रिदा भेन ।

जाहूण टोठियासँ हेण क२ प्छनक-

“महाजनक कर्जा फरिडा देगिनी ? ”

टोठिया कहनक-

“हँ तिम हजाव द२ देगिनि । रुदा महाजन रौली ले छेकनक । ”

तेपव जाहूण प्छनक-

“अरि सुदि रौसते जे पाँच हजाव देले बहिओ, से की केवली ? ”

टोठिया राजन-

“महिस मरि गेन तँ सुदि किअए देतिअ । मुड़ द२ देगिनि सएह रँहूत । ”

जाहूण कहनक-

“अ नीक काज ले केवहँ । तोवा रँव-रँगवतामे कियो एका पाग ले देतो । ”

टोठिया राजन-

“ले देत तँ हम रूमरै । ” कहि हेण काँष्ट देनक ।

एक मास पछाति टोठियाक घरवाली रँवहारानीकेँ बोलेसँ दर्द शुक भेन । टोठिया अशि नग
गेन । अशि हेण क२ अस्पतालसँ एमरुजेसँ मरिगोनक । टोठिया अशि अरि टोठियाक माए रँवहारानीकेँ
न२ हुनपवास बेहवत अस्पताल गेन । एक दुपहरिया अस्पतालमे बहन रुदा जग्गाशौच ले भेन ।
एक रँजे दिक रौद डाकूठव कहनखिण-

“हिनका डी.एम.सी.ए. न२ जाए पछत । भ२ सकैए ऑपलेशन करव पछनि । ”



टोर्ठिया पुढनक-

“आंपनेशेनमे केते खर्चा उत ? ”

“नगधग गनबहसँ रीस हज्जाव ठाका तँ पडि ए जघत । जँ तेनक पाग जमा कइ देरैहक तँ एम्बुजेसँ दबिउंगा भेज देरैह । ”

टोर्ठिया राजन-

“अथनि तँ पाँटे सए ठाका अछि । ”

डाकूँव सहिरै कहनथि-

“गाम जा कइ घंठी भविमे ठाकाक उरियाण कइ आरैह । जेतेक देवी हेतह, बोगीक हानति तेते खवाप हेतह । ”

आरै तँ टोर्ठियाक माथा चकवधन । सोए नगन, एतेक ठाका के देत । महाजन तँ देत ले । हुनकब सुदि ले देल बहिउ । बंजीतसँ झुलै नगा जेल बनी । अछुडा गाम जाग डी । केते गोठैके दक पीउल डी । देखे छिउँ रँखतगव के काज आरैए । टोर्ठिया ठैम्पु पकडि गाम अ एन । गाममे जेते सगी-साथी, हित-रौष डन सभसँ पाग मगनक झुदा कियो एका ठाका टोर्ठियाके ले देनके जगसँ अ कब द्यागे ल काज करे । हारि कइ रौरुके दिनी ह्येण केनक । सभ गप कहनक । जाह्नव ह्येणगव कहनक-

“तँ महाजनक सुदि ले देनिह । तौवा के पाग देतो । जँ महाजनके सुदि देल बहिउँ तँ जेते ठाका हुनकसँ मगितीहण उ दइ देतहुन । अ रँ कोण झुलै हुनकसँ पाग मागइ । ”

टोर्ठियाके अण गनती महसुस भेल । शिताके कहनक-

“रौड, हमवासँ गनती भेल । हम पंजारै कमा महाजनक पाग दूकता कवर । तँ महाजनसँ रीस हज्जाव ठाका रेरुस्था कवा दैह । ”

जाह्नव राजन-

“तँ महाजन गग जो । हुनकसँ गनती माफ करैवे निहोवा करिहनि आ सभ गप कहियनि । हुनकब कजेजा रँड कोमन डगहि । हमवा रिसराम अछि जकव मदति कवथुन । अणव ले देतहुन तँ हमवा ह्येण करिहै आ गप कवरिहै । ”

टोर्ठिया नानरौरु दवरैज्जागव गेल । नानरौरु गेगव पठित बहथि । टोर्ठिया एक कात गूठ भइ गेल राजन किडु ले । अथनि नानरौरुक नजबि टोर्ठियागव गेननि तँ पुढनथि-

“कहइ टोठी केमहव-केमहव एनह हेल ? ”

टोर्ठिया धवती दिस आथि गडोल राजन-

“महाजन हमवासँ गनती भइ गेल डन । माफ कइ दिअ । हमझँ अहीक रौन-रँट्टा डी । ”

नानरौरु पुढनथि-

“अछुडा, कहइ की रौत अछि ? ”

टोर्ठिया सभ गप सुना देनक ।

नानरौरु कहनथि-

“तौवा प्रति तँ हमवा रँड दुख डह । झुदा तौहव कनिगाँक जाण खतवामे डह आ दोसव रौत जे जाह्नव नीक लोक अछि । ठाका नइ जा आ नीकसँ गवाज कवारैह । ” कहत नानरौरु त्रिजोबीसँ रीस हज्जाव ठाका निकानि टोर्ठियाके देनथि । टोर्ठिया नानरौरुक पएवगव थमि दूनु हापे गोव नापि भवत आथिसँ गहनका गनती गेल एक रँव ह्येण गनतीक माहरी मागनक ।

नानरौरु कहनथि-

“जननीसँ हुनपवास जा आ कनिगाँके नइ दबिउंगा जा । अरैव तेनासँ बोगीक हानति खवाप भइ सकैत अछि । ”

टाँया ठैम्पु पकडि सडक दिस रिदा भइ गेल ।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

f



गोरबरीछरी

सखुआ गामसँ उतव रिहून नदी जे पच्छिमसँ पूर दिम रहैए । नदी रबमाती छी ह्मदा कोसी नहबिक पाणि नदीमे गिरोल अछि तँए प्रायः राबहो गाम पाणि रहैत बहैए । नदीक उतव करबगारहरना पवती । पवतीसँ सए मीठवक दूरीपव एण.एच.सडक अछि । पवतीसँ उतव-पूर एण.एच. सडकक दूनु कात नरठेनी गाम आ उतव-पच्छिममे नवहियाक धनजैया ठेन अछि । नदीमे पक्का अथरा जोहाक पुन तँ ले अछि ह्मदा रॉसिक चटवीक नटका अछि । जेपव द२ मसुखसँ न२ क२ रकवी-डकवी, सागकिन-मोठवमागकिन पाव होगत अछि । पवतीक काते-काते लोक सभ अगण जजाति रँचरौक खातीव आवा देल अछि । आवापव जिमेरी, आम, माहोव, कदम आ गुनबिक गाछ सभ अछि । सालो तबि पवतीपव लोक सभ महिस, रबद, गाए आ रकवी चवहैए । सखुआ दूनु ठेनक नरठेनी आ धनजैया ठेनक मान-जानक अनारौ कखला कान मानला पञ्जीक चवराहा सभ महिस पवतीपव न२ अलैए तगले कखला कान सखुआक चवराहा आ अणगोआँ चवराहामे बक्का-ठेकी मेहो भ२ जागत अछि । सखुआक चवराहा सरहक कहरँ छै जे पवती हमरा गामक सीमामे अछि । तँए एंपव हही सभ्ठी मान-जान चवहैर । ह्मदा नरठेनी आ धनजैआ ठेनक चवराहा सरहक कहरँ छै जे पवती सबकावी छी तँए एंपव सरहक अघिकाव अछि । सभ कियो मान चरौत ।

पहिल तँ पवतीक बकरा रोगस रीया छन ह्मदा अथनि दम-राबह रीयाक नगणग हएत । नदीक दक्षिण पाँट रीयाक धतपत पवती छन जे जेत भ२ गेन । उतवरविण पवतीमे सँ नगणग पाँट रीया मेहो जेत भ२ गेन । रँचनान पवती जेत भ२ जागत ह्मदा करबगार भेल ले जेत भ२ सकन । केतेक रौव लोक सभ जेतके परिवास केनक ह्मदा सफल ले भ२ सकन ।

सखुआ गाममे तँ ह्मसनमाण ले अछि ह्मदा नवहियामे अछि । नवहैए गामक ह्मसनमाण सभ ए पवतीपव करब दगले अरैत बहै छथि । ए पवतीपव खानी माजैथी ले चरौन जागए रँकनी गुड़ गीगुडी, टिका-टिका आ गुनली-उँठी गत्यादि खेनएन जागत अछि ।

पवतीपव तीन्ठी गाछ अछि । दूठी गाछ रबक आ एकठी कदमक अछि । चवराहा सभ अगण-अगण हँड रँगा उग गाछ तव रँसैए । कोला गाछ तव ताम-खेनागत तँ कोला गाछ तव नुजे आरँ तँ गाछ तव चवराहा सभ मोरौगनपव मिसामे देखेत बहैए । किछ चवराहा आवा पवहक गाछ तव मेहो रँसन बहैए ।

एही पवतीपव गोरब रीछि क२ दुखनी अगण गुजब करैत छेली । दुखनीक पति खोनाग दु मान पहिल मवि गेन । खोनाग दिननीमे लोकरा करै छन । ओतै रौखाव नगले । डाकठवसँ देखोनक तँ डाकठव कहनकनि जे कानाजाव भ२ गेन अछि । ह्मदा पागक तिवेठमे ठीकसँ गनाज ले भेन । जखनि चले-हिण्डमे दिरत हूअ नगले तँ एकठी गाँआँ गाम लल एले खोनागके । गाममे दुखनी कर्जा न२ ग्रामी डाकठवसँ गनाज करौनक ह्मदा रिमावी ठीक ले भेले । दिननीसँ एना महिल दिन पढाति खोनाग अगण पनी दुखनी आ तीण मानक एकठी रूटकेँ छोडि दुनिसाँसँ रिदा भ२ गेन । दुखनी उँपव दुखक पहाड ठूँठ खसन । कलैत-कलैत दुखनीक आँधि नान भ२ फुनि गेले । ठेन-पडामक लोकक अनारौ नहिवसँ तँए-रौप आरँ ह्मदा रँनहले कहैत पाँट दिम तक बहि दुखकेँ रँठि मगो नहिया चलेले कहनके । ह्मदा दुखनी ले गेन । एक पनवहिया तँ शौकेमे डूमन बहनी । रँठी रूचनीक हँह देखि ह्मदसँ काज-वाज कवए नगनी । आरँ दुखनी पवतीपव गोरब रीछि टिपड गी गिर्मली रँजावमे रँचि अगण गुजब-रँसव कवए नगनी ।

दुखनीकेँ एकठी रँठीए ठी । प्रायः तह्र दुखाने दुखनीक माए-पिता दोसव चूमोण करैले कहनक ह्मदा दुखनी तैयाव ले भेन । दुखनीकेँ मात्र दु कष्टा घवाड गैथी अछि । मान-जानक नाँपव एकठी रँकवीथी । घब ह्मसक हुँहो चुरिते । ओही घबमे भागमो-भात करैत, रँकवीओ रँनहैत आ दूनु माय-धी स्वतरो करैत । बोले किछ खोनाग रँगा था-पीरँ घबमे फण्टक सँ रँकवी आ रँठीकेँ न२ दुखनी



पवतीपव चलि जागत छन । पवतीपव रिकबीउ चवरेँ, रेँपीउकेँ खेनरेँ आ गोरैरो रीछि-रीछि जमा करैए । पवतीपव गोरैवक टिपडि पाधि सुथेजे छोटि दगए । सुथना पछाति गामपव आनि-आनि बाथेँ आ तेसवा दिसपव निर्माली जा रेँचरौ करैए । ए थेप निर्माली रँजावमे सकुन जागत मिया-पुतापव नजबि पडले । एक्क बँगक कपड । पहिले रँचटाकेँ सकुन जागत देखि दुखनीउकेँ अपन रँचनीपव मियाण गेले । सोछए नगन, हमवा रूतेँ तँ रँचनीकेँ रैमी पठनी ले हएत ह्मदा टिपीउ-पुजी जोकव तँ कहूना कइ पछरैँ कवरँ । हमवा जे दुखनीक राँप दिनेमीँ टिपी पठरैँ तँ दुनियाँ पठ री आ दुनियाँ निथेरौ कवी । अगला तँ पठन छी ले । तँए मसक रात कहियो रँचनीक राँपकेँ ले निथि सकलौ । जेमा चलि गेन । जे पछिना रात सत मस पडले दुखनीक आँधिँ हएव दहो-रहो लाव जाए नगन ।

एहव आरि कइ दुखनीक मस्य आवी भइ गेन । किएक तँ आरि उकव टिपडि रिकनाग कय भइ गेन । कावण लोकौ सत आ हेँठोरैना लैमक उँपयोग कवए नगन । चाहैँना सत लैमेपव चाह रँना-रँना रेँचए नगन । पहिले तँ कोगनापव तानस करै छन जगमे टिपडि रँगवता बहरैँ करै छेले ह्मदा मे आरि ले बहन । दुखनीक गुजव-रँसवमे दिक्कत हूँए नगन ।

दिसक मसयग राँवह रँजेत । ठँठँलैँखा रौदमे दुखनी आ रँचनी पवती कातक आवापव गाछ तव रँसन छन । रँकबीउ नगेमे छेले । तीन छिष्टा गोरैव रीछि जमा केल छेले । रँसन-रँसन सोटे छेले, टिपडि रीकर तँ कयि गेन लेन ह्मदा दोसव काजो तँ ले अछि । तखल रँचनी माएकेँ कहनक-

“माए ली, तुख नगन अछि ।”

दुखनी रेँपी दिस देखए नगन सहजे-सहजे आँधिँ लाव रँहए नगले । दूष करैत गामपव रिदा भेन । भवि बसता एतरेँ सोटे छेले जे आग तँ घबमे किछ ले अछि रेँपीकेँ कथी खूँआएँ आ अगल केना बहरँ । बसतेमे आँगनराडि क केन्द्र पडत अछि । केन्द्रपव मिया-पुताकेँ खावी जेल पाँतिमे रँसन देखनक । हाँग-हाँग नहवन चलि घबपव जा छिगा धोग रँचनीक हाथमे दइ केन्द्रपव जागले दुखनी कहनक । पाहु-पाहु अगला आएन । महालिका जखनि थिचडि पवस्य नगनी तँ रँचनीपव नजबि गेनेनि तँ पुछनथि-

“तँ तँ पहिले ले आएन छेलैँ ? तौवा ले तँ थिचडि ले रँसन अछि ।”

मेरिका महालिकक रात सुनि रँजनी-

“अच्छा, की हेते । उकवो थावीमे थिचडि दइ दियो ।”

मेरिकक नजबि दुखनीपव गेन तँ दुखनीकेँ नग रँजा पुछनी-

“अहँ अगला रेँपीकेँ किअए ले केन्द्रपव पठरैँ छी ?”

दुखनी कहनकनि-

“की कइ दीदी । एकव राँप दु रँवथ पहिले मवि गेन । तँए एको बती नीक ले नहोए । रेँपी नगमे बहए तँ सतोख होगए ।”

रिचटेमे मेरिका रँजनी-

“देखु जे मवि गेन उ तँ दुनियाँ चलि गेन । अहाँ अगला रेँपीकेँ भरिस किअए खाप करै छी ।

केन्द्रपव उत तँ किछ मिथरौ कवत आ नीक संसारो हेते । तिसबमे जनथेँ आ दुगहबियामे थेनाग सेहो थाएत । आरि तँ सबकार अठ गग सए ठीका रँचटाक कपड । लेन सेहो दग छे ।”

दुखनी रँजनी-

“दीदी, काहिसँ हमाँ अगला रँचनीकेँ केन्द्रपव पठाएँ ।”

दुखनी अगल सत दुखा मेरिककेँ सुना देनक । रँचनाना थिचडि दुखनीकेँ मेरिका दइ देनक । दुखनी सत रँसन धोग-माजि महालिककेँ दइ अगला आरि गेनी ।



आरिं दुखनी अंगल-अंगल रतिन मांजि गृजव कवए नगनी । दुखनी अछि तँ रँड गवीरँ तद्दमे
मासोमात-रँसहावा ह्दुदा रेचारी अछि गगणदाव आ मरातिमाणी जे कोना मन्त्रक मत्तसँ पैघ ग्ण
होए ।

एक दिन दुखनीकेँ रँष्टपव एकठाँ मोरौगन भेटैत । मोरौगन नऽ दुखनी अंगना अरै छनि ।
तखल रँष्टपव रँडफन दुखनीक खाँ गछामे मोरौगन देखनक । देखिते प्छनके-
“अहाँक खाँगछामे मोरौगन देखे छी ! कहिया जेतौ ? ”

दुखनी राजनि-

“अ मोरौगन रँष्टपव भेटैत । जेकव हएत तेकवा दऽ देरँ । ”

रँडफन कहनके-

“देखौ केहेन मोरौगन अछि । ”

दुखनी देखे देनके । मोरौगन नरै बहे । कमतीमे तीण हज्जामँ डुंगलेक । रँडफनकेँ जोत आरि
गेलै राजन-

“गाँट मए ठाँका दग छी हमरा दऽ दिख । ”

“ले यो रँौआ, हम मोरौगन ले देरँ आ ले रँेचरँ । जेकव हएत तेकवा दऽ देरँ । ”

दुखनी रँडफनक हाथसँ मोरौगन नऽ घबगव रिदा भेल । बहि-बहि कऽ मोरौगनमे गीत रँजे छन ।
दुखनीकेँ तँ मोरौगनक कोना भाँजे ले रँूमन बहे तँ ओ रिंग-ठेन राजि-राजि रँन भऽ जए ।

अंगनामे रँुचनी देखनक तखल हएव गीत राजन । रँुचनी हबिअवका रँैम दारि राजन-

“हेनाँ ? ”

ओमहवसँ अराज आएन-

“के रँजे छी ? ”

“हम रँुचनी । ”

“के रँुचनी केकव रँैपी ? ”

रँुचनी राजनि-

“माएक नाँ दुखनी छी । रँारू गवि गेन अछि । ”

ओमहवसँ हएव प्छनक-

“तेहव रँारूक की नाँ ? ”

“स्वअर्गीए खोनाग ? ”

“अ मोरौगन तँ केतएसँ अलजीही ? ”

रँुचनी कहनके-

“माए देनक । ”

“तँ अंगना माएकेँ दही । गप कवा । ”

रँुचनी माए हाथकेँ मोरौगन दैत राजनि-

“ले गप कवही । ”

दुखनी रँैपीए जकाँ मोरौगन कान नग मठी राजनि-

“अ मोरौगन हमरा बन्तापव भेटैत । जेकव हएत तेकवा दऽ देरँ । ”

ओमहवसँ अराज आएन-

“मोरौगन हमर छी । हम अरै छी । ” कहि मोरौगन रँन केनक ।

कनीए कान पछाति मोठव मागकिनसँ दु गोठे दुखनी घबगव पहुँचन । ओगमे एक गोठे
ह्दुधियाजी बहथिन । ह्दुधियाजी दुखनीकेँ रँजा प्छनथिन-

“कहाँ अछि मोरौगन ? ”



दूखनी मोरौगत घबसँ निकालि हाथमे द२ देनकनि । मोरौगत न२ ऋथियाज्जी पाँट सॣ कपेखा दूखनीकेँ दिअ नगनथिन । ऋदा दूखनी कपेखा ले जेनक । आ रौजलि-

“हम कपेखा कथीक जेरँ हमवा जेठेन बहए अहाँक डी न२ जाँड ।”

ऋथियाज्जी दूखनीक रेरहावपव खुशे होगत पुढनथिन-

“अहाँकेँ सामाजिक स्वबक्सा पेंसन जेठेए ?”

दूखनी ज़रारँ देनक-

“हमवा के देत पिनसिन उँ तँ धनिकाहा सरँहक डी ल । हम तँ मसोमात डी ।”

ऋथियाज्जी हएव पुढनथिन-

“अतुयौदय जेठेए आकि ले ?”

दूखनी कहनकनि-

“निथा-पठली तँ क२ क२ गेन ऋदा अथनि तक कहाँ फूट्ठो जेठेन ।”

ऋथियाज्जी रँजगथिन-

“अहाँ टाकिष्टा हएठे घीटा क२ बाथरँ । हम पवसु आरि अहाँक नाँ सामाजिक स्वबक्सारँना हार्मि भरि पठा देरँ । अतुयौदयमे सेहो नाँ जेठे देरँ । केते गेठेक मवनासँ जगह खानी अछि ।”

तेसब दिन ऋथियाज्जी आरि हार्मि भरि दूखनीसँ हएठे आ निशान न२ रिदा होगत कहनथिन-

“अगिना माससँ सब किछु जेठेन ।”

आग दूखनीक रैठी टाथामे पठेत अछि । ओकवा सामाजिक स्वबक्सा पेंसन जेठेए अछि ।

गन्दिवा अराम सेहो जेठेन जगसँ घरो भ२ गेल । हनाँकि छत ले उँपवमे एसरेमष्टमे छै ।

f



पौषाहावक गहूम

चलोवा प्राथमिक रिद्यालयक शिक्षा समितिक गठन भेल । वज्जल ज़ीक पशो बीता देरी मट्टर आ अशनीनज़ी अंध्यासक भेला । मोहनज़ी सेहो सदस्या चुनल गेला ।

रिद्यालयमे छत्र सरहक पौषाहावक जेन सब महिला सबकार गहूम दैत छन आ गवीरँ छत्र सब जेन पौषाहावक अमारें एक कपेआ प्रतिदिक हिमरँसँ प्रातुसाहन भन्ता सेहो दग छन । आरँ तँ सकुन सबमे मीशुक द्धतारिक छत्र सबकेँ खेलाग भेठैए । कहियौ धिचडी, कहियौ कवली-भात तँ कहियौ अण्डा-भात । जग समेमे पौषाहावक रूपमे गहूम भेठै छन तग सम्य प्रधानाध्यापक आ शिक्षा समितिक अंध्यासक रँजोकसँ गहूम उठाँ अ नि छत्र सरहक रीच रँठै छन । प्रातुसाहन भन्ता सकुनक प्रधानाध्यापक प्रथण्ड शिक्षा कार्यालयसँ अले छन आ ओहो छत्र सरहक रीच रँठि दग छन । द्धदा प्रधानाध्यापक सब छत्र सबकेँ कम गहूम दग छन । प्रायः दु मासपव पौषाहावक रँठरावा होग छन । जगमे एक किलो कम गहूम छत्र सबकेँ भेठै छेलै । चलोवा प्राथमिक रिद्यालयक प्रधानाध्यापिका सेहो यएह काज करै छन । प्रातुसाहन वाशिक रँठरावामे पाँट ठाकासँ दस ठाका धरि कम क२ छत्र सरहक रीच रँठैत बहथि ।

ग्राम पंचायतक चुनार भेल । मोहनज़ी चलोवा पंचायतसँ पंचायत समितिक सदस्या चुनल गेला । प्रद्धुख चुनारमे मोहन ज़ीकेँ सक्रिय भूमिका बहनथि । आ हूणके खेमाक रँकती प्रद्धुख भेला । आरँ मोहनज़ी रँसी कान प्रथण्डे द्धख्यानमे प्रद्धुख ज़ीक संग बह्य नगना । प्रथण्डमे चलेरँना सब योज़नाक जाणकारी हूणका बसे-बसे हूँअ नगनथि । प्राथमिक रिद्यालय चलोवामे छत्र सरहक रीच प्रातुसाहन भन्ता आ पौषाहाव रितबामे कठौठी होगते छन । गहूम आ ठाका रँठना गछाति जे रँठे छन ओ प्रधानाध्यापिका असगरे हजम क२ नग छेली । छत्र मास भेल । रिद्यालयक शिक्षा समितिक अंध्यासक देखैत बहना । आठम मासमे ज़खनि छत्र सबकेँ प्रातुसाहन वाशि देन जाग छन तखनि शिक्षा समितिक अंध्यासक अशनीनज़ी, मट्टरक पति वज्जलज़ी आ समिति सदस्या मोहनज़ी तीशु गोठै रिद्यालयपव गेला । प्रधानाध्यापिकासँ प्रातुसाहन भन्ताक वाशिक रितबक पञ्जी न२ जेना । पञ्जीमे छत्र सरहक नामक आगु सब रिद्याथीक हस्तासक छन । द्धदा वाशि अकित ले छन । शिक्षा समितिक सदस्या सरहक रिचाव भेल जे काहि अ पञ्जी न२ जा क२ प्रद्धुख सहिरँकेँ देखोन जाए । ओ जे सनाह देखि से कएन ज़ाएत ।

प्रधानाध्यापिका रिता देरीक पति शोभाज़ी गामक दरँग रँकती । हूणका ज़खनि अ सब रीत पता नगनथि तखनि ओ मोहन ज़ीकेँ रँजा धमकी देनकनि । द्धदा मोहनज़ी पव ओग धमकीक कोला अमरि ले भेल । शोभाज़ी मोहन ज़ीकेँ कहनकनि-

“अहाँ, रितबा पञ्जी प्रधानाध्यापिकालेँ आगस क२ दियौ ले तँ हम अहाँपव केस कवरँ ।”

मोहनज़ी कहनथि-

“पञ्जी तँ अंध्यासक नग अछि । हम केतएसँ देरँ । गोआँकेँ रँसाँ हूणका सरहक जे निर्णय हेतनि मएह कएन ज़ाएत । अहाँ हमरा रँकतीगत कपे किछु ले कद्ध । ओना अहाँकेँ जे मल फुडूए से कक । हम डलेरँना ले छी ।”

ज़खनि धमकीक कोला अमरि ले भेल तँ शोभाज़ी पंचायतक द्धथिया ज़ीकेँ रँजेनथि । पंचायतक द्धथियाज़ी सेरा निवृत्त शिक्षक छथि । ओहो अंध्यासक आ मोहनज़ी सँ पञ्जी आगस करैले अ ग्रह केनथि । द्धदा पञ्जी आगस ले भेल । दोसब दिस भेले सकुनेपव सकुदछा गामक लोक रँसल । निर्णय भेल, एतेक दिस प्रधानाध्यापिका जे केनी से केनी द्धदा आरँ आगुसँ वाशि रितबण अखरा गहूमक रँठरावामे कठौती ले कवथि । द्धथियाज़ी कहनथि-

“ज़खनि गहूम आकि प्रातुसाहनक वाशिक रितबा हूँअ तखनि समितिक सब सदस्या योज़ुद बहथि । हूणके सरहक देख-लेखमे सब किछु रितबा हूँअ ।”



सभ गोठे ऋथिया जीक रातक थोपड़ि रँजा समर्थन केनक ।

मोहनजी नामक जेन शिक्षा समितिक सदस्य बहि गेला । पाँचसत समितिक सदस्य भेलाक काबा हूकका रँजोकसँ हूबसति ले बहे छैननि । हूकको दुष्टा रँष्टी ओही सकुनमे पढ़ि छन । दु मासक पढाति सकुनमे गहूमक रितबा भेन । मोहनजी अगला गेलोसँ पुढनथि-

“एमकी रौंथा सभ सकुनसँ केते-केते गहूम अणनक ? ”

गेली कहनकनि-

“पहूकसँ किनाए भवि कन्य अणनक । पहिल दु मासमे पाँच किनाए अलेत बह । ए रँव चाखि किनाए अणनक । ”

मोहन जीक मथ ठगननि । पाता नगननि जे छेब-छेब मोमेवा भाग । शिक्षा समितिक अध्यक्ष आ मटिरकेँ आर कमीशन भेटैए नगननि । तँए एक किनाए गहूम आवा कपौती भइ गेन । मोहनजी अध्यक्ष नग जा पुढनथि-

“अनीन रँरु, एमकी तँ एक किनाए गहूम आवा कपौती भइ गेन । अहीजे एतेक नाँक भेन बह कि ? ”

अनीनजी कहनथि-

“छोड़ू मोहन भाग, अरुँ रँजोकमे कोला योजना जाते गइ । किछ कमड-धमाड । अथनि मोका अछि । अगिला दुवारमे कि हएत कि ले । देखे ले छिअ, पौघ-सँ-पौघ लता सभ केतेक बहूब घोषणा करैए । ”

मोहनजी अनीन जीक रात सुनि अराक बहि गेला । रँजना किछ ले । किछ हूँरें ले कबनि ।

पौड़ कान पढाति कहनथि-

“ग्रीक छै, काहि हम रिन्यानय शिक्षा समितिँ तियाग पत्र दइ देर । अहाँ सभकेँ जे मस हूँडत सहए कवर । ”

अगिला दिन मोहनजी शिक्षा समितिँ तियाग पत्र दइ देनथि । ऋदा गहूम रितबापव नजरि बाथए नगनथि । प्रायः दु मासपव गहूमक उठाऊ कइ छात्र-छात्रामे रँष्टन जाग छन । दु मासक एक रँव भेटै छेलै । दिनमरव आ जगरवीक गहूम तँ रँष्टी गेन छन । ऋदा हवरवी-मार्चक गहूम अथीलामे ले रितबा भेन । मग्न मेहो रितन । ऋदा गहूमक कोला पाता ले । पाँच जूनकेँ सकुनक प्रधाणाध्यापिका आ अध्यक्ष गहूम उठा कइ आनि सात जूनसँ रँष्टरावा शुक केननि ।

मोहनजी दररँजजापव बथि । तखल किछ लोक हूकका नग आरि कहनकनि-

“सौ समितिजी, जगरवी महिना धरिक गहूम भेटैए छन । हवरवी, मार्च, अथीन आ मग्न ए टाक मासक गहूक रँकीए छन । तगमे दुगए मासक गहूम रँष्टन जा बहन अछि । दु मासक गहूम केतए गेन ? ”

मोहनजी कहनथि-

“अच्छा, हम पाता नगरै छी । ”

मोहनजी प्रधाणाध्यापिका नग जा पुढनथि-

“दु मासक गहूम की भेन ? ”

प्रधाणाध्यापिका कहनकनि-

“हवरवी आ मार्चक गहूम जेपस कइ गेन । आरँष्टल ले भेन । अथनि अथीन-मग्न मासक गहूम रँष्टन जा बहन अछि । ”

मोहन जीक मस ले मानकनि तँ ओ अध्यक्ष अनीनजी नग जा हूकसँ पुढनथि । ऋदा हूकको जराँ सएह । गहूम जेपस भइ गेन ।

मोहन जीक मसमे भेननि जे सभ कियो मीनी भगत कइ लल अछि । एकवा सरहक रातपव रिसराम ले कवी । रिटाव केननि, भवि दिन तँ रँजोकमे बहे छी । किचक ले रीगओ आरिंसमे जा पाता



नगरी । अगिला दिन रूलोक गेना तँ रीगठ अहिममे हाकिमे ले डन । उगठाम मात्र एकठा शिक्षक
डना जे निखा-पठनीक काज समहारे डना । पुढनापव ओहो गोले-गठेन ज्वारै देनकनि । मोहनजी
सोचननि जे अगना रूते ले पता नगत । प्रदुख सहिरैकेँ कल्प पडत । उ तँ दमे मिठमे पता
नगा लेखि । प्रदुख जौकेँ सत रात कहनथि । प्रदुखजी कहनथि-
“एतेक छोट काज लेन अहाँ विविमाण जी । पाँटे मिठमे पता नगा दग छी ।” कहत प्रदुखजी
ठैरुनपव बाखन रैनक रैठम ठीपननि । चपवानी आएन । गोदम मेलजबक बजिसठव न२ रैजौल
अरैले चपवानीकेँ कनथि । पाँटे मिठ पढाति चपवानी संग मेलजब बजिसठव न२ क२ आएन ।
प्रदुख सहिरै मेलजबसँ चलोवा सुकनक गहुम उठारिक तारीख पुढनथि । मेलजब बजिसठव देखि
रैतेनकनि । ३१ मङ्गलेँ हवरवी-मार्चक आ ०१ जूनकेँ अशीन-मङ्ग मासक गहुम उठारि भेल अछि । उठारि
बजिसठवपव रिद्यालय शिक्षा समितिक अध्यक्ष आ प्रधाषाध्यापिकाक हस्ताक्षर अछि । अरि मोहन जौकेँ
रूनेमे कनिको भागठ ले बहन जे दु मासक गहुम प्रधाषाध्यापिका, सटिब आ अध्यक्ष मिलि रैति नग
गेना ।

गामपव अरि मोहनजी एक रैब हएब अध्यक्ष अशीनजी नग गेना । पता चनननि । अध्यक्षजी
प्रधाषाध्यापक उगठाम गेल अछि । तथनि ओहो प्रधाषाध्यापिका अँठाम एना ।

अँठाम देखे छथि जे प्रधाषाध्यापिकाक पति शोभाजी, अशीनजी आ बज्जजी सत गोठे अकठाम
रैस चाह पीर बहन छथि । मोहन जौकेँ देखिते शोभाजी रैजना-

“अरिह अरिह मोहन, कहअ की हान-दान छह ? ”

मोहनजी कहनकनि-

“ठीके अछि । ”

रिदुटेमे शोभाजी पशौकेँ हाक दैत कहनथि-

“एक कप चाह ओहो लल आँड । ”

मोहनजी कहथि-

“हम चाह ले पीर, अखल टोकपव चाह पीरौ लेन । ”

तारै रिभाजी एक कप चाह आ एक गिनास पाणि लल अरि मोहनजी दिन रैठने । मोहनजी
कहनथि-

“रैसी चाह पीरसँ लैस रैनि जागए । ”

रिभाजी कहनथि-

“जीअ ल कथिले हमवा सतपव रिगडन बहे छी । ”

मोहनजी चाहक कप पकडत कहनकनि-

“अहाँ कोन हमर खेत जोति लेरौ जे हम अरुपव रिगडन बहरै । ”

रिदुटेमे बज्जजी पुढनथि-

“अरि कहु समितिजी, केम्हब-केम्हब आगमन भेलै ? ”

चाहक गोठ लेत मोहनजी रैजना-

“हम पुढिले एरौ लेन जे ठीके दु मासक पोषाहार लेपस भ२ गेलै ? ”

शोभाजी रिदुटेमे ठीपनथि-

“तँ हम सत हुमि रैजे छी ? तँ तँ तयि दिन रूलोकमे बहे छह । पता नगा लेह । ”

अध्यक्ष अशीनजी ठैकनकनि-

“सो समितिजी, छोडू ल रितना रात । अरु कथि-कथिमे नगन बहे छी । किडु कमाएर-धमाएर से
ले । सो अथनि कमागक मोका भेटेन अछि । समेकेँ चिन्हयो । मोकाक हएद उठाँड । ”

रिदुटेमे बज्जजी सेहो अगन रात बखननि-



“देथियो ल, डीनव सब छुअ-छुअ मामगव अतुयोदय योजनाक चाँव-गहूम जलताकेँ दैत अछि ।
कहाँ कियो किछु रँजेए । ओ सब कमा क२ रौट भ२ गेन ।”

मोहनजी उँग होगत रँजना-

“दुनियाँ-दाबीक राँत छोडू जे रियस न२ क२ हम एतौँ तैपव चर्चा कक । पवसु पँचायत समितिक
रैसक छी । हमरा सकुनक पोयाहाव किअए जेपस भ२ गेन से ओग रैसकमे अराज उँठाएँ । ठीक
छे हम जाग छी ।” कहि मोहनजी उँठि क२ ठाँठ भ२ गेन ।

तारें शोभाजी कहनथि-

“रैसह ल, जनथे खा क२ जगहअ । किअए एते आग्रतएन छह ?”

मोहनजी कहनकनि-

“हमरा आनो काज सब अछि । जाए दिअ ।” कहि मोहनजी रिदा भ२ गेन ।

शोभाजी अनीन जौकेँ गशिवा लेनथि । अनीनजी ठाँठ होगत रँजना-

“ककु समितिजी, हमरूँ चनरँ ।”

“चनरँ तँ चनु ।” मोहनजी कहनथि । दुनु गोठेँ संगे रिदा भेना । बसुतामे अनीनजी मोहनजीकेँ
कनथि-

“यो समितिजी, गहूम जेपस ले भेन । हम सब दु मामक गहूम रँचि जेतौ । अछूँक हिस्सा बखन
अछि ।”

मोहनजी कहनथि-

“हमरा हिस्सा-तिससा ले चली । हमर कोन हिस्सा ? गहूम रँचि जेनिँ तँ कपेखा तँ हेरें कवत ।
ओग कपेखाक हेष गहूम कीनि रिन्याथी सभमे राँष्टि दियो ।”

अनीनजी कहनथि-

“आरँ से ले छत । शोभाबाँरुँ आ बँजलजी से ले कवत ।”

मोहनजी कहनथि-

“तँ ठीक छे । हम लोखाँकेँ सब राँत कहरें जे दु मामक गहूम अयसक, सचिब आ प्रबन्धाध्यापिका
मिनि क२ रँचि जेनक ।”

अनीनजी कहनकनि-

“ठीक छे अहाँ जाँड, हम टोक होगत भेन अरें छी ।”

मोहनजी रँठि गेन ।

अनीनजी घुमि क२ शोभा जीक दवरँजजापव एन । बँजलजी आ शोभाजी रैसजे बहथि ।

शोभाजी प्रुठनकनि-

“की मोहना राँत रूमनक आकि ले ।”

“ले रूमनक । कहनक हम लोखाँ सभकेँ कहरें ।”

बँजलजी रँजना-

“ठीक छे । कह्य दिओ । हम सब देख जेरँ ।”

शोभाजी रँजना-

“मोहन पँचायत समितिमे की जितन ओ केकवाते मोजले ल करैए । अगनाकेँ रँडका लेता रूमैए ।
ओ की कोनाते योजनामे गवरँड ले करैए ।”

अनीनजी कहनथि-

“जौँ लोखाँकेँ गहूम रँचरँ पता नगि जाएत तँ रूमू जे आगि नगि जाएत । केकव-केकव अँह रँम
कवरँ । लोक अगना सभकेँ की-की कहत से ले जानि । समाजमे रँडका रँदनामी छत ।”

शोभाजी प्रुठनथि-

“अहाँक की रिदाव अछि ?”



अनीनजी कहनथि-
“हम तँ कहँ जे गहूम कीनि क२ रँठैरा दियो ।”

शोभाजी आ बज्ज एरु सग रात कठैत रँजना-
“ले से तँ ले हत । आथिब हमरो सरँहक किछ गच्छत अछि । जे था गेलिध से था गेलिध । जौ
गहूम कीनि क२ रँठैर तँ मोहना कहत, खेनहा गहूम रोकवा देलिध । अहाँ रोकवा डवाग छिध । यौ
मोहन अमगले अछि । अगला सत तीण गोठै छी ।”

अनीन जीक झूसँ निकनननि-
“अथनि ले अमगले अछि आ अथनि गौआँकेँ कहत तँ भरि गामे ले भ२ जाएत ।”

शोभाजी रँजना-
“हएत तँ हएत । की क२ जेत । सएह ले हएत जे किछ ठाका रीगओ सहिरँकेँ देरँए पडत । हम
सत रूमि जेर । अहाँ टिन्ता जूमि कक ।”

अथनि गौआँकेँ पता नगन तँ सद्धा गामे आगि नगि गेन । टोक-टोवाहसँ न२ क२ दना
सतपव सेहो मात्र अनी गपक चर्चा हूअए नगन । गौआँ सत आरेदन निथि सत गोठै सली छाप करै
गेन । अथिना दिा रँजोक जा एकठा आरेदन अद्धाअजीकेँ आ एकठा रीडीओ सहिरँकेँ देनक । आरेदन
देथि रीडीओ सहिरँक रिटाव भेननि जे थानामे एफ.आ.ग.आ.व. दर्ज करौन जाए । दूदा अद्धाअजी
बोकैत कहनथि-
“दु दिन थाम्छ । जौ सकुनक हेड माम्ठव गहूम राँटि देत तँ ठीक ले तँ सहए कवर ।”

अथनि शोभा जीकेँ पता नगन जे रीडीओ सहिरँ एफ.आ.ग.आ.व. करौन तैयाव भ२ गेन अछि
तँ माथ चकवाए नगननि । सोचए नगना, गहूमक पाग तँ सटिरो आ अथिना खेनक । दूदा हँसत तँ
हेड माम्ठव । जौ ओ सत हँसरो कवत तँ की हएत । हमर पनीकेँ तँ लाकवीए चनि जाएत ।

अनीनजी आ बज्ज जीकेँ रँजा कहनथि-
“रात रँठा गेन । एफ.आ.ग.आ.व. होगरना अछि ।”

अनीनजी कहनथि-
“हम तँ पहिल कहल बही जे मोहनक रात मागि लिओ ।”

शोभाजी रिच्छेमे रात कठैत रँजना-
“पछिना रातकेँ छोड़ू आरि की कवए पडत से कक । जगसँ जाण रँटत ।”

बज्जजी रँजथि-
“जिना परिवदक सदस्या लोकेशजी हमरा दोसक साव छी । हुनका रँजोकपव पकड छन्हि । हुनकासँ गप
क२ मागिनाक बहाना-दहाना कवरँक आग्रह कवरँनि । हम आ अनीनजी अथल जाग छी ।”

सएह केनक अनीनजी, बज्जजी दूनु गोठै जिना परिवदक सदस्या लोकेश जीसँ उँठै क२ सत रात
कहनथि । लोकेश जीकेँ पहिलसँ सत रात रूमन छेननि । कहनथि-
“अहाँ सत रँड जूबुम केजौ । बिया-पुताक गहूम रँटि जेजौ । एसँ पौघ आबो कोला गनती होग
छै ?”

बज्जजी कहनथि-
“आरि तँ जे भ२ गेन से भ२ गेन । अ मागिना आगु ले रँटत से जोगाव क२ दिओ ।”

लोकेशजी-
“रात तँ रँड आगु रँठा गेन अछि । ओना हम अद्धाअ सहिरँ, मोहन आ रीडीओ सहिरँसँ गप करै छी ।
अहाँ सत ककु ।”

लोकेशजी अद्धाअ जीक कछमे गेना । ओते मोहनाजी रँसन बहथि । लोकेशजी अद्धाअ सहिरँकेँ
कहनथि-
“हम तँ पहिल कहल बही जे मोहनक रात मागि लिओ ।”

शोभाजी रिच्छेमे रात कठैत रँजना-
“पछिना रातकेँ छोड़ू आरि की कवए पडत से कक । जगसँ जाण रँटत ।”

बज्जजी रँजथि-
“जिना परिवदक सदस्या लोकेशजी हमरा दोसक साव छी । हुनका रँजोकपव पकड छन्हि । हुनकासँ गप
क२ मागिनाक बहाना-दहाना कवरँक आग्रह कवरँनि । हम आ अनीनजी अथल जाग छी ।”

सएह केनक अनीनजी, बज्जजी दूनु गोठै जिना परिवदक सदस्या लोकेश जीसँ उँठै क२ सत रात
कहनथि । लोकेश जीकेँ पहिलसँ सत रात रूमन छेननि । कहनथि-
“अहाँ सत रँड जूबुम केजौ । बिया-पुताक गहूम रँटि जेजौ । एसँ पौघ आबो कोला गनती होग
छै ?”

बज्जजी कहनथि-
“आरि तँ जे भ२ गेन से भ२ गेन । अ मागिना आगु ले रँटत से जोगाव क२ दिओ ।”

लोकेशजी-
“रात तँ रँड आगु रँठा गेन अछि । ओना हम अद्धाअ सहिरँ, मोहन आ रीडीओ सहिरँसँ गप करै छी ।
अहाँ सत ककु ।”

लोकेशजी अद्धाअ जीक कछमे गेना । ओते मोहनाजी रँसन बहथि । लोकेशजी अद्धाअ सहिरँकेँ
कहनथि-
“हम तँ पहिल कहल बही जे मोहनक रात मागि लिओ ।”

शोभाजी रिच्छेमे रात कठैत रँजना-
“पछिना रातकेँ छोड़ू आरि की कवए पडत से कक । जगसँ जाण रँटत ।”

बज्जजी रँजथि-
“जिना परिवदक सदस्या लोकेशजी हमरा दोसक साव छी । हुनका रँजोकपव पकड छन्हि । हुनकासँ गप
क२ मागिनाक बहाना-दहाना कवरँक आग्रह कवरँनि । हम आ अनीनजी अथल जाग छी ।”

सएह केनक अनीनजी, बज्जजी दूनु गोठै जिना परिवदक सदस्या लोकेश जीसँ उँठै क२ सत रात
कहनथि । लोकेश जीकेँ पहिलसँ सत रात रूमन छेननि । कहनथि-
“अहाँ सत रँड जूबुम केजौ । बिया-पुताक गहूम रँटि जेजौ । एसँ पौघ आबो कोला गनती होग
छै ?”

बज्जजी कहनथि-
“आरि तँ जे भ२ गेन से भ२ गेन । अ मागिना आगु ले रँटत से जोगाव क२ दिओ ।”

लोकेशजी-
“रात तँ रँड आगु रँठा गेन अछि । ओना हम अद्धाअ सहिरँ, मोहन आ रीडीओ सहिरँसँ गप करै छी ।
अहाँ सत ककु ।”

लोकेशजी अद्धाअ जीक कछमे गेना । ओते मोहनाजी रँसन बहथि । लोकेशजी अद्धाअ सहिरँकेँ
कहनथि-
“हम तँ पहिल कहल बही जे मोहनक रात मागि लिओ ।”

शोभाजी रिच्छेमे रात कठैत रँजना-
“पछिना रातकेँ छोड़ू आरि की कवए पडत से कक । जगसँ जाण रँटत ।”

बज्जजी रँजथि-
“जिना परिवदक सदस्या लोकेशजी हमरा दोसक साव छी । हुनका रँजोकपव पकड छन्हि । हुनकासँ गप
क२ मागिनाक बहाना-दहाना कवरँक आग्रह कवरँनि । हम आ अनीनजी अथल जाग छी ।”

सएह केनक अनीनजी, बज्जजी दूनु गोठै जिना परिवदक सदस्या लोकेश जीसँ उँठै क२ सत रात
कहनथि । लोकेश जीकेँ पहिलसँ सत रात रूमन छेननि । कहनथि-
“अहाँ सत रँड जूबुम केजौ । बिया-पुताक गहूम रँटि जेजौ । एसँ पौघ आबो कोला गनती होग
छै ?”

बज्जजी कहनथि-
“आरि तँ जे भ२ गेन से भ२ गेन । अ मागिना आगु ले रँटत से जोगाव क२ दिओ ।”

लोकेशजी-
“रात तँ रँड आगु रँठा गेन अछि । ओना हम अद्धाअ सहिरँ, मोहन आ रीडीओ सहिरँसँ गप करै छी ।
अहाँ सत ककु ।”

लोकेशजी अद्धाअ जीक कछमे गेना । ओते मोहनाजी रँसन बहथि । लोकेशजी अद्धाअ सहिरँकेँ
कहनथि-
“हम तँ पहिल कहल बही जे मोहनक रात मागि लिओ ।”

शोभाजी रिच्छेमे रात कठैत रँजना-
“पछिना रातकेँ छोड़ू आरि की कवए पडत से कक । जगसँ जाण रँटत ।”

बज्जजी रँजथि-
“जिना परिवदक सदस्या लोकेशजी हमरा दोसक साव छी । हुनका रँजोकपव पकड छन्हि । हुनकासँ गप
क२ मागिनाक बहाना-दहाना कवरँक आग्रह कवरँनि । हम आ अनीनजी अथल जाग छी ।”

सएह केनक अनीनजी, बज्जजी दूनु गोठै जिना परिवदक सदस्या लोकेश जीसँ उँठै क२ सत रात
कहनथि । लोकेश जीकेँ पहिलसँ सत रात रूमन छेननि । कहनथि-
“अहाँ सत रँड जूबुम केजौ । बिया-पुताक गहूम रँटि जेजौ । एसँ पौघ आबो कोला गनती होग
छै ?”



“सब, प्राथमिक बिद्यालय चलोवारना माहिनाके आगु ले रैद्य दिउ । अहाँ जे कहलै सएह हएत ।
मोहनो जीक प्रतिष्ठा बहि जेतनि ।”

प्रह्लादजी कहलथि-

“ठीक छै, मोहनजी सँ गप कर ।”

लोकेशजी मोहनकेँ प्रह्लादथि-

“की यौ मोहनजी, अहाँक की रिटाव ?”

मोहनजी कहलथि-

“यौ पार्यदजी, बिया-पुताक पोषाणव ज्ञ सभ रैटि जेनक । गहूम रैटनासँ जे कपेखा भेन से तँ
हेरै कबत । ओरी कपेखाक गहूम कीनि रैटि देखुन, हमरा तबहसँ सभ गप खतम ।”

प्रह्लादजी कहलथि-

“मोहनजी ठीके कहि छथि । अहाँ सकुनपव जा गहूम रैटि दियो । हम अगिना कोना कारिवाग ले
हूअ देलै ।”

लोकेशजी-

“जी सब, हम मोहनजीक रिटावसँ सहमत छी । हम सभ पंचायत प्रतिनिधि छी । मोहनजीक प्रतिष्ठा
हमरो प्रतिष्ठा छी ।”

अगिना दिन आठ रैजे भिसबमे चलोवा सकुनपव सद्गुटा पौआँक रैसाव भेन । शिक्षा
समितीक सदस्य, अध्यापक, सचिव आ समितीक सदस्य मोहनजी तथा जिना पार्यद लोकेशजी सेहो
छना । रैसावक अध्यापकता लोकेशजी केननि । रैड घमर्थन भेन । अतमे अध्यापक निरर्पण देनथि-
“टावि माममे दु मासक गहूम छान सभकेँ पहिले भेठन अछि । रैकियोता दु मासक गहूम सात दिनक
भीतव प्रधाणाध्यापिका बिद्यार्थी सरहक रीट रैत ।”

प्रधाणाध्यापिका बिता देरी ठाठ भ२ रैजनी-

“जे भ२ गेन ओकवा अहाँ सभ रिसवि जाड । अगिना बरि दिन हम रैकियोता दु मासक गहूम सभ
बिद्यार्थीक रीट रैत ।”

f



सभसँ पेश पुज्जा

लेनलेमे भेकेल्मी निकनन छन । मुन आरेदल पत्रक संगे सभ प्रमाण पत्रकेँ बाजुपत्रित पदाधिकारी दुआवा अतिप्रमाणीत छया प्रति मनग्या कवनाग अतिरार्ग छन । लेँ तँ आरेदल बढ भ२ जाएत । हमरा देवीसँ पता नागन । एक सप्तताहक समय अरामीय एरी ज्ञाति प्रमाण पत्र रँनलेमे नगि गेल ।

आग आरेदलक अतिम दिन छन । ह्दा हमर प्रमाणक छया प्रति अतिप्रमाणीत लेँ भेल छन । हम रँड टिन्तित छेलौं । तिनमरे आठ रँजे घोघवडीह रिदा भेलौं मोचलौं, ओतए तँ केतेको बाजुपत्रित पदाधिकारी सभ छथि, किनकोसँ कवा जेर । आ घोघवडीहे डाकघरसँ सगीड पोस्ट क२ देरै । ओहीठाम एकठाँ डाकठेब छथि नाँउ छियनि डाकठेब ओम नावाग कर्प । सभ गोठे हूणका डाकठेब नावाग राँबु कहे छथि । हूणकासँ नीक परिचए अछि । केतेको रोगी सभकेँ हूणकासँ गनाज करौल छी । जगसँ डाकठेब सहिरकेँ नीक आमदनी भेल छथि । लेँ तँ कमातीमे दु हजाव ठाँकासँ रँनी हमरा दुआवा डाकठेब सहिरकेँ आमद भेल हेतनि । हमरा पूरा रिसरास छन जे डाकठेब नावाग राँबु हमर प्रमाण पत्रक छया प्रति अतिप्रमाणीत क२ देता । हम हूणका डेवागव पँहुँचलौं ओ पी.री देखे छेना । हमरा देखेते हूणकव पंगी हूणका कहनकनि-
“बागजी एना हेल ।”

रँवरँवि जे रोगी न२ क२ हूणका डेवागव जागत वही तँए डाकठेब सहिरक पंगीओ हमरा टिन्त छेना । हूणकव कनिमिक डेवागव छथि । डाकठेब सहिर पी.री देखनाग जोडाँ हमरा नग आरि रँजना-
“रँहुत दिनपव एलौं हेल । कोना बागी अछि की ?”

हम कहनिगनि-

“लेँ सब । आग रोगी लेँ अछि । आग तँ हम अगल प्रमाण पत्रक छया प्रति अतिप्रमाणीत कवरँए एलौं । आग आरेदलक अतिम तावीथ छी ।”

डाकठेब सहिर रँजना-

“हमरा नग तँ मोहव अछि लेँ । उँ तँ अस्पतालमे बहे । रिन्त मोहवक केल हएत ।”

हम कहनिगनि-

“सब, अगल अतिप्रमाणीत क२ देन जाउ । हम अस्पताल जा मोहव नगारा जेर ।”

डाकठेब सहिर कहननि-

“अथनि तँ हमरा रँनहियो लेँ भेल अछि । रिन्त रँनहिक काज केल अमुका दिन ह्योके चलि जाएत ।”

हमरा डाकठेब सहिरक एँ रँनहावगव दुख भेल । ह्दा रँजलौं किछ लेँ । ओतएसँ रिदा भ२ सडकपव एलौं । मोचलौं आरि की कवी । केते जाग । मन पडन । प्रथाडक मालायक अतिरार्गे ओ काज क२ सके छथि । हूणकोसँ तँ जान-पहचान अछि । प्रथानात्री सडक जे रँलेत बहए तँ गँजीगियव सहिरकेँ हम चाह-जुनगाण करौल बहियनि । हूणकव मोठेव मागकिन खवाप भ२ गेल बहनि । तँ हमरी गुडका क२ अगला दरँरँगाव न२ गेल वही । एँसँ गँजीगियव सहिर रँड खुशी भेल बहनि । कहल छना कहियो कोना काज हएत तँ हमरा नग आएर । शिर्मा जिक मकानमे डेवा अछि । शिर्मा जिक मकान तँ देखले अछि । कावण पहिल जे दुर्गा राँबु रीडीओ सहिर बहथि हूणको डेवा तँ शिर्मा जिक मकानमे बहनि । एक-आध रँव रीडीओ सहिरक डेवागव गेल छी ।

शिर्मा जिक मकान दिन रिदा भेलौं । गँजीगियव सहिर रँनहमे रँनन बहथि । रँननगव चाह बखन बहनि । अगल पेशव पठेत बहथि । नगमे जा कहनिगनि-

“पवनाम सब ।”

पेशवगवसँ नजवि छेना हमरा दिन देखेत रँजना-

“राँजू कोन काज अछि ।”



हम कहलियन-

“अभिप्रेषणीत करैरौक अछि ।”

उ रँजना-

“अथनि हमरा नग समय ले अछि । देखे ले छिं दाढ़ीओ ले कठैरौ ले । तथनि स्नान-पूजा करब । जनथे क२ तुवन्त मधुरनी जायब । जिनामे एगावह रँजैसँ गिष्टिग अछि । नअ रँजि बहन अछि ।”

हम पुनः निरोदन करैत कहलियनि-

“सब, आरुदनक तँ आग अतिम दिन छिं । रँड प्रगा हएत जे अ काज अगल क२ दैतिं ।”

कहननि-

“रौले न समय नही हे । दुमले जगह चले जाय । अस्पतान हे रँलोक हे मरैशी अस्पतान हे । कही भी अभिप्रेषणीत हो सकता हे ।”

हम निवामे भ२ ओतसँ रिदा भेलौ । हमरा भेन जे आरु हमर आरुदन पत्र बखले बहि जाएत । सोटी, आरु केतए जाय । अही पुनधुमे आगु रँडरौ तँ एकठा मकानक गैठपव निखन आलोक फाव, प्रखण्ड पशुपानन पदाधिकारी, देखनिं । केरौड तीतवसँ रँल बहे । हम केरौड ठकठकेनिं । एकरु मिष्ट पछाति एकठा हरक निकनना । हुनकर गुवा शरीर तीजन बहनि । गमछा पहिबल बहनि । पुढलियनि-

“सागत अगल... ?”

रिदुटेमे हमर रँत नगकि रँजना-

“हँ, हम आलोक फाव । प्रखण्ड पशुपानन पदाधिकारी, घोघवडीहा डी । रँजु ?”

कहनियनि-

“अभिप्रेषणीत करैरौक डन सब । रुदा अथनि अगल स्नानामे नगन डी हएव पूजा करब तेकर रँद ले हमर काज ।”

ओसावपव बाखन टोकीपव रँसले कहनि । हम जा क२ ओपव रँसलौ । ओ अगल तीतव गेना ।

कहननि जे एतए रँसु अरै डी । पाँच-सात मिष्ट पछाति आरु पुढलनि-

“आरु कछु कोन प्रमाण पत्रपव अभिप्रेषणीत करैरौक अछि ।”

हम अगल प्रमाण पत्र सरँहक ढाया प्रति क संग मुन प्रति सेहो हुनका आगुमे ठैरुनपव बधि देनयनि ।

देख-सुनि सब प्रमाण पत्रक ढाया प्रतिपव अभिप्रेषणीत करैत कहनि-

“अहाँ पूजाक रँत करै छेलौ... ?”

हम टुंगेपे बहलौ आरु ओ पुनः रँजना-

“हम जे अगलक काज क२ देलौ हमरा जेन सभसँ पौष पूजा यएह भेन । हम सेरौकेँ पूजा रँसे डी ।”

हम डारुठव सहैरक अ रँत सुनि किडु सोचए नगलौ । तारैए सब कागत पौलिथिन मोवामे न२ लेल बही । हुनक अ रँत हमरा रिदागमे अ तवहँ जगह रँना छेकि लेल डन जे किडु रँजि ले पलैत बही । अतो-अत रिषु किडु रँजल हाथक गशीवासँ प्रणाम करैत ओगठामसँ निकलि डारुघव दिम रिदा भ२ गेलौ ।

f



बेठ

पंचायत चुनारक समग्र बहए । प्रचार-प्रसार पुवा जेव पकड़ल बहए । सब उम्मीदरावक आदमी मागकितपब होबन रान्हि मेकसँ छेजे-छेजे प्रचार करै छन । टोक-टोवाहापब नाँडसपीकबक तेतेक ले अराज होग जे काण देनाग दूसकीन । हम तँ बूँमु टोकपब गेनाग छोडा देल बनी । जखेकि उम्मीदराव सब तबखसँ बेठबकेँ चह-जनखेक अनारेँ दाकओ बेठे छेजे । गणनीये चह-जनखे करैरना सब सरैरसँ टोक पकड़ि नग छन । केते गोठे तँ एहना अछि जे दु-दु तीन-तीन उम्मीदरावक चह-जनखे करै छन । ताड़ ीओ आ पोलिथिला पीरैरना सब अखनि अंग्रेजी दाक पीरैए ।

मबद कि जे जगानीओ सब हँज रान्हि-रान्हि अंगल-अंगल अगना उम्मीदरावक पक्रमे घुमि-घुमि बेठ मंगैए । उम्मीदरावकेँ तँ अखनि बूँमु नील गागर । एकठा उम्मीदराव उठै छन तँ दसब उम्मीदराव आरि दवरँजजापब रैस जाग छन । सबकेँ चह-पाण तँ कवरैए पड़ छन । पनी तँ चह रँगरैत-रँगरैत हिवीमाण छथि । की कवरँ जँ कियो दवरँजजापब एता तँ कम-सँ-कम एक कप टाहोक आग्रह तँ कवरै कवरँनि ।

एक दिनक गप डी । दवरँजजापब रैसन बनी । नगमे सबगटक उम्मीदराव समेनी दस मेहो बहथि । दू गोठे चह पीरैत बनी । तखल हमब हवराहा बरिया आएन आ कहनक-“गिवहत, कनी खैली दियो ।”

हम कहनिँ जे जा पहिल अंगना जा आ गिवहतनीसँ चह मागि पील आरह तखनि तमाहन खगहअ । दसे मिष्ट पढाति दवरँजजापब आएन बरिया । समेनी दस तारैए टनि गेन छना । बरिया देखेये तँ बूँडरकेँ जकाँ नलेए दूदा अछि रँड टंगना । हम ओकवा चुलोटी दैत कहनिँ-“नगारह, हमरँ खैर । अछडा एकठा कहअ जे बेठे केकवा-केकवा देरहक ? उम्मीदराव सब तँ अखनि खुरँ दाक पीयरैत अछि । तौवा कहियो परि नगनह कि ले ?”

बरिया राजन-

“यो गिवहत, अखल तँ समग्र अछि । अ सब जखनि जीत जाएत तखनि खेब केकवासँ गप्पो कवत । तँए जएह हाथ सम्रह साथ । बेठे तँ जेकवा मल हएत तेकरे देर । दूदा खैर-पीखरँ सरहक ।”

हम कहनिँ-

“अ नीक काज ले डी । अगन गमाण अगल रँडरँए पड़ छै । नीक लोककेँ चुनिहअ ।”

बरिया-

“अ की कहे छिँ गिवहत । नीक केकवा कहे छिँ । पछिना रँव गोपान रँवरुकेँ सब मिनि दूखयामे जीतौनिँ । दूदा आग देखियौ गोपानरँवरुकेँ की-सँ-की भन्ने गेना । पहिल तँ एकठा कठलीओ मागकित ले बहनि । आरँ किदनि तँ कहे छै हँ रँनरो गाड़ ी । ओहीपब हवदया चडा-चडा गामसँ हविदया रँनले बहैए । मकाला गाममे ले दविठगामे जा क२ रँनलथि लेन ।”

हम कहनिँ-

“ले अहिला होग छै । सब कियो कमागए । देखे ले डहक एमेजे-एमपीकेँ पाँटे मानमे करोड़पति-अवरँपति भन्ने जागत अछि ।”

बरिया राजन-

“होगते हएत । जखनि दूखिया सब एते कमागए जेकवा एका पाग दवगान ले छै आ ओकवा सबकेँ तँ दवगाने आ सुले छिँ जवकीला भन्ना बेठे छै ।”

हम कहनिँ-

“अछडा, छोडह अ गप-सप अ कहअ जे राडपटमे केकवा बेठे देरहक । ओगमे तँ तौहब दियोदे बूँधन ठाँड छन । आन उम्मीदरावसँ आदमीओ ठीक अछि ।”



हमर रात कठैत रिच्छेमे बरिसा रोजन-

“की कहलिषं गिबहत, बीक आदमी । यो उँ तँ गामे सभसँ गिबहकठ आदमी अछि ।”

पुडलिषं-

“से केना ?”

कहनक-

“पककाँ सान हमर रिकरी ओकर दसठौ कोरीक गाछ खा लेल बहए । तगले ओकर योगी हमरा रिथनि-
रिथनि गारि देल बहए । हमरो ओकर गारिक रौड छोड़ नगन अछि । हम अगुण भेँष्ट ओकरा किन्नहू
ले देबै ।”

f



सोअरी उडुवरै

मिथिलाजनमे एकठा रैजाव अछि सन्सारपुव जे अक्षयपूजन सेहो छी । सन्सारपुवमे एकठा मङ्गल किमान छना । नाँउ बहनि छुँछुँ । हुनका तीनटा रैठी आ दूटा रैठी । तीनु रैठीक रीखाह भ२ गेन छन्हि आ दूनु रैठीक रीखाह भ२ गेन छन्हि । ओना दूवागमल पढाओतो दूनु रैठी रैनी कान बहिलेमे बँह छन्हि । दूटा रैठी पँचायत शिक्षक आ एकटा रैठी बोजगाव मेरक छथि । जेठका जमाए पँचायत सट्टि छथि । पहिल तँ ओ दनपति छना । सबकाव दनपति सभकेँ पँचायत मेरक रैना देनकनि तहीमे ओ पँचायत मेरक भ२ गेना । एम्हव पँचायत मेरककेँ सबकाव पँचायत सट्टि रैना देनक । रूँनु जे ओ सभ तँ आरँ पँचायतक हाकिम भ२ गेना । हुनका सभकेँ नीक आमदनी छन्हि । किएक तँ हुनका सभकेँ गदिवा अराम आ आला-आल योजना सभमे कर्मिण भेटै छन्हि । जन्मा आ मृत्यु प्रमाण पत्र रैनरैमे सेहो कपेखा नग छथि ।

छुँछुँन जौक जेठका जमाएकेँ सान्खवेमे नीक मनदान होग छन्हि । किएक ले हेतनि । सान्खव जखनि अरै छथि तँ खबट-रबटपव तुनन बँह छथि । सान्ख-सबहोजि लेन फुँठी-फुँठी मिठांग, कपड । आ मिया-पुता लेन सेहो कपड ।-नताक रंग रिसफट, मिठांग, टकलेठ गत्यादि अलग-अलग । छुँछुँन जौक जेठका जमाए बालेमे जौकेँ पढाये चल्सगव बहिले अखनि धरि कोला लोकरवी ले भेटेन बहनि । ओ मैथ्रिकस न२ क२ एम.ए. धरि प्रथम श्रेणीसँ पास करैत बहना । साने भरि पहिल हुनकव कनियाँ दूवागमल भ२ सान्खव आएन बहनि । रूदा कनियाँकेँ रैनी सम्र बहिलेमे बहए दग छथि । लोकरवी ले भेल बालेमेजौ दबडंगक एकटा मिजि रिद्यालयमे कार्यरत छथि । रूदा तैयो सबकावी लोकरवी लेन अखला प्रतियोगिता परीक्षा सभमे रैसत बँह छथि ।

छुँछुँन जौकेँ एकठा रैलि ओहो मसोमाते । हुनका दूटा रैठी आ दूटा रैठी छन्हि । दूनु रैठी दिवनीमे लोकरवी करै छथि । जेठकी रैठी बीना मामा-मामी नग बहि पढाए । जेठकी रैठी बीना मांग रंग बँहए ।

छुँछुँन जौक जेठकी रैठी मानतीकेँ कन्याणक जागेता बहनि । जन्माशौचक सम्र नगिटाएन बहनि । ओकर बोजांग सभ सोटाए, मनतीकेँ जँ भगराण रैठी द२ दगतथि तँ हमरा सभकेँ पहुणसँ सोअरी उडुवना पढाति नीक आमदनी होगतए । ओना तँ पहिल रैव छिँ रैठीओ भेल तँ नीक आमदनी हेरै कवत । जेठकी बोजांग सोटेत, हम जेठ बोजांग छी तँ सोअरी हम उडुवरँ आ पहुणसँ नीक गहना जेरँ । जेठकी सोटेत, हम तँ सभसँ जेठ छी तँ सोअरी हम नीपरँ । पाहुन नीक कमांग छथि । नीक दास-दडिना भेटैरै कवत । ममिनी बोजांग सोटेत, हमनी मानती रूँट्टीक रैनी थिगान बथेत एरौ । पाहुला अरै छथि तँ ननदि-ननदोसिकेँ सुतेले हमनी अणन घब जोडा दग छी आ अणन ओसाविगव सान्ख नग सुते छी । लोखाक रारूँजी दनाषगव जा सुते छथि । तँ मानती हमले सोअरी उडुवले कहत । जौ दोसव कियो उडुवत तँ कहियो अणन घब सुतेले ले देरँनि ।

मानतीकेँ जन्माशौच भेल । रैठी भेलनि । ममिनी बोजांग मानतीक दूसाकेँ मोरौगनसँ खरँनि देनकनि । छुँछुँनसँ दू दिन पहिल मानतीक दूसा गिलादजी एना ।

आंग भिनसले गिलादजी दू हजार ठीका जेठका सावक हाथमे द२ नीकसँ बोज-भातक ओरिगान करैले कहनकनि । जनथे खा जेठका सावकेँ रंग रैजाव गेना । रैजावसँ मानती रंग रैठी, तीनु सबहोजि आ सान्ख लेन कपड । कीनि क२ न२ अणना । आंग छुँछुँन छी । भिनसलेसँ बोजांग सभ अणना-घब नीपरँ शुक लेननि । आरँ टटा भेल सोअरी ले उडुवत । जेठकी बोजांग रैजनी-
“सभसँ जेठ हम छी । पहिल अणिकाव हमर अछि । मानतीक पहिल रूँट्टा छिँ तँ सोअरी हम उडुवरँ ? ”

जेठकी रैजनी-

“सभसँ जेठ हम छी । तँ सोअरी हम उडुवरँ । ”



तेपव जेठकी भोजाग हबकि क२ रँजनी-

“अहाँ सभसँ छोट छी तँ छोटकी नमदि नमिताक सोगरी उडावरी । ओकरो पएव तँ भावी अछि । पाँचे मास पछाति तँ रँट्टा जन्मत ।”

छोटकी भोजाग रिचटेमे छपनक-

“अही नमिता रँट्टीक सोगरी उडावरी ।”

ममिनी भोजाग सभ गप सुनै छेली । हुनको बहन ली गोनमि रँजनी-

“जखनि पहुँचा अरौं छथि । तँ हुँका सभकेँ सुतेले हम अपन घब दग छियनि । आ अखनि सोगरी उडावने घघोज भ२ बहन अछि ।”

तेपव जेठकी रँजनी-

“अहाँ सुतेले अपन घब दग छियनि ल तँ अही सोगरी उडाक । अही दास-दडिना निअ ग२ ।”

तेपव छोटकी रँजनी-

“हम जे मानती रँट्टीक कपड । थिटे छी आ पहुँकाकेँ नीक-निकत खेनाग रँगा खुआरौं छी । तेकब कोला मानि ली ?”

मानती माए सभ गप सुनै छेलथि । ओ सोगरी घबक मोख नग जा रँटीकेँ कहथि-

“सोगरी उडावने तीनु दियादलीक रीच घघोज भ२ बहन अछि । केकवा कहरीलिन ?”

मानती असमजसमे पाछि गेली । सोचए नगनी, तीनु भोजाग अछि । एक गोठेकेँ कहरी तँ दु गोठे कमत । रूदा उडावत तँ कियो एक गोठे । रँटीकेँ दुप देखि माए जेरो रँजनी-

“रँज ल, केकवासँ उडावरेलिन ?”

मानती माएकेँ पछनथि-

“तोहव की रिचाव छौ ?”

माएकेँ छोटकी पतोहू रँसी माले छथि । बागते-बाति जँतरो करे छथि । अ सभ मल पाडनमि । माए रँजनी-

“छोटकीकेँ कहनि सोगरी उडावने ।”

तेपव मानती रँजनी-

“ममिनी भोजी हमरा सभसँ रँसी माले । जखनि सेरकजी अरौं छथि तँ अपन घब हमरा सभ जेन जोडि अपन दुनु पवानी अगतए सुते छथि ।”

माए कहथि-

“तोवा जेकवासँ मल हाडे तेकवासँ सोगरी नीपा । हमरा जेन तँ तीनु पतोहू एक वंग ।”

मानती अपना दुहा सेरक जीसँ सेहो रिचाव जेरँ जकवी रँमनमि । हुँहो ममिनीए सबहोजिसँ निपरैले कहथि ।

ममिनी भोजाग सोगरी उडावनेक । तगले छोटकी आ जेठकी भोजागकेँ रँड दुख भेनमि । रूदा दुनुमे सँ कियो किछ रँजनी ली ।

पाँचे मास पछाति रँट्टीक जिक छोटकी रँटी नमिताकेँ रँटी जन्मत । आग उठिहब छी । हुँकब दुहा ली एनथि आ ल कियो आले साम्बसँ एनमि । नमिताक माए तीनु पतोहूसँ रँवा-रँवी पछनथि जे सोगरी के नीपर । जेठकी पतोहू कहनकमि-

“मानती रँट्टीकेँ रँटी जेन तँ ममिनी सोगरी निपनक । दास-दडिना जेनक । नमिताक दुहा तँ पागरीना ली छथि । ओकरो सोगरी ममिनीए किअए ल उडावत ।”

ममिनी पतोहूकेँ कहन गेन तँ ओ रँजनी-

“हम तँ मानती रँट्टीक सोगरी उडावनेहियेँ बनी । आरँ छोटकी ली तँ जेठकी उडावती । हुँके सरँहक पाव छियनि ।”



अथनि छोटकी प्रतोहूमँ कहन गेन तँ थोमागत जरारँ देनथिन-

“हम किएक डुडारौ। जेरठका पाहुन अरौं छथिन तँ नीक-निफत रँगा-रँगा हम खुअरियनि, कपड ।-नता हम थीटौ आ आमादनी रँव आएन तँ माए गरी निगनक ममिनी । ओकरे कहथुन रएह नीगत ।”

तीनु दियादनी एरू रौत सोछए । छोटकी पाहुन तँ पागरँना छथिन ल । कहूना क२ दविर्भगामे खाणगी मकुनमे पठ । सबकारी लाकरी जेन प्रयास क२ बहन छथिन । अहिया-कहियो मासुर अरौं छथिन तँ दु-टावि डिर्रौ साधारणी रिमकुठ न२ क२ । मिठाग तँ कहियो नाँउ जेन ले अणल हेता । मासुर आ हमवा सभकेँ के देत कपड । नमिती रूँटीकेँ तँ आहमे बहे छथि । तेनो-मारुन जे ननो-डुडौ । माए गरी जे डुडारँ मे कोला गहना-जेरँव देत ।

नमिताक माए हेब ममिनी प्रतोहू नग जा क२ कहनथिन-

“जेरठकी आ छोटकी दुनु गोरे अही नाँउ कहए । मानतीक दुहा पागरँना अछि तँए ओकर मोगरी अहाँ नीपनिधँ आ नमिताक के नीगत ? मानती दुहाँ गहना-जेरँव अहाँ जेनिधँ तगजे ओहो दुनु दियादनीकेँ पडतारौ होग छे जे हम डुडारितौ तँ हमवा होगतए । नमिताक तँ सहजे सभ रूँते छे जे ओ किछ दगरँना ले अछि । उँ दुनु दियादनी तँ खुनि क२ कहि देनक जे जाथुन ओकरे कहिथिन ।”

ममिनी कहनकनि-

“मे जे अ कहे छथिन, मेरकजी हमवा गहना देनथिन मे अ देखल बहथिन ? गहना दगत तँ पहिबतौ आकि ब्रका क२ बखल बहितौ । अथनि हमर मोला भारी नछे । मरौ दुखागए । तितले-तीतव रौंखाव बहे । मदी-कफ भ२ गेन अछि । सुले ले छथिन उँकामीओ होगत बहे । माए गरी डुडारल तँ नहाए पडत अगसँ आबो रँसी मोण खवाप भ२ जाएत । तथनि हमवा मिया-प्रताकेँ के कवत । हम ले डुडारँनि ।”

मासुर कहनथिन-

“जेरठका पाहुन जौं गहना ले देल हेता तँ कपेआ-पौसा तँ देलैथि हेता । कोला कि हमवा सभकेँ देखा-सुना क२ देननि । किछ ले देल हेता मे ले मानरँ । हम सभ गप रूँते छी । अहाँ सभ मोटे छि जे नमिताक दुहा तँ मोगरी नीपाग किछ देत ले तँए अहाँ सभ एना डिवहारा खेनाग छी । अहाँ सभजे कि नमिता मोगरीएमे रँसम बहत आकि निकनरौ कवत । अहाँ सभ ले नीपे अएरँ तँ हम अगलसँ नीपि देरौ । हमर तँ रँषी छी हम थोडू छोडि देरौ । जाँ अहाँ सभ सुतु ग२ ।”

अ कहि माए नमिता नग गेली । माएकेँ देखिते नमिता प्रुडनकनि-

“के निगतौ ?”

“कियो ले तैयाव होग छौ । तोहव दुहा कोला पागरँना छथुन जे मोगरी नीपाग गहना-जेरँव देरँनि । रूँमहे ले डीनी डुडारकेँ के प्रुडौ । हम अगलसँ नीपरँ । तूँ चिन्ता ले कव ।”

नमिता रँजनी-

“माए, तोहव नीपणाग नीक हेतौ । तीन-तीनठाँ भोजाग बहितौ माए मोगरी निगनकेँ । लोक की कहत ?”

“एकठाँ काज कव । दीदीक रँषी वीणा अछि ल ओकरे कहनि रएह नीप देत । जौं भगराण हमरो दि नीक केनक तँ वीणाकेँ कोला गहना द२ देरँ । अथनि तँ हमले दि भारी अछि जे लेहव ओगवला छी ।”

माए रँषीकेँ सतोय देत कहनथिन-

“अछुटा चिन्ता जूनि कव । भगराण अकव दुख रूँमथुन । हँ लो हँसले घब रँस छे ।”



बीणा नललतलक सोंगरी नीगलक । तोंज-तलतक कोलल अरलवलण ले वलह । तगलणक वलवसे देव दे अणुधेव ले दे । नललतलक दुलल वलकसे जरीके केणवल रोकसे ललकरी तेलनल । अर त डुहो गलगरीनल ललक तं गेनल । सलसुवलसे हलकल मलण-दलण ररुतल गेनल ।

गहनकल ररुतलक जलणक तीण ररुथ गढलतल नललतलके देसव ररुतल तेल । एमकी ररेठी वलह । ररेठी वललतु तीणु तोंजलग सोंगरी दुढलवलणे डुगलरुोज करे देनखल । जेरुकी तोंजलग सोंटेत, सोंगरी हम दुढलवर । ममलनी त जेरुकी नलदल मलनतीक सोंगरी दुढलवल दलण-दललणल गलरुल लेल अलल । दुुठकी तोंजलग सोंटेत नललतल हमव दुुठकी नलदल दुी अ हम ओकव दुुठकी तोंजलग तं हमव दुुढलवर डुतल । ममलनी तोंजलग कलदु अर सोंटेत, हलकव सोंट ग जे जेरुकी अ दुुठकीसे सोंगरी दुढलवलणे वकल-ठेकी हेरे कवत, कलदु त ओकवल दुु गोंठेसे तेलल-तेलनीक कलवल अलल । जखल दुु गोंठेसे रलत-रलतलरुनल हएत त कहर । से ले त अल दुु गोंठे अमखल वदु हम दुुढलवर । दुुठकी गलहल त रोकसे हलकल तं गेनल । जेरुका गलहनस रेलनी दलण-दललणल देरे कवतल ।

अग दुुठलवल दुी । वलकसेजी अणल त ले एनल हलदल हलकव गलतलजी एनखल । जेरुका सलवक नलडुए गलट हजलव ठलकल गठल देल दुखल । नीकस तोंज-तलत करेने कलल दुखल अ नललतल जलणनली ररेठी, ररेठी, सलसु अ तीणु सवलणेजल लेन कगड । सेहो कलनल कं दगले कलल वलखल । मलए नललतलसु गढनखल-

“सोंगरी दुढलवलणे केकवल कहरुलण । ए रेव त तीणु तोंजलग हल रेल ले ।”

नललतलके गढलनल सत गग मल वलखल । कलनखल-

“सोंगरी बीणल दुढलवत । ओकव गढलनो दलण-दललणल रलकल दे । दुु सोंगरीक दलण-दललणल अली रेव देरे ।”

मलए कलनखल-

“ररुड नीक ललदलव । तगलण तोंवल सतके नीक कवखु ।”

f



बनदि-बोजाग

लोकली रँजाकर्म उँतव-पुँरक कोणमे एकठी गाम छै पातो । ल रँड पौघ आ ल रँड छेठ । पातो मपूतरी जिनाक लपान अरिवाजायमे पडए । भावत आ लपानक सीमाँ नगपग तीन किलो मिठव उँतव । पातो गामक पछिमा एकठी मडक अछि जे हस्तपुव टोकर्म लपानक ह्णक मडक बाजमात्रामे कठौषा नग गिलेत अछि ।

पातो गाममे एकठी रँड पौघ समाजरादी लोक भेन छना । ह्णकव नाँ हवा नान छेननि । ह्णका मभ गोष्टे लताजी कहि आदव करै छेननि । उषा ओ बाजनीति सेहो करै छना । ह्णका दूठी रैठी आ दूठी रैठी बहनि । जेठका रैठीक नाँ अमित आ छेठकाक नाँ सुमीत । जेठकी रैठीक नाँ नानति आ छेठकीक नाँ आवती बहनि । मभर्म जेठ रैठीए छेनी जे मसुवराम छेनी । उषमँ छेठ दूनु रैठी आ मभर्म छेठ आवती । अमितक रिखाह भँ गेन बहनि । ह्णको कनियाँ रँम छेनी । एकठी रैठी आ दूठी रैठी छेननि । जेठ रैठीए बहनि कबीर दम रँथक । आवती भतिजा-भतिजीकेँ रँड माले छेनी । पठने जागत तँ टोकपव मँ रँमफूठ-चकलेठ लल अरैत आ भतिजा-भतिजीकेँ दैत । अमित उषमँ पाम क२ गामेक मकुनमे शिक्षक छना जखेकि सुमीत बोजानमे गजनीमरिगक पठ ग पठि बहन छना ।

हवा नान समाजरादी रिटाव धावाक रँकती छना से तँ पहिनिओ कहल छी । ह्णकव कहँ छेननि जे रैठी आ रैठी रँवरँरि । से ले तँ दूनुकेँ रँवरँरि अरिकाव भेठक टाली । ह्णका रैठी मरँहक रिटाव उषमँ भिन्न, खाम क२ अमितक । ह्णकव कहँ जे रैठीक रिखाह भेना पछाति लेहवमे किछु ले । ओ मेहमाष जकाँ लेहव आरँए आ दम-रँम लि बहि आपम मासुव चलि जाथि । लेहवाक कोला रँत-रँरहावमे कोला तवहेँ ह्णकमेग ले कबथि । छेठ भाए सुमीत सेहो लेहवाक रँतकेँ मर्याण करैत । ह्णका अथनि ओ पठ ग क२ बहन अछि । तँ घब-परिवाकर्म रँमी मरँकाव ले बथेत । ह्णका मरँपव कपेआ भेठ जाहि मात्र एतरेमँ मतनरँ । अमितक पने अमीतोमँ एक डेग आगु ह्णका बनि मभ कलको ले मोहाग छेननि । जखनि जेठकी बनि नानति लेहवा अरै छेनी तँ अमितक पने सिवहारानी कणकण कवए नछे छेनी । माव-मवहोजिक रँरहावमँ नानतिक दूका मासुव एषाग-गेषाग छेठि देल छेना । हवा नानक छेठकी रैठी नमामे पठ छेनी । आवती अपन पठ ग करैत बोजागक भाषम-भातमे सेहो मदति करै छेनी । भतिजा-भतिजीकेँ म्हाण करौषाग कपड । पहिनीषाग, तेन-हव देषाग ग मभ काज आवतीए करै छेनी । ह्णका बोजाग जेन धनि मभ ।

आवती आ सिवहारानीक रँट जखनि-तखनि बका-रैकी भँ जाग छन । आवतीक माए रैठीक पफ नग छेनी । जखेकि अमित पनेक पफ नग छन । आवतीक माए पति हवा नानमँ शिकागत केनी-

“सिवहारानी आवतीकेँ देखए ले चहए । जखनि-तखनि ओकवामँ कना-सुनी क२ जेत अछि ।”

हवा नान रैठीकेँ रँजा कहनथि-

“कनियारैकेँ मममा दियो जे आवतीकेँ तंग ले कवए । ओकवा किछु कहए ले ।”

तेपव अमित रँजम-

“मभ दोथ आवतीक अछि । ओ ए मपूतिकेँ अपन रँनेए । बोजागकेँ कोला मोजले ल दैत अछि । अहाँ आवतीकेँ रँमा दियो जे ओ एँगाम किछु दिक मेहमाष मात्र छी । बोजागमँ हँ ले नगरँए ।”

अमितक रँतमँ हवानानकेँ रँड कयठेँ भेननि ह्णका ओ रँजना किछु ले । लिकामे एकठी गूण छहि जे ओ अपन रँतमँ किलको मँतुयठेँ क२ दग छथि । ह्णका कमजोबी ग जे ह्णकव दूनु रैठी ह्णकमँ मरँष्टुएँ ले होगत बहनि ।



सोम दिनक घटना छी । अघित सुकनक कातमे चाहक दोकाषणव रैस चाह पीर बहन छन ।

तखन ओकव रैषी गुर्दा या आएन आ कहनक-

“पापा, मनी कलैए ।”

अघित पुढनक-

“किअए ?”

गुर्दा या राजन-

“आवती दीदी मावनके लेन ।”

अ रात सुनि अघितके तामे ठीक ठाढ़ भऽ गेल । चाह पीषाग जोड़ि गाम दिस रिदा भेल ।

गामपव आरि गोहानीमे खोसल हवरौली पेशा नऽ अंगना गेल । आवती घब रँहाले छेली । तखन ओही

पेशासँ अणधून मावए नगन । ओंघवा-ओंघवा कऽ मावनक । पीठ आ जाँघ दु दाजि कऽ फुँट गेलै ।

आवतीक माए रँदम ओगबेले रँध गेल छेली । कियो कहनकनि तँ दोगन अंगना एनी । रैषीक हावति

देखि काषण नगनी । आवतीक कपड़ामे नद्ध नगन बहए । माएके देखिते आवती आरो जोव-जोवसँ

काषण नगनी । आवतीक दशा देखि माए भवि पाँजमे पकड़ि रैषीके अणष्ट सणष्ट कहए नगनी ।

आवतीक कक्का देरनजी डाकुँव रँजा गनाज कबोनथिन । वातमे आवती आ ओकव माए किछु ले

खेनक । कियो पुँडेओले ले एननि । भिनमले आवतीक माए फुँष्ट खेषाग रँलीनक । केते कहना

पढाति आवती दु-टावि कोव खेनक आवतीक माए अणष रैषी सँग तील भाषम कवए नगनी । जे देखि

अघित रँजए-

“अ जोड़ि, हमवा परिवारमे तिलोज कवा देनक । कहिया अ जोड़ि अँ घबसँ जाएत से ले

जाति ।”

आवतीक माए किछु ले रँजए । दूनु माए-रैषीके सिवहारानीसँ रँजा-लक्की रँग भऽ गेल । हीवा नान

गाममे ले छन । पाँषीक मीष्टिगमे भाग नगले काठमाण्डु गेल छन ।

अँ घटनाक पाँचम दिन भिनमले हीवा नान गाम एना । अखनि ओ अणषा कोठरीमे मोवा बधि

कपड़ । रँदमेत बहथि तखन आवतीक माए काषण नगनी । माएके कलैत देखि आवतीओ काषण नगनी ।

पेशी आ रैषीक काषण सुनि हीवा नान अकटका गेला । हूषका किछु फुँडरे ले कवनि । भेननि जे

जेठकी रैषी ले तँ जेठका रैषीके ले तँ किछु भऽ गेल । सागत तँ दूनु माय-पी एषा कलैए ।

अघितके हाक देनथिन । अघित अणषा काठरीमे किछु निथेत बहए । पिताक हाक सुनि अघित ओतैसँ

राजन-

“की कह छिअ ।”

हीवा नान कहनकनि-

“एम्हव आँ तँ ।”

अघित पिता नग आरि ठाढ़ भेल । देखिते पिता पुढनथिन-

“दूनु गोठे एषा किअए कलैए । की भेलै ?”

अघित कथाएन राजन-

“एकले सभसँ पुँडियो ले, कि भेलैए ।”

तेपव माए नग आरि रँजनी-

“हमवा रैषीके मायि कऽ स्वतए देल बहए । ओंघवा-आँ घवा मावनक । जाँघ आ पीठ दु दाजि कऽ

लोपि देनक आ अखनि रँजेए एकले सभके पुँडियो ।”

अ कहि माए आवतीक पीठ ओंघावि देखोनकनि । आ पुँडनकनि-

“जाँघो देखारी ?”



हीवा नान झूहसँ निकनननि-

“ले, हम सब रूमि गेलिध ।”

नगले सुले अघितसँ पृष्ठनथिन-

“किअए मावलिध आवतीकेँ ? की केल बहए ?”

रिच्छेमे आवतीक माए रँजनी-

“हमवा रँधीकेँ अघयोगति कइ मावनक । हम रँदास ओगलैत बही । सुगिया हमवा कहए गेल । तँ हम दोगन एलौ । अँगनामे रँधीकेँ ओघवएन देखलौ । ओकब मनराव आ समीज नहसँ तिजन बहए । देरण रौआ नान डाकूठबकेँ रँजा हमवा रँधीकेँ दरौग-रिबो करौनक ।”

तेपव अघित राजन-

“एकब रँधी हमवा रँहुकेँ मावनक से रँड नीक । छेठ षणदि तइ जेठ भोजागपव हाथ उठौत । जेना हम तिजवा बलिध ।”

राजि अघित ओतएसँ चलि गेल ।

हीवा नानकेँ रँधीक रँरहावसँ रँड पीड । भेलनि । झुदा रँनजा किडु ले । आवतीसँ पृष्ठनथिन-

“की केल बही । किअए अघित मावनकौ ?”

आवती-

“रौरू यौ, हमवा सकुनमे ओग दिन सरैले डुष्टी तइ गेल बहए । गामपव एलौ तँ माए अँगनामे ले डन । हमवा रँड त्रुथ नगन बहए । तनसा घब गेलिध तँ छुछे त्रुत बहए । तीमन-तबकारी किडु ले बहए । भोजी आ पृछा या ओसावपव रँस खागत बहए । हम भोजीसँ पृष्ठलिध जे तीमन-तबकारी ले छे हम कथी मेल खेरै । तेपव भोजी कहनक, नुन-तेन मेल खा लिख । हम कहलिध नुन-तेन मेल ले खाएरै । तेपव भोजी कहनक, तहण घी-गनीदा केतएसँ एते । हम कहलिध कणी दुब नइ नग डी आ ओसे मेल खा जेरै । तेपव भोजी राजनि कणीसँ दुब छे चाले बहए दियो । त्रुव सोचलौ जे कणीसँ नइ जेरै । ओरिका नइ कइ अदहे ओरिका लिख नगलौ आकि भोजी अँगठे हाथे आरि ओरिका डीमए नगन । तेपव हम भोजीक हाथ नमावि देखिध । ओरिका महक सतठी दुब हवा गेल । भोजी हाथ षोग कइ ओडागपव जा काणए नगन । हम खेरौ ले केलौ । रँवतन-रँसन माजि-षोग कइ बथि जखनि तनसा घब रँहारे छेलौ आकि तेगा आरि ठेगा नइ हमवा मावए नगन ।”

आवतीक रात सतठी सुनि हीवा नान किडु ले रँजना । ओना बलिध जनथे आ बहिए कलौ खननि । टुप-टाप अपन दिनचर्यामे नगन बहना ।

वातिमे हीवा नान अघितकेँ रँजा कहनथिन-

“हमवा सब रात मानुम भेल । एँ समस्याक निदान केना हएत ?”

अघित-

“आवतीक रिखाह तइ जेते ओ मानुव चलि जखत तखनि समस्याक निदान अगल तइ जखत । जारै धरि अ छौड ी एतए बहत, समष्ट बहलै कवत ।”

हीवा नान-

“अखनि आवती एस.एन.सी.ओ ले केनक हेल । उमेरो अखनि मोष्ठ रँवथ भेलै हेल । रिखाहो केना कवर । जखनि अठव पास कइ जखत आ उमेरो अठवह रँवथ गुनि जेते तखनि रिखाह कइ देखै ।”

अघित राजन-

“जानी अहाँ । हमवा कोण मतनरै ।”

हीवा नानकेँ तामस उठि गेलनि रँजना-

“जेठ भाय छिध अहाँ । एहेन रात रँजेत कनिको नाज ले होए ?”



बांगक डरै सुनि अघित तैसमे आरि बाजल-

“अंग, अ जोड़ १ हमा रहुँ सौतिनियाँ डाह बकथत । जेठ भोजागके कनिको मोजब ले देत । एकबा चनते परिवारबमे दु ठाम भासल हुअ नगल । अहाँ उलठे हमा कहै छी । आबतीके समना दियो बाजुरानी बाजु जेती दाग जेती छुछे ।”

हीवा नान कहनथि-

“ठीक छै । जारै धरि आबती पातोमे बहत हम सब तिल्ल भणमा रँषाएँ ।”

अघित कहनकथि-

“ठीक छै । जे मल फुअ से कक ।”

हीवा नानक परिवारबमे दु जगल भासल रँषा नगल । सुनीत गवनी छुप्रीमे गाम आएल । कहियो माएक रँलोन खेनाग था नगल छन तँ कहियो भोजीक रँलोन । सुनीत कहै बहे जे अथनि परिवारक रिरादसँ हम दूरे बहरै । हमा अँ सभसँ कोला जेनी-देनी ले ।

अघितक सब नगलजी काठमाण्डुमे गँजीनियब छथि । ओ अण परिवारक सग काठमाण्डुमे बहे छथि । दसमीमे गाम आनथि तँ अघितोके सपरिवार सिवहा अरौले मौरागनपब कहनकथि । किएक तँ रँनि-भोग छन ।

पत्नीके अघित अण पनी आ फिया-पुताक सग सासुर पडँटन । उतए देखनक जे गँजीनियब सहैर अण माए-बाँरु, दूनु जोठे भाए आ जोठे रँलिन जेन काठमाण्डुसँ कपड । लल आएन बहथि । अघित, अघितक पनी आ फिया-पुताके सिवहा रँजाब न२ ज्ञा क२ मल-पमल कपड । कीनि देनथि । माब-सबहोजि अघितके रँहूत माले छेनथि । गँजीनियब सहैर अण जोठे भाए-रँलिनक रँड थियान बथे छेनथि । अघित सोए, गँजीनियब सहैर भाए-रँलिनके केते माले छथि । हम तँ अणना भाएके आग धरि एका पाग ले देल हएँ आ रँलिनके तँ... ।

अब सोए, हमले रँरहाबसँ जेठका पाहुन पातो एनाग-गेनाग जोडा देनथि ।

गँजीनियब सहैर अघितके कहनथि-

“सो पाहुन, दुनियाँमे किछ ल छै । सब गोठे आपसमे मिनि-जुनि क२ थेमसँ बद्ध गएह सैय रात भेन । की न२ क२ दुनियाँमे एरो आ की न२ क२ जएँ । जेतेक दिन जीरी हँसी-खुशी जीरी ।” अघितपब साबक रातक अमरि भेन । अघितक पनी भोजागक सुनब रात-रँरहाब देखि छुगुतामे पडि गेली । किएक ल पडि ती । भोजाग हुका भोले चाह रँषा पीरैत बहथि । जारै धरि ओ ले खाग छन तारै भोजागओ ल खाग छेनथि । सिवहारानी सोए, अहो तँ हमब भोजागए छी । केतेक मल-दाष करैए । हृदा हम तँ षषदि सभके... ।

एक दिनक गग छी । छुपिब जालियामे दूब बहए । दूधमे तबहथी मल छाननी पडन बहए । सिवहारानी छाननी देखि भोजागसँ पुछनक-

“भोजी, कनी छाननी नी ?”

तैपब भोजी मावडि रानी रँजनी-

“अंग ये दैया, की अ लिखब घब ले छियनि जे हमवासँ पुछे छथि । अ सब तँ घबक मेहमाण छथि । लिखा सभके केतए देखरँनि । अ सब जेतरै खेतहीन-पीतहीन उतरै ल, कोला घब लल पातो जेतहीन । सब धन-रीत तँ हमले सभले जोडल जेतहीन । जे मल होग छुगुनि से खाथु ।” अ कहि मावडि रानी एकठा कठेरीमे सभठा छाननी निकानि षषदिक हाथमे द२ पुछनथि-

“छिनीओ जेरै ।”

सिवहारानी-

“कनी द२ दिअ ।”



सिबहारानीकेँ मासुबक सभठौ रात मल पडि गेल । जे कनी दुध नषदि निखए नगन । तँ ओरिका छिनए नगलौ । तगले नषदि हमर हाथ मसारी देननि । हम काषए नगलौ हमरा कलैत देखि पडि याक पापा आवतीकेँ अमोगति कइ यावनक । जेकब काका आग परिवारमे दु जगह भासल होगए । डि डि केहेन छी हम । आवतीओ तँ किछु दिक मेहमान छी । गण्डबक पवीक्षा माटमे हएत आ अहीनमे रिखाह भइ जाएत । मासुब चलि जाएत । खेब ओकरा केतए देखर । ओ तँ जेतरेँ खाएत-पीखत ओतत-पहिवत ओतरेँ ल । सभ धन-सम्पति तँ हमरे सभले बहि जाएत । केते उच्छेखरि दग छिँ नषदि सभकेँ । जेठकी नषदि-नषदोसि तँ मासुबे एणाग छोडि देनक । हम पापी छी... ।

सिबहारानीक आँधिँ छप-छप लाव खसए नगन । मावडी रानी टिगी नइ कइ एनी तँ नषदिक आँधिमे लाव देखननि तँ पुढनखि-

“की भेल देया, किखए कले छी । हमवासँ कोणा घटी भइ गेल की ? ”

सिबहारानी कहनकनि-

“ले येँ भौजी, अहाँसँ गनती ले भेल । हमरेसँ गनती भइ गेल अछि । रएह सभ मल पडन तँ आँधिमे लाव आरि गेल । आग हमर आँधि खुजि गेल । ”

मावडी रानी रँजनी-

“देखियो देया, जेहल अण मए-रौरु तेहल मासु-मासुब । जेहल अण भाए-रँहिल तेहल दिखब-नषदि । अण रौरावसँ सभकेँ खुनि बाखी एसँ नीक रात ओब किछु ले । अहाँ अणकासँ नीक रौराव कवर तँ लोक अहाँसँ नीक रौराव कवत । ”

अमितपव माव-सबहोजिक रौरावक असरि पडन । तेनाहि सिबहारानीपव भाए-भौजागक रात-रौरावसँ रँड प्रभावित भेली । दुनु पवानी रिटाव कइ निशुच केननि ।

दसमीक रिहास भल अमित अण परिवारक रंग साँममे पातो पडूँचन । अमित माएकेँ पएव डुरि गोब नगनक । सिबहारानी मासुकेँ गोब नगनक । सिबहारानी अण सभ समाज घबमे बधि कपड । रँदलि भनसा घब गेली । आवती आ ओकर माए भनसाक ओरिाणमे नगन छेली । माए तबकावी कटे छेली आ आवती मसला पीस छेली । सिबहारानी आवतीक हाथ पकडि उठरेत कहनखि-

“अहाँ मसला पीसर छोडि पठू, गइ, पवीक्षा नगिटाएन अछि । आगसँ सरहक भासल हमरी कवर । आरि दु जगह खेणाग ले रँगत । गतनी हमरे छन । अहाँ तँ किछु दिक मेहमान छी । रिखाह पछाति अहाँकेँ केतए देखर । ”

सिबहारानीक आँधिँ छप-छप लाव गिबए नगन । भौजागकेँ कलैत देखि आवतीओ काषए नगनी ।

आवतीक माए दुनु गोठेक आँधिमे लाव पोछित कहनखि-

“पहुनका रातकेँ दुनु गोठे रिसरि जाड । ”

तेपव अमित माएकेँ कहनकनि-

“माए, हमवासँ रँडका गनती भइ गेल छन । हमरा माफ कइ दे । ”

अमितो काषए नगन । दुनु आँधिँ दहो-रँहो लाव जाइ नगले । आवती तेनाकेँ कलैत देखि पएव पकडि काषए नगन-

“ले तेया, हमवासँ गनती भेल छन । हमरा माफ कइ दिख । ”

रँठी-रँठी आ पुतोहकेँ कलैत देखि माएओ काषए नगनी ।

कनीकान पछाति हीवा नान एनखि । दुलेपसँ आवतीकेँ हाक देनखि । सिबहारानी पुढनखि-

“की कह छिँ रौरुजी । आवती रूद्री पठू छुनि । ”

हीवा नान आवतीक माए नग जा रँजन-

“अ मासु निख नीकसँ तीसल कर । ”



आवतीक माए कहलथि-

“गुड़ि या माएकेँ दियो । रएह सरहक भास कबथि ।”

तेपव सिवहरानी कहलथि-

“है बाबूजी, आगसँ हमरी सरहक भास-भात कबरँ । परिवारमे दूठाम भास ले हएत ।”

गण-सगण सुनि अगितो आरि रँजन-

“है बाबूजी, आरँ सब गोठेँ अपसमे मिलि-जुलि प्रेमसँ बहरँ । आवतीक परीक्षा नलिटाएन अछि । ओ अगण परीष्काक तैयारी कबत ।”

“अच्छा, ठीक छै ।” रँजेत हीवा जानकेँ मनमे भेननि आगसँ तबि प्छेँ थाएरँ ।

f



बौराधाम

“रौन-रौन रौन-रौन। रौनरौन-रौनरौन” जे आराज कमलीक काणमे पछन तँ ओ घास काठरँ छोडि सडक दिस तकनक। एकठौ रौनमे पीयब-नान कपड। पहिले लोक सडकेँ देखनक। रौनक तीतब आ छतपब लोक सड रौन क२ रौनरौन-रौनरौनक नावा नगरौत छन। रौन तेजौसँ सडकपब दौग बहन छन।

कमलीक खेत सडकक कातेमे छन। ओ खेतक आरिपब घास काठ बहन छनि। कमली सोछए नगनी-कतेक लोक रौरा धाम जागत अछि दूदा हमर तँ भागे खवाप अछि। कतेक दिससँ बिकनाक रौगकेँ कहैत छी दूदा ओ अछि जे मियाल ले दैत अछि।

कमली आ नखन दु पवाणी। एकठौ रौन रिकना। बिकना सातमे पढेत। नखनक माए-रौगक सतब अस्मी रौनक रूठ। नखनकेँ पाँच रिघा खेत। एक जोड़। रौद आ एकठौ महीसो। नखनकेँ कतौ जागत सोछए पाछ। किएक तँ सतब रौनक रूठ माए आ अस्मी रौनक अखरौन रौगकेँ छोडि कतए जाएत। तगपब सँ एक जोड़। रौद आ महीसोकेँ देख-लेख। पाँच रिघा खेतमे नागन फसलक ओगबराली। अमगले कमलीसँ केना पाब नागत। तेँ कमलीक रौराधामरौन रौतपब नखन मियाल ले दैत छन। नखन सोछए कमलीकेँ गामक नाक सगे रौरा धाम तेज देर तँ भास ले कबत? धाम ले आगत। अमगले हम की सड कवरँ। रौन रिकना पढेत अछि। ओका सकुनसँ छुडी लोगत अछि तँ ओ रौन पढेत नए छनि जागत अछि। रौन रौन पढेत केना पवीका पास कबत। सबकारी सकुनमे की आर पढेत ग लोगत अछि। मासुब सड रौन क२ गप नडरौत बहैत अछि। छटिया सड कोठरीमे रौन क२ गप करैए अथवा नड ग-मगड। मासुब सरहक लेन धनि मन। नखन अगल खेती गृहस्थीक सगे माए-रौगकेँ सेरा नीकसँ करैत अछि। माए तँ खोडए पहेगरो छुडि दूदा रौगकेँ उठरौ-रौनरौमे दिक्कते छनि। हुनका पौखा-पौखार नखनकेँ कवारौ पढेत अछि। पौखारकामान हागुनमे नखनक पिताजीकेँ नकरा मारि देनकनि। चिया पीनी कुनिक दवउंगामे गनाज कलेनासँ जाण तँ रौन गेननि दूदा अखरौन भ२ गेना। तगराण नखन जकाँ रौन सडकेँ देखु। ओ तन मन आ धनसँ माए-रौगकेँ सेरा करैत अछि।

नखनक एकठौ सगी अछि। नाम छी सुकन। सुकन नखनसँ रौनी धनीक अछि। दूठौ रौन अछि सुकनकेँ। दूनु रौन सतमा तक पढेत दिनीमे लौकरी करैत अछि। मासे-मासे रौन सरहक तेजनाह कपेखा सुकनकेँ तेँ जागत अछि। सुकनक माए-रौन जरीते छनि। सुकनक माए कम देखैत छनि। हुनका बातकेँ सुनरौ ले करैत छनि। एक दिस सुकनक माए बातकेँ ओसावप सँ गिब गेननि हुनका पएवमे मोच पडि गेननि। नखनकेँ पता छन तँ ओ सुकनक माएक जितनासा करैले गेन। सुकनक माए नखनकेँ अगल रौन जकाँ मले छेननि।

नखन सुकनक माएसँ पढनक-

“माए केना क२ ओसावप सँ गिब गेले।”

सुकनक माए रौननि-

“रौन, आर हमरा सुने ले अछि। बात क२ तँ माहे ले देखैत छी। रौन रौनक छोडका कण्ठीवरी दवउंगामे डाकडरी पढेत अछि ओ हागुनामे गाम आएन छन हुनका कहनि तँ ओ हमर दूनु आधि देखनक आ कहनक जे दूनु आधिये मोतियाक भ२ गेलौकेँ। कहनक जे आंगरेश कलेनासँ ठीक भ२ जाएत आ नीक जहाति सुनए नगत।”

हम सुकनकेँ कहनि तँ ओ कहनक जे अथनि कपेखा ले अछि। कपेखा हएत तँ नहाण न२ जा क२ आंगरेश कवा अरौ। दूदा हागुनसँ बादो आरि गेन, आंगरेश ले कवा आननक। सुले छिं टोडनक पवात दूनु पवाणी रौराधाम जाएत।



सुकनक रौरुजी सतुवि रैरथक छथि। ओ नामी गिवहत छना। तबकारी उगजा क२ रैटे छना। तबकारी रैटि क२ पाँट रिगहा खेत कीगना। आरि उमेव रैनी भेनासँ काज करै जोकव ले बहना। हुनका चाह पीरौक आदति भ२ गेन छन्हि। भोव आ साँस चाह हेरौके ताकी। एकठा आदति ओरो छन्हि, खैली खागक। सुकन अगणारौरु जीकेँ चाह आ खैली ले जूमारैत अछि। केहेत छन्हि- कैसव भ२ जेतह। ह्दा अगणा पाण-पवाग, सिगरेठ, दाक मरैहक मेरन करैत अछि।

एक दिन नखन सुकनक दनाषक पाडुसँ जागत छन तँ सुकनक जोव-जोवसँ राजरि सुनि क२ ठाठ भ२ गेन। सुकनक दनाषक पाडुसँ सडक ग्वजे छै। सडकेपव सँ नखन सुकन नगन। सुकन रैजे छन-

“हबदा चाह-चाह बरैत बहेत छहक। किछु बुमरौ करै छहक। टीनी चानीस ठके कियो भ२ गेन। चाहपती जे रौरव ठाकामे भेटै छेलै आरि रीस ठाकामे भेटै छै। पानिरेना दू पण्दह कपेये गिनास। के जूमत चाहमे। आ तौवा भोव-साँस चाह हेरौके चली। हम ले सकर-तौवा चाह जूमरैमे।”

रूठ। किछु ले रैजेत बहथि। नखनकेँ कोला जकवी काज बहे तँ ओ आगाँ रैठि गेन।

सुकन अगणा पडु मिया ओगठाम माए-रौरुक भोजनक जोगाव नगा क२ टोडनक रिहास दू पवाणी रौरुधाम रिदा भ२ गेन। सुनतानगजमे गंगाजन भवि कामेव न२ रौरुधाम पहुँचन। एकादनी दिन रौरुकेँ जन चठ। रामकीनाथ, तारापीठ होगत ओतसँ कनकता चलि गेन। एमहव ए रीट सुकनक रौरुजी रैमाव पडु गेनथि। हुनका रौरुधाम गणि गेनथि। नखनकेँ समाद भेटेन जे सुकनक रौरुजी दुथित छथि। नखन ओगठाम जा डाकठवकेँ रैजा क२ अगणा दिससँ खट क२ रूठ। क गनाज करौनक। जारै धवि सुकन दू पवाणी रौरुधामसँ आपस ले आएन तारै धवि नखन दिसमे एकरेव सुकनक माए-रौरुक रैठे कवरौक जेन निश्चित जअ। दू गोठे जेन अगणा दिससँ चाह आ खैलीक जोगाव नखन क२ देल छन।

सुकन जितिया पारिसँ तीस दिन पहिल गाम आएन। सुकनकेँ रौरुधाम आ कनकतासँ आपस अनाक दोसव दिन भिनसले टोकपव चाहक दोकाणपव नखनक रैठे सुकनसँ भ२ गेन। सुकन चाहक दोकाणपव रैस कनकताक रनि करैत छन। नखन सुकनसँ वास्ता-पेवाक समाचाव पडनक। तँ सुकन कहनक-

“रौ दोस, रौरुक गुपारसँ सत किछु गीके बहलौ। दू पवाणी कनकता घुमिये जेनियो। तौ खाली रैकमे कपेखा बाख ल। तौ की बुमरौ धव-कवम। तौवा जँ कपेखाक आमदनी हेतौ तँ तौ खेत भवना जेमे ले तँ रैकमे बखमे। हम दू पवाणी दस रैरथसँ कामेव न२ क२ रौरुधाम जागत छी।”

सुकनक रौरुधाम नखनकेँ ले सोहएन। ओ सोचनक जे अथनि एकरा जरारि देनाग ठीक ले हएत। रौरुधाम-

“रौ दोस, से तँ ठीके कह छी। हम धव-कवम की बुमरौ। ह्दा हम अगण माए-रौरुक मेरो तन-मन-धनसँ करै छी। हमरा जेन तँ रौरुधाम हमर मागए-रौरु छथि। हमरा जेन तँ हमर रौरुजी साकात् महादेव आ माए पारिती छथि। हुनके दू गोठेकेँ मेरो कवर रौरुधाम कामेव न२ क२ जाएरसँ रैनी नीक बुने छी। केकरो अधनाहो ले सोटैत छी आ ल करै छी। तौ कह जे मागक मोतियारिन्दक अंगवेशनक जेन तौवा कपेखा ले छै। रौरुजीक चाह पियारिक जेन तौवा कपेखा ले छै। ह्दा रौरुधाम जेरौक जेन कपेखा छै। कनकता घुमैक जेन कपेखा छै। दाक पीरैजे कपेखा छै। माएकेँ सुने ले छै। बातिमे ओसावपव सँ खसनथि तँ पधवसे मोट पडु गेनथि। जँ तौ अगण मागक मोति तियारिन्दक अंगवेशन करा आनल बहैत तँ ओ ओसावपव सँ ले खसितथि। अगण दू पवाणी रौरुधाम गेलै ह्दा माए-रौरुक भोजनक जोगाव पडु। मिया ओत नगा क२ गेलै। तौहव रौरुजी रैमाव पडु गेनथि तँ डाकठव रैजा हम गनाज करौनथि। तौ रूठ माए-रौरुकेँ



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पत्रिका ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

एकेछाँ ठाँका ले देल गेल बहै । अप्पना दुनु पवानी रौपक अबजलहा सम्पत्ति आ लेँछाँ सभक कमागसँ एते-मोज करै छै । ऊदा माए-रौप एक कप टाक जेन काहि कछै छै । धुव बुँछाँ तौँ की रँजमै । ”

तखनक रौत सुनि सुकन थमा गड़ि गेल । ओकवा कोला ज्वारैँ ले हूँड एन । ओकवा भेल जेना रीच रौज्जावमे कियो षंगठ क२ देनक ।

f



टोडनक दली

आगसँ टोडन पारनि चाबि दिन अछि । चाकिा दिन तँ पारनि हेरै कबत । तँ उग दिन दली ले पाँडन जाएत । सोमनी जन्माखयठमसँ पहिलि ग्वकी हठिया रँगगामसँ तीरठी डाँडी आ दुधी मठकबी किन कइ अलल छनि । सोचनक जे पहिल कीननासँ रौसन समता हएत ह्दा मे ले भेन । पाँटो मारिक रौसन पट्टिस ठाकामे भेन । अणना तँ ल महिसमे छन आ ल गाएत । सोमनी सोचनक अणना गाए-महिस ले अछि तँ की हेते सोमने गाममे तँ गाएत-महिस अछि । की हमरा दम गिनाम दुध ले हएत । जेँ दुध-दु गिनाम कइ कए पाँट गोठेँ दुध दइ देनक तेयो पाँटो रौसनमे दली भइ जाएत । मरुड लेन थीव बन्हेले भजेत आ गेटामसँ एकको गिनाम दुध नइ आनर केगहिओ कइ पारनि कइ जेँ ।

सोमनी आ मंगन दु पवानी । मंगन दिनीमे दानि गिनामे लोकबी करैत । सोमनी गाममे खेती-राइ तीक काज कबति । सोमनी-मंगनक परिवारमे पाँट गोठेँ छन । सोमनी, मंगन, रौठी बाधे आ रौठी फुलिया, ग्वरिया । पाँटो पवानीक नाँपव सोमनी पाँटो रौसनमे दली पाँड टोटी चाँद महवाजकेँ हाथ उठैत छनि । सोमनीकेँ एक रीया खेत छन । एकठी रँवद बखल छन । गाममे रितरौसँ हक भौँज नगोल बहए । नुनु रौँक दम कठी खेतो रौँग करैत छनि । अणन खेतीक रौद हव रौँग लेत छनि । जगसँ किछ कपेखा सेहो भइ जागत छेलै । मंगन तँ दिनीएमे कमागत छन तँ रितरौ सोमनीओक खेतमे हव जोति दैत छन । रितरौकेँ अणन डेट रीया खेत छन आ एक रीया रौँग करैत छन । तँ रितरौ सोमनीओक खेत जोति दैत छन । रितरौकेँ हव जोतिकेँ रँदनामे सोमनी रितरौकेँ खेत रोपि दैत छनि । दुनु गोठेँमे गिनामी खँ बहए ।

कान्हि टोडन छी ह्दा आग सँम धरि सोमनीकेँ कियो एकको गिनाम दुध ले देनक । जे ओ कोला रौसनमे दैत । ओकव मल घोब-घोब भइ गेन । ओ रँड थोना गेलि । अणना आगमे थोनागत रँजनि-

“हमर रँगवता लोककेँ ले हेते । जँ गाममे बहरँ तँ आग ल कान्हि हमरो रँगवता लोककेँ पडरँ कबते । तहिया मल पाँड दैरनि । ” माएकेँ थोनागत देखि रौठी बाधे रौजन-

“माए ली, टूना रौँ जे मरन बहथि तँ हूँकव तोजमे देखनि पौडवक दली पाँडन । टोकोगव दैयो छी जग चाहननाकेँ दुध मरि जाएत तँ पाँडनकेँ घोडा कइ चाह रँगरौत अछि । कह ल तँ टोकोगव सँ आधा किलो पौडव आनि दग छिओ । ओकवा खँ कइ ओँठ निहँ आ रौसन मभमे दली पाँड निहँ । ”

रौठीक रौत सुनि सोमनी रौजनि-

“पौडवरना दुधक दलीसँ पारनि केग हएत । ”

बाधे रौजन-

“जँ गाए, महिसक दुध ले तेठेलो तँ की कबरीही । पौडव तँ गाएत महिसक दुधकेँ रँलेत अछि । ”

सोमनी ग्व-धूँ करैत रँजनी-

“ठीक छै । जँ टोटी चाँद महवाज अणना गाए-महिस ले देल छथि तँ पौडवक दुधसँ पारनि कबरँ । जो तेठकक दोकानसँ आमेव नीमका पाँडव लेल आ । आ हे दु ठाँकक जेवनेले दलीओ नए निहँ । ”

बाधे टोकोगव रिदा भेन । ओतसँ पौडवरना दुध लेल आएन । ओग दुधकेँ ओँठ दली पौडनक ।

आग टोडन छी । तेल सोमनी बाधेकेँ लेठी दइ कइ रितरौ आ गेटाम दुध आलल पठौनक । रितरौ आग रँसले अछि किअक तँ पारनि छी । बाधेकेँ देखिते रौजन-

“लेठी बथि दली दुध थीव बन्हेले हम तौवा माएकेँ गडल छेलिओ ह्दा अथनि ले हेते । सँममे नइ जगहँ । ”



साँसखन जूथनि बाधे दुब अलेजे गेन । रिंतराँ चाहरना गिनासँ एक गिनास दुब देनक । दुब देखि सोमनी दुखी भऽ गेलि । सोचनक जे एतरेँ दुबसँ खीब केना बाणहन जखत । ह्रदाँ कोलाँ उपाँ ले । तँ उही दुबमे पाणि गिनाँ खीब बाणहनक ।

सोमनी टोठी चाँद महवाजकेँ हाथ उठरैत कहनक-

“हे टोठी चाँद महवाज जँ हमरा दवरँजजापव एकठी नीक नगहवि गाँ भऽ जखत तँ अगिनाँ मान एक डाँडी दही आँव देरँ ।”

बाति बख रँजे दिनेसँ मंगनक हेलन आँएन । घरेक रँगनमे एक गोठेँ मोराँगन बखल अछि । ओकरेँ मोराँगनपर सोमनीकेँ हेलन अँ एन । सोमनी हेलनपर मंगनसँ गप केनक । कशेन-समाचाबक रँद मंगन कहनक-

“आँग टोचन पारनि छी, अहाँसँ भवि मोन खीब, पुरी, दही खेल हएँ ।”

सोमनी उँदास होगत रँजनी-

“की भवि मस खएँ, दही पौडलेँ कियो एकाँ ह्रुट्टी दुब लेँ देनक । पौडवक दही नएँ कऽ पारनि केलाँ गऽ मरडक खीब बाणहनेँ तजेँत एकाँ ह्रुट्टी दुब देनक । एक ह्रुट्टी दुबसँ केहेन खीब हएत ।” मंगन कहनक-

“अहाँ मोन जूनि छेँ कक, हम ह्रुगुआमे गाम अरै छी तँ एकठी नीक नगहवि गाँ कीनि कऽ आँनि देर । दुब खेरौ कवरँ आँ रँदरौ कवरँ । दुषी पाँग हएत तँ नुला-तेन चनत । रँदौ सभ घास काँ-काँ आँनि देत ।”

सोमनीक मस खुँ भऽ गेल ।

ह्रुगुआमे मंगन गाम आँएन तँ सोमनीकेँ गाँ कीनि देनक । गाँ अँ किलोआँ रँदी डिँरँसँ छह डिँरँरी भेव आँ चाँवि डिँरँरी दुगहव नलौत छन । जारैँ धरि मंगन गाममे बहन तारैँ ओ अँपल गाँ दूँत । जूथनि मंगन दिनेली चलि गेल तँ सोमनीएँ गाँ दूँह नगनी । भेवकाँ दुब रँदौ नग छेनी आँ दुगहवकाँ दुब परिवारेँमे खीगत । रँदौ ह्रुनियाँ आँ गुनरियाँ घास आँनि-आँनि कऽ खुँअरैँ । एक दिन ह्रुनियाँ नगमाराजीक खेतक आँविपर कनी घास काँ-केनक । तँगलेँ नगमाराजी ह्रुनियाँ आँ ओकर माँ सोमनीकेँ रिखनि-रिखनि कऽ परिवारेँक । सोमनी ह्रुनियाँकेँ माँवरौँ केनक आँ नगमाराजीसँ गनतीओ माँनक ।

समएँ रिँतेत देवी लेँ नलौत छेँ । आँग कमी अँमरनियाँ छी । पाँचम दिन टोचन पारनि हएत । कानहिसँ दही पाँडन जखत । सोमनीक दवरँजजापव एकाँ नगहवि गाँ टोठीचाँद महवाज देल छुँषि । सोमनी सोचनक जे एकाँ सभ रँसणमे नीक जहाँति दही पाँडरँ । ओकरा पाँककाँ मानक सभ गपुँ मस बहएँ जे कियो एकाँ गिनास दुब लेँ देनक तँ पौडवक दही नएँ कऽ पारनि केलाँ । मल-मल रिचाँवक जे ह्रुँ केकरोँ दुब लेँ देरँ ।

आँगसँ टोचनक दही पाँडन जखत । भेलेँ ह्रुसँरी जोठी लेल सोमनी एँठाम दुब नग नएँ आँएन । बाधे कहनक-

“माँएँ लेँ, पौककाँ मान अँगणाँ कियो एकाँ गिनास दुब लेँ देल बहौँ तँग केकरोँ दुब लेँ दे ।”

सोमनी सोचनक जँ सिँहसँ रँरी नगहवि गाँ देल छुँषि । तँ पारनि नाँगपर सभकेँ किछु लेँ किछु दुब देरँ कवरँ । जत गोठेँ सोमनी एँठाम दुब लेँ आँएन सोमनी सभकेँ दुब दऽ रिदाँ केनक । ओकर अँगन छुँठी रँसण नएँ मात्र दु गिनास दुब रँचन । ओहो कानहि पारनि छिँ तँ आँग दुगहवक । सोमनी उही दु गिनास दुबकेँ छुँ रँसणमे दही पाँडनक ।

आँग टोचन छी भेलेँसँ जोक सभ जोठी नएँ नएँ सोमनी एँठाम दुब लेँ पँडन । नगमाराजीक रँदौ दुखनी सेहो अँएन । ह्रुनियाँ सोमनीकेँ कहनक-

“माँएँ लेँ, दुखनीकेँ दुब लेँ दहीन । ओकर माँएँ कषिँ घासलेँ गिँविल बहौँ ।”

सोमनी रँजनि-



“गारमिले सभके दुध देलै । गारि देनक तँ की भेन एकठाम बहनासँ तँ अलिना नइ ाग-मगब होगत छै तँ कि ओग रातकेँ जिनगी भवि मल बखल बहरँ ओगसँ की छत । अलले ठैसन बहत ।”

सोमनी भोवका सभठाँ दुध लोककेँ दइ देनक । ओग दुधक केकरोसँ गाओ लै लेनक । दुधबका दुध दुहि कइ एक गिनास दुध भजेत रितराकेँ आ एक गिनास मानिक बुनु राबू आ ओठाम पठौनक । एक गिनास अगल बखनक । साँममे जखनि मवड नए सोमनी थीव बाहले लेसनी तखल रेवमानी आरि गेलि । ओ कहइ नगनी-

“ये दाग हमरा तँ थीव बाहले दुधे ले भेन । जितरा अखुका नाओ कहल बहए । ह्दा जखनि लेठकेँ दुधले पठौनिध तँ ले देनक । आरि कथी नइ कइ मवडक थीव बाहरे ?”

सोमनी अगलाजे जे दुध बखल बहए आ ओमसँ अधा दुध रेवमानीकेँ देनक । साँममे सोमनी टोठीचाँद महबाजकेँ हाथ उठरैत कहनी-

“हे टोठीचाँद महबाज, हमरा दवरँज्जापव अलिना नगहवि गाए देल बहू तँ हम सभकेँ गारमि नए दुध दैत बहरँ ।” f



जाति-पाति

“यौ नुनु भाय, धासक खेतमे तँ नमह-नमह दवारि फाँटि गेल । बाप सब पिखर भ२ भ२ गेल । जँ छ-मात दिन आबो रँवखा ले भेल तँ रँमु जे सभ्ठा कएन-धएन पानिमे छरि जाएत ।” टँन कहलथि ।

“जएत ले छरि गेल । आरँ जे रँवखा हेरै कबत तैयो कि मोनह आना धास थोड़ हएत । जँ दम दिन रँवखा ले भेल तँ रँमु गेल तैस पानिमे... । हापो तबक आ नातो तबक समागत ।” नुनुजी टँनकेँ कहलथि ।

गप-सपकमे टँन रँजना-

“हे भाय, कोना तबहै रिहू नदीकेँ रँवखू ले तँ सभ्ठा बाप जरि जाएत । तँकब लौदीक नमूँ रँमहा बहन अछि । यो आग-काहि आस केते गिरे छै ?”

तेपव नुनुजी कहलथि-

“यौ भाय, रिहूकेँ रँवखूँ आरँ असास ले बरि गेल । दु नाखँ रँसोए खरि हएत । तखनि रँवखूँ रँवखूँ जा सकत । एतरेँ ले, पनिछेकि रँवमे कम-सँ-कम दु सएक हँसेवी चाली जे टोका आ रँवखूँ भवन मिशेक रँवो उगहत । दु चारि गोठेकेँ लोकली पठा नहबिक पानिकेँ फाँटक गिवा रँव कवारँ पडत तखल हएत ।”

टँनजी रँजना-

“यौ भाय, अगल जँ ममे ठानि जेरेँ तँ रँवखूँ हेरै कबत । पककोँ मान अहीक जोवपव रँवखूँ भेल । जगसँ धासक बापनि भेल ।”

नुनुजी अगल रँड १० सुनि उतव देलथि-

“से तँ हम पाँट रँव ए नदीकेँ रँवखूँ छी । ठीक छै, पवसु सखूँ पवतीपव तिसले आठ रँजे लोक सरँहक रँसाव करै छी । जँ सरँहक रिचाव भ२ जाएत तँ पकसुए हाथ नगा देर ।”

बरि दिन आठ रँजे तिसले सखूँ पवतीपव रँसक भेल । पाँट गामक किसान सब रँसन । सरँहक रिचाव भेल, आगए रँवखूँमे हाथ नगा देन जाए । जेते देवी कवरँ ओते बापकेँ लोकमान हएत । दूदा कपेखा तसलेमे तँ सग्न नगत । ठेकठेव आ जेसीरीरना तँ रिष अगवराव पागए लेल ओत ले । सब गोठे नुनुजी सँ एक नाख ठाका अगना दिसँ द२ रँवखूँमे हाथ नगा दगले आग्रह करैत कहलथि-

“जखनि कपेखा तमीन भ२ ओत तँ अहाँकेँ आगस क२ देन जाएत ।”

सएह भेल नुनुजी अगल पाग नगा काज शुक करैले तैयाव भ२ गेलथि । काज शुक भेल । रँवखूँ रँवखूँ गेल । सरँहक खेतमे पानि गेल । पिखर भेलना बाप सब पानि परिते हरिखा गेल । सब गोठे नुनुजीकेँ जग देलथि । आगमे कपेखा तमीन नुनुजीकेँ आगस क२ दग गेल ।

गामक मानिक दुर्गा जीक रँषै नुनुजी । नगधग पचास रँघा खेतक मानिक । जमाणाक थ्रेजुएँ । परोपष्टाये लोकथिय लोक । केकबो रँषैक रिखाहमे नुनुजी रिष रँजोतो पछूँट एते अरँसुँ पछे छथि जे कोना दिकतदारी तँ ल अछि । जँ कियो रिगाव पड'ए तद्वमे नुनुजी सनाह दग छथि जे नीकसँ गनाज होगक चाली । जँ पाग-कोड़ ीक अभाब बहन तँ मदति मेहो करै छथि ।

तेसब मानक गप छी । रिन्दे साहक रँषैक रिखाह मदना गामक तेजी साहक रँषैसँ ठीक भेल बहए । दु नाख ठाका, एकठा पनसव मोठेव सागकिन आ दु भवि मोनपव रँव पक्का भेल छन । नडा का पचागत शिफक छथि । लोकवी केनिहाव नडा का सरँहक बोड तँ अलारे रँठन बहए । जखेकि नडा का तैयाबीमे असगले आ पाँट रँघा खेतो । तेजी साह एक नमहवक जोती । रिन्दे साह साधारण किसान । एकदम जोना-भना रँकती । हुनकब एकठा रँषै कनकतामे ठेकसी डागभव, दोसब नडा का दिनीमे रिस्फठे छेकृथीमे काज करैत । नडा कारँनासँ गप भेल छेलै जे मोठेव



सांगकित आ एक भवि सोण द्वागमसमे देरै । बिन्दे साह बिखाहक सभ उबियाण क२ लेल बहए । सब-कष्टम सभकेँ लोत-पिहाणी पठा देल बहए । नर्दा कार्रनाकेँ दु नाथ ठाका सेहो गनि आएन बहए । बिखाहक पाँट दिन पहिले तिनसब लेल मदनसँ हणन आएन जे गाड़ ी आ दु भवि सोणक दम हमरा कालि पठा देरै तँ बिखाह हएत ले तँ ले हएत । हणनपर कहन गेल, दोसब गामरना हमरा पाँट नाथ दगले तैयाव अछि । ए रातपर बिन्दे साह समाण भ२ गेल । केतेक जोगावसँ तँ दु नाथ ठाका मदन पठौल बहयि । आग भवि दिनमे केतएँ षुत । बिन्दे साहक ज्ञाति रँगरानी साह नगानी-बिवाणीक काज करैए । हुनके नग ज्ञा बिन्दे साह अपन सभ गप कहैत कहनथि जे एक नाथ ठाका तारेँ सम्हावि दिख ।

रँगरानी साह कहनकनि-

“ठाका तँ जेते जेरै हम तेते देरै । द्वादि बिन्दे जेरैव जेले आकि जमीन निखेल ले देरै । एक नाथ देरै तँ दु नाथक जेरैव बखरै । जमीना निखाएरै तँ दु नाथक आ निखागमे जे खबट हएत से अहीकेँ दिखए पड़त ।”

बिन्दे साहक घबसे जेरैव ले छेननि । जमीन निखागमे पटिस हजावसँ ङुपलेक खर्च । गुणवृष करैत घब आपस आरि गेल । मसमे भेननि जे एक रँव बुजुजी सँ छैँठ क२ सभ रात कहनिनि ।

सएह भेन, बुजुजी एठाग ज्ञा बिन्दे साह बुजुजीकेँ सभ रात कहनकनि । बुजुजी कहनथि-

“लौ नर्दा कार्रना तँ बहब दूतिया बुमना बहन छह । हमरा बिचारे तँ ओकरा ओगठाग कष्टमैती ले कबह । द्वादि बिखाहक सभ उबियाण भ२ गेल छह । काडो रँष्टि देल छहक । कहअ केतेक ठाकाक रँगवता छह ।”

बिन्दे साह रँजना-

“एक नाथ ठाका रँयोत क२ दियो ।”

बुजुजी द्वादि डोनरैत रँजना-

“ओते तँ घबसे ले अछि, रँकसँ निकानए पड़त । एना कबह, ठाका न२ क२ जेकवा मदन पठेरैहक तेकवा हमरा सग नगा दैह । हम फुनपराम गनाहारद रँकसँ ठाका निकानि ओकरा द२ देरै ।”

बिन्दे साह खुशीसँ रँजना-

“रँड सुन्नव गप कहनिँ । आगए मदनारनाक पाग छनि ज्ञाएत ।”

सएह भेन । बिन्दे साहक रँष्टी बुजुजी सँ पाग न२ मदनारनाकेँ द२ आएन । रँड धुम-धामसँ बिखाह भेन । बुजुजी अपनसँ द्वादिगज भ२ रँबियाती सभकेँ भोजन करौनिनि ।

दु महिना पछाति बिन्दे साह जमीन रँष्टि बुजुजीक कपेआ आपस केननि । पाँट कपेए सँकव सुदि जोडा बुजुजीकेँ दिखए नगना तँ कहनकनि-

“ज्ञा की दग छहक । हम तैवा सुदि कहि तँ ले देल बहिअ । हमर ठाका रँकमे पड़न छह । तैवा रँष्टीक बिअ हमे काज आएन । हमरा जेन एँसँ पेश आँव कि हएत ।”

तैपर बिन्दे साह निहोवा करैत कहनकनि-

“कम-सँ-कम रँकैक सुदि तँ न२ निअ ।”

बुजुजी-

“तैहव रँष्टी हमर रँष्टी ले डी की ?”

बिन्दे साह-

“अहाँक ङुपकाव जिनगी भवि ले रिसवरै ।”

पककाँ रँनाथमे कगा मडनक रँष्टीकेँ सँग काँष्ट जेनक । पुवा गाम हनना भ२ गेल । बुजुजी कगाक घबपर जेनथि तँ देखनि जे नाव-फुक क२ छनि बहन छेले । बुजुजी ग थेना-रँना देखिते



कगारै कहलखिन-

“ए सत अक्षरिंसराममे ले पडल । जन्दी डाकूठव बागानन्द राबूक नग निर्मली नऽ जा ।”

कगो माडन कहलकनि-

“मा नि क हाथपव एकठो छदी ले अछि ।”

तेपव नुनुजी कहलखिन-

“केकवा मोठव मागकिनसँ उतए पहुँचल हम पाडूसँ पाग लाल अरै छिख ।”

कगो स्वर्णनक मोठव मागकिनपव रैठारै नऽ बागानन्द राबू नग पहुँचल । बोगारै देखि डाकूठव कहलकनि-

“अरैमे तँ रँड देवी भऽ गेलह । जन्दी दम हज्जाव जमा कबल । गनाज शुक कबरँ ।”

कगो कहलकनि-

“डाकूठव सहिरँ, अहाँ दर्राग टानु कऽ दियो । नुनुजी पाग नऽ कऽ जेघडि ले पहुँचल ।”

नुनुजी नाँ सुनि डाकूठव सहिरँ गनाज टानु कऽ देलखिन । नुनुजी सँ नीक जान-पहिचान छल । दमे गिठ पढाति नुनुजी अगला मोठव मागकिनसँ पहुँचल । राबल घँटी धरि गनाज टाना पढाति बोगी ठीक भेल । डाकूठव सहिरँ कहलखिन-

“आरँ ठीक छल बोगी । नऽ जा सकै छल ।”

कगो दूनु रापुत नुनु जीक पव पकडि काषए नगल । नुनुजी डाकूठव सहिरँकेँ पढलखिन-

“अगलक केते टाँज भेल ?”

डाकूठव सहिरँ राबल हज्जाव कहलखिन । एक हज्जाव छोडरैत एगलव हज्जाव देलखिन आ कहलखिन-

“कगो माडन रँड गविरँ अछि । एक हज्जाव छोडि दियो ।”

डाकूठव सहिरँ मनि गेलखिन । उतएसँ सत रिदा भेल ।

छल मास पढाति कगो माडन नुनुजीक कपेखा आपस केनकनि । नुनुजी हुँकोसँ एका पाग मुदि ले लेलखिन ।

एमाकी माघमे गोनरौक सुगव चलसव कामतक अन्नु कोडि देल बल । तगले चलसव गोनरौकेँ दम-पलबल नाँठी यावनक । गोनरौकेँ कगोव फुटि गेल । गामक किछ लोक गोनरौकेँ सिखा-पढ । चलसवपव मोकदमा कवा देलक । चलसवपव हविजल एकठ नलि गेल । आरँ तँ चलसवकेँ एनल भऽ गेल । पनीस पकडले वेड कबए नगले । एक बाति चलसव नुनुजी नग आरि कालेत कहलकनि- “सबकाव, अहाँक गग गोनरौ मनि जाएत । किएक तँ अही जमीनमे उ सत रँसन अछि । हमरा गोनरौसँ मोनल कवा दिख । अगल जे कहरँ से मागरँ ।”

नुनुजी कहलखिन-

“अच्छा, ठीक छै । हम गोनरौकेँ रँजा गग कले छी । तँ चिन्ता ले कबल ।”

बिगमले नुनुजी गोनरौकेँ रँजा सत रात रँमला कऽ कहलखिन-

“केस-सेहीदवीसँ किछ ले भेटैतल । तवा हम चलसवसँ दर्रागक दम आ केसक खटि दियो दग छिखल । दूनु गोठे मोनल कऽ लेल ।”

गोनरौ रँजन-

“मानिक, हम सत अही जमीनमे रँसन छी । अहाँ जे कहरँ हम सत सहए कबरँ ।”

नुनुजी चलसवकेँ रँजा दूनु गोठेमे गिनाली कवा देलखिन । केठे जा दूनु गोठे मोनल नगा लेनक । केस खाबिज भऽ गेल ।

ग्राम पंचायत चूणारक घोषणा भेल । पंचायत सतमे बिल-बिल पदक चर्चा-परिचर्चा हुँअए नगल । हमरो पंचायत छज्जामे अखिया पदक लेन रँमी चर्चा भेल । हम सत रिदाव केनो जे



दुधिया पदक जेन नुषुजी सभसँ योग्य उम्मीदराव छथि। से ले तँ हम सभ हुनके ठाठ कबरँ।
आमदीउ पठन-लिखन आ समाजसेवी छथि।

हम सभ नुषुजी नग ए रियसपव चर्चा केजौं। कहनि-
“देखु, ए पंचायतमे हमर जाति दसे घब अछि। अखुनका राजनीति जाति-पाति नर कर होगए।
तद्वमे पंचायत चुनावमे तँ आरो रेमी चले छै जाति-पाति। हमरा माफ कक अही सभमे सँ कियो
ठाठ होई। हम हब तबहँ मदति कबरँ।”

तेपव हम कहनि-

“अहाँक आगुमे सभ जाति-पाति फेन भर जाएत। हम सभ ले मासँ। अहाँकेँ दुधियामे ठाठ
कागए कर बहरँ।”

रँड उतसाहसँ सभ नुषुजी केँ दुधिया पद जेन लागिसेन करौनकनि। नुषु जीक लागिसेन
पढाति सोझित साह, मोहित कामत आ सुखदेर माडन सेहो दुधिया पद जेन लागिसेन करौननि।

दुजना पंचायतमे दुध कर्पसँ तीस जातिक रौनरौना अछि। जगमे तेनी, धानुक आ कियोठ
सभ छथि। मुक-मुकमे तँ नुषु जीक पक्षमे नीक हरा बहन। दुदा जौ-जौ समए रितेत गेन तौ-
तौ जाति-पातिक हरा रँहए नगन। किछ उम्मीदराव सभ रोठवकेँ चाह-जनथेक अनारेँ दकउ
पिअरँए नगन। अ सभ देखि नुषु रौरु रँजना-

“अहाँ सभ मिनि कर हमरा उम्मीदराव रँजौं। हम भोठक बाँपव एका पाग खर ले कबरँ। चाहे
हम ज़ीती अथरा हारी। हमरा ले ज़ीतक खुशी हएत आ ले हारिक गम।”

भोठक दिन अरैत-अरैत जाति-पातिक हरा आरो जेव पकड़ि जेनक। भोठे गिले दिन लोक
सभ बुँमि गेन जे नुषुजी चुनाव हारि जेता। किअक तँ खुलेआम भोठव सभ अपना-अपना जातिकेँ
भोठ दर बहन छन। सहए भेन, सोझित साह एक नम्रावपव, सुखदेर माडन दोसव नम्रावपव,
मोहित कामत तेसव आ टाकिस नम्रावपव नुषुजी बहना।

f



बिदेहक बिदेह

“रौखा, बिदेह कथनि निर्मली पहुँचत ?”

अ रात हमर राँरूजी हमरामँ पुढननि । हम कहनिगनि-

“दम रँजे ।”

राँरूजी हेव पुढननि-

“की बिदेह हेगन केल बहए ?”

हम कहनिगनि-

“हँ राँरूजी, दम फिण्ट पहिल सकरीसँ हेगन केल बहए । ओ निर्मलीरानी ट्रेणमे रँस गेन बहए ।

कहनक, दम रँजे धरि ट्रेण निर्मली पहुँचत ।”

राँरूजी हेव कहननि-

“ठीक छै, जमथे कइ लेह आ गाडी नइ कइ निर्मली टनि जाह ।”

“सएह कवरँ ।” हम कहनिगनि ।

बिदेह हमर पिसियोत भाए । आग ओ फ्लूइडसँ हमरा गाम आरि बहन अछि । कम्प्युटर गंजीनियब छथि । लोकबी जरागन केना छह मास पढाति पहिन रँव बिदेह गाम आरि बहन छथि, ओहो मामा गाम । ओ रँजन बहथि जे लोकबी बेठेना पढाति पहिन छुट्टीमे पहिल मामा गाम आरि मामा-मामी, भैया-भोजीसँ अमिबराद जेरँ तथनि अण गाम जा काका-काकी आ लोखासँ अमिबराद जेरँ ।

हम जन्दी-जन्दी जमथे कइ मोठेव सागकिनसँ निर्मली ईशिन रिदा भेलौ । नखए रँजे ईशिनपव पहुँच गेलौ । ठेण अरैमे घँषी भरि देरी छन । ईशिनसँ राँहले मोठेव सागकिन लेश्डीन नाँक कइ मोसालिबखानाक ब्रिण्टपव रँस गेलौ । हमरा पढिना राँत सभ मण पढि गेन ।

पढि कइ अँगना एलौ तँ दादी आ माएकेँ कलैत देखिनिधँ । सद्दछा गामक सूत्रिगण सभ आ पुकथो अँगनासँ नइ कइ दवरँज्जा तक भवन छन । हम किछु रूमरँ ले कवी । माएसँ पुढनिधँ-
“किअए कलै छी । की भेलौ लेन ?”

माए रँजनी-

“तौहव मदना रँना पीसा आ दीदी रँस दूवघँनामे मरि गेनखू ।”

हम पुढनिधँ-

“कैतए ?”

माए कलैत कहल रँजनी-

“ओ सभ रँससँ राँरूधाम जागत बहथिन । ल जागि केना सुनतान गँजसँ पहिल रँस एकठौ खदहामे थमि पडन । दम गोठे ओतूटे मरि गेन जगमे तौरो पीसा-दीदी बहथू ।”

हम पुढनिधँ-

“कै कहनकौ ?”

माए जराँ देनक-

“मदनासँ मोरौगनपव हेगन आएन छेलै । तौहव राँरू सागकिनसँ मदना गेनखू लेन ।”

दादी कलैत रँजनी-

“भगराण किअए हमरा एहेन दूख देनथिन । हम ज़रिठे छी आ हमर रँषी-जमाए दूनिगसँ उठि गेना । आरँ कै ओकरा मिया-पुतारकेँ पानत-पोसत, निखोत-पठौत, सादी-रिखाह करौत । एसँ तँ भगराण हमरा रँजा लैत डुँपव ।”

दादीकेँ सँतोख रँगहँत तिनारौरानी कहनथिन-

“सभ भगराण पुवा कवथिन । जे भगराण एते रँडका दूख देनक रएह पाव नषोतलिन ।”

दादीकेँ कलैत-कलैत दाँती नषि गेन छन । जमिजाति सभ दादीक दाँती छोड । पाणि पिण्डनक ।



हमर मदनारानी दीदीकेँ एकठी रैठी आ एकठी रैठी । रैठी दसमासे पठेत आ रैठी अठमासे । रैठीक नाँउ मीना आ रैठीक रिरक । रिरक हमवासँ णवबहे दिसक छैठ । दूनु भाए-बँलिन पठेये रँड चम्सगव । दूनु अणना-अणना किनासमे फसूट करैत । गामसँ एक किना मीठबसे मदलसब हाँग सकुन । ओहीसे दूनु भाए-बँलिन पठेत । मदनारना पीसा दू भाँग । णेना नान आ लना नान । हमर पीसा णेना नान जेठ आ लना नान छैठ । दूनु भाँग मागिजे । जेठ भाय णेना नान खेतीक काज देखैत जखेकि लना नान गामेमे किवाणा दाकाण करैत । दूनु भाँगमे पाँट रीयाक धतपत खेत ।

बाँरूजी छरिया दिस मदनारसँ आगम एना । बाँरूजीकेँ देखैते दादी पछाड खा खसि पड़नी । ठेन-पड़ सिक लोक सब जमा भऽ गेल । सब घँषाक बाँरत बाँरूजीसँ पछुए नगन । म्नीगण सब दादीकेँ समनारैए नगनी । दादी कलैत बाँरूकेँ कहनकनि-
“जीतू, हमर नाँ त-नातिण आरँ केना बहत । केँ ओकवा सबकेँ पठेत-लिखैत । केँ ओकव सरहक रिखाह-दुवागमन करौत ।”

बाँरूजी कनखिण-

“माए तूँ छिता जूनि कव । जेहेल हमर रैठी बाधे तेहेल हमर भागिण रिरक आ जेहेल हमर रैठी मीसा तेहेल भागिणी मीना । हम टाक भाए-बँलिनकेँ पठेत-लिखा रिखाह-दुवागमन कवाएरँ । ओना लना नानो पाहुण नीकेँ लोक छविण । ओहो आण तबहेँ भतिजा-भतिजीकेँ लेँ कवखिण ।”

छठम दिस बाँरूजी ह्यारो मदना रिदा भेना । तँ दादी कहनखिण-

“जीतू हमरा लेँत-नातिणकेँ सखुआ लल अरिहअ ।”

पीसा-दीदीक फिया-एमा पछाति बाँरूजी रिरक आ मीसाकेँ लल एनखिण । सगसे पीसाक भाए लना नान सेहो बहखिण । रिरक मीना आ लना नानकेँ देखैते दादी ह्यारो काणए नगनी । लना नान मीना आ रिरक सेहो काणए नगन । बाँरूजी सबकेँ टुंग केनखिण । तेसब दिस लना नान पीसा मदना रिदा भेना हुनकव करँ बहनि जे हम अणल वधि भतिजा-भतिजीकेँ पठेत-लिखाएरँ । जखेकि दादीक जिद बहनि जारै धरि हम जारै लेँत-नातिणकेँ अणना नग वाखरँ आ पठेत-लिखाएरँ । लना नान पीसा रँजन छना-

“हमरा गौआँ-समाज की कहत । ओ सब बँग-बँगक कर्पीटाँन कवत ।”

अँतमे निर्णय भेल जे मीना मदनासे बहत आ रिरक मातिकसे बहि पठेत-लिखत । जखनि लना नान पीसा सागकिनपर मीना बँलिनकेँ रैसा मदना रिदा भेना तँ ओ रौम हाँडा कऽ काणए नगना । हुनका कलैत देनि अँगनासे सब काणए नगन । दादी बाँरूजी अणलकेँ समहारैत सबकेँ टुंग केननि । लना नान पीसा रिदा हाँग काण दादीकेँ गोड नागि कहल बहखिण-

“माए, जेहेल जीतू अहाँक रैठी तेहेल हमरँ अहाँक रैठी छी । हमरा अमिबराद दिअ । जे हमवासँ हमरा भतिजा-भतिजीकेँ कोणा आण तबहेँ लेँ हाँग ।”

रिरक हमरे अँठाम बहि पठेत नगन । हम दूनु गोठेँ एरँ किनस अठमासे बनि । दूनु गोठेँ संगे-संग णवहिया हाँग सकुनसे पठेत जे नगलौँ ओ हमरा भाँगजी कहँ आ हम ओकवा रिरक रौआ कहँ छिँ । रिरक पठेये चम्सगव तँ बहरेँ कव जे मेहनतियो बहँ । मैथीक पबीष्कामे रिरक अमनी प्रतिभेत क्कव अणल बहँ । हमरँ सकुण्ड डिरिजनसँ पास केरौँ ।

रिरक सँम सागस कौलेजसे नाँउ लिखौनक आ हम निर्मली कौलेजसे पठेत नगलौँ । रिरककेँ मैथिँ सकाँनकनीप भेठँए नगन । लना नान पीसा रिरकक पठेत-लिखाकेँ कोणा कोतली लेँ केनखिण । रिरक हमरा रँवरँरि छिँ लिखँ । अँ रीट मीना बँलिन पारती महिना कौलेजसँ आगँए फसूट डिरिजनसँ केनक । बाँरू आ लना नान पीसा मीना दीदीक रिखाह एकठी पंचायत शिककसँ तँग केननि । नडकीक प्रतिभा देखि नडाँ कारँना रैसा कपेआक माँग-टाँग लेँ केननि तथापि लना नान पीसा रँड धुम-धामसँ भतिजीक रिखाह सगल केननि । हम आ रिरक मीना बँलिनक रिखाहसे लोकनियाँ गेल



बही । मीना दीदीक नगदि हमरा दुनु भाँगेके रँड तंग केल बहए । खेलागए रँव हमरा सभकेँ डुगलेसँ वंग दऽ देल बहए ।

गाँठबक पबीक्षामे रिलेक रिवामी प्रतिभेत अक अलनक । हमरो गाँठबमे हफसँ डिभिजन भेल । राँवुजी आ लषा नाग पीसाक रिटाव भेलनि जे रिलेककेँ गँजीमिगक कम्पीटिशनक तैयारी लेल पठनामे बाखन जइए । सएह भेल । रिलेक पठनामे बहए नगन । गाँठब केनाक अगिना मान ओ आग.आग.पी.क प्रतियोगिता पबीक्षामे पास भेल । पढाति कडकीमे नाखाँ लेखोनक । गँजीमिग कौलेजमे रिलेककेँ फेरो मेविठ स्कॉलरशिप भेटेल । जगसँ लषा नाग पीसाकेँ भाव कमन ।

ए रीट शिक्षक निरयोजन लेल रिलेक सबकाव रिक्तापन निकानन । हम आ मीना रँहल दुनु गोठे पचायत शिक्षकक पदपत्र चयनित भऽ लोकवी कबए नगजौ ।

समए रिलेक देवी ले नले छै । रिलेक गँजीमिगक हागलन पबीक्षामे पचासी प्रतिभेत अक अलनक । ओकब क्लेमस सलेकमिण भेल । क्लेमसक एकठाँ पौघ कम्पनीमे लोकवी भेटेलै । लषा नाग पीसा मिठाग नऽ कऽ सखाँ एना । राँवुजी सफुटा गामे मिठाग रँहल बहनि ।

गाड १ सीठीक अराज सुनिते हमर मिगन छुँठन । गाड १ रँशिनपव पँहुट गेल छन । हम हवरँड । कऽ उठलौ आ रँशक डिर्वा दिस रँहलौ । यानी सभ डिर्वासँ उतबए नगन । हम रौगी सभमे रिलेककेँ तकए नगजौ । तखल एकठाँ थिडकीसँ अराज आएन-

“यौ भायजी, यौ नगद भायजी ।”

हमरा हूअए नगन जे तँ रिलेकक अराज छी । हम मरुकि कऽ ओग थिडकी नग जेलौ तँ रिलेककेँ रर्थपवसँ समान उतारित देखलौ । हमरा देखिते रिलेक रौजन-

“भायजी, गोड नले छी ।”

हम कहलिं-

“नीके बहए ।”

सभ यानीक उतवना पढाति हम रँशमे चढलौ । रिलेक हमर पएव डुरि गोड नगनक । हम ओकवा भवि पाँज पकडि ड्यारीसँ नगा जेलौ । रिलेक थुडनक-

“मामा-मामी सभ कशेन डखि ल ?”

हम कहलिं-

“हँ, सभ ठीक डखि ।”

रिलेककेँ एकठाँ रँडका शुकुमे, एकठाँ रँग आ एकठाँ कहुँन छन । हम रँडका शुकुमे उठलौ । ओ रौजन-

“भायजी, अहाँ डोडा दियो । हम रँगे आ शुकुमे नऽ नग छी ।”

हम कहलिं-

“शुकुमे तँ भावी रँमाग छह । जे हमरा नरँह । तँ रँग नऽ लेह ।”

ओ कहनक-

“ले भायजी, अहाँ हमरासँ पौघ छी । तँ अहाँकेँ हम अगल समान केना उगहए देरँ । जे डोडका काहुँन अहाँ हाथमे नऽ लिख ।”

हम केतरो पबिसास केनौ क्लेम तैयो ओ रँग आ शुकुमे हमरा ले लिखए देनक । अगलसँ दुनु समान नऽ मोठेव सागकिन तक अलनक । मोठेव सागकिनपव समान सभ रौनहि हम दुनु तैयारी किमिण हेठेन आरि जनथे केनौ केतरेँ चाहलिं क्लेम जनथेक पाग हमरा ले दिखए देनक । जनथे पढाति हन आ मिठाग कीनि हम सभ गामपव एलौ । अगल मामा-मामीकेँ गोड नागि रिलेक नानीक सावा नग गेल । हाथ-पएव ढोड नानीक सावापव माथ रँके प्रणाम कऽ अँगना आरि मामाकेँ कहनक-

“मामा यौ, अखल खेलाग था हम भाय जीक सँगे मदना जइएँ । ओतए काका-काकीकेँ प्रणाम कऽ माए-राँवुक सावापव माथ रँके मीना दीदी ओतए मेनाम चलि जइएँ । बातिमे मेनामे बहि जइएँ ।



काहि बोले मदना आएँ आ हब सॉम धरि सखुआ । दु दिन सखुआमे बहि हब आपस मदना छि
जाएँ । ”

माया कहनथि-

“बैड नीक रिटाव छह । ”

बिरेक सब कोगले कपड । लल आएन अछि । मुठकेने थोनि सबकेँ कपड । देनक । हम दुनु भाँग
थेलाग था मदना गेलौ । मदनामे बिरेक सबकेँ प्रमाणा-पाती क२ माए-बाँरुक सावापव माथ छैकि
सहबैत आँधि अँगला आएन । लला नान पीसा बिरेककेँ भरि पाँजमे पकडि डारीसँ गेलौनथि ।
हूको आँधिसँ दहो-रहो नावे जागत बहनि । बिरेक काका-काकी, भाए-बहिन सब कोगले कपड ।
अलल बहए । सबकेँ कपड । देनक । दु नाथक ड्राप काका नामे रुमरुँअँ अलल छन । लला नान
पीसाकेँ दैत कहनक-

“एकवा रौकमे जमा क२ जेर । सपताह भविमे खातामे पाग छि ओत । जे खेत सब भवला नगन
अछि से सभठा जोड । जेर । आर जौ अलल हूकम करी तँ हम सब मीना दीदीकेँ उँठै केल
आरी । ”

लला नान पीसा कहनथि-

“अरसमे जाह । रुदा वातिमे आर ओत बहि जगहअ । मेनाम दुव अछि ओतअसँ वातिमे एलाग ठीक
ले हेतह । ”

हम मोछे गेलौ, केतेक नीक अछि । बिरेकक बिरेक... ।



राडीक पठुथा

डाकुठव प्रमोद कनकता मेडिकन कोलेजसँ एम.डी.क डिग्री नऽ गाम एता । गाममे पिताजी आ मित्र सभसँ कृनीक खोलैक रिटाव कवए नगना । मित्र सभ नहेरियासवायक रिटाव देनकनि । दूदा पिताजी कहनकनि-

“नहेरियासवायमे तँ एक-पव-एक डाकुठव सभ अछि जे रोगीक गनाज करैए । किछ डाकुठव मेरा-भारणसँ गनाज करै छथि तँ किछ सोनहणी पेशी रँलल अछि । वंग-वंगक अठस करैत कहत जे हम डाकुठव छी आकि अहाँ । जे कहै छी से कक ले तँ... । सोरहारिको छै ७७ रिभागक तबी-घटी, गीक-रँजाएक त्रण आमारै छै गहो ले । तँ सोनहणी सुतवरो करै छै । से ले तँ गाममे कृनीक खोनन जे सागाजोकेँ नात हेते आ तोरो जिनगीक महत बहतह ।”

डाकुठव प्रमोदक पिता अर्णत प्रसाद समाज मेरी रँकती । सरँहक दूख-सुखमे रँग बहए रँजा । केतेको मबीज सभकेँ नहेरियासवाय नऽ जा गनाज कवा अलल छथि । तँए लिका सभ गपक तजुवरो छथि । डाकुठवकेँ भगरण रँने छथि दूदा डाकुठवो तँ वंग-रिबंगक अछि । सेहो हर्क करैत बँह छथि । प्रमोदकेँ डाकुठवी पठर रँक उदस छेननि जे गाम-देहातमे समेपव गनाजक अतारसँ केते लोक कान-कनरित भऽ जागए । तँए देहातमे डाकुठव जकवी छै । ७ केतेको डाकुठवकेँ आग्रह सेहो केनथि दूदा क्रियो तैयार ले भेननि । दूदा डाकुठव प्रमोद तँ अपन खुन छिननि । हुनकापव अर्णत प्रसादकेँ तँ पुवा अरिकाव छथि । ७ना डाकुठव प्रमोदोमे पिताक ग्ना-रँरहाव छथि । जथनि ७ मेडिकन कोलेजमे एम.डी.क पठ १७ कऽ बहन छना तद्द समेमे केतेको मबीज सभकेँ मदति केल बहथि । अर्णत प्रसादक कहँ बहनि जे रँवमेमे कृनीक खोनन जाए । दूदा रँवामे तँ खुन, नगनी, पेशाणा गत्यादिक जाँटक तँ सुनिवा ले अछि तँए सरँहक रिटाव भेन जे प्रमोद निरुनीमे कृनीक खोनता आ सगताहे-सगताह रँवामे समए देथि । अर्णत प्रसाद प्रमोदकेँ कहथि-

“रँीआ, मेराक भारणसँ मबीजक गनाज करिहअ । भगरण अलीमे रँड कृति देखु । एकव मतनरँ जाहो ले जे सोनहणी ह्णकठेमे गनाज कवरँ । अपन उँटित हलिस नऽ रोगीक गनाज करिहअ । तल्लिा उँटित दरँगओ आ जाँटो कवरँहक ।”

डाकुठव प्रमोद कहनकनि-

“सएह कवरँ रँरँुजी ।”

निर्मनीमे कृनीक खोनना छह मास ले रितन हएत । परोपञ्चामे हुनकव नठुक उँका रँजए नगन । रोगी आ रोगीक सरँरुी सभ डाकुठव सहिरँकेँ जमे दिअ नगननि । जगदगवसँ जगदगव नि रँवावी डाकुठव सहिरँ ठीक केनथि । सभसँ पौष रँत ७ जे गवीरँ रोगीक गनाज रँिष हिनमेक करै छथि । दरँगओ ह्णजोन ले निथे छथि तँए रोगी सरँहक तीड नगन बहलैए । बरि दिन छह रँजिया ट्रेण पकडा वागी देखए रँवमा छलि जाग छथि । ओतो रँहुत रोगी सभ बँहत अछि । सभ रोगीक गनाज कऽ बहका ट्रेणसँ आपस निर्मनी छलि अरँ छथि । रँवामे रँसी रोगी बहनापव कथला कान अँठकेँओ पड छथि ।

डाकुठव सहिरँक पिताक मित्र छथि रँगणु प्रसाद । ओहो रँवमेक रँसी छथि । अर्णत प्रसादक रँगोष्टिगा रँगी । डाकुठव सहिरँ रँगणु प्रसादकेँ रँड गज्जति करै छथि । प्रीसः सभ बरि रँगणु प्रसाद डाकुठव सहिरँसँ छँट कवए कृनीकपव आरँ जाग छथि । डाकुठव सहिरँ हुनका चाहो-गान कवरँ छथि ।

आग बरि छी । आरँ रँजे धरि डाकुठव सहिरँ रँवमा कृनीकपव पडूतत । ७ गप सभकेँ रँमन छथि । हम टोकपव चाह पीअत बनी । देखै छी जे रँगणु प्रसाद आ हुनकव पुतेहु आ पोता



बिक्रमिणव रैस तद्दबिया दिस ज्ञा बहन छथि । हम नग ज्ञा पुढलियनि-

“मंगणु रौरु अणल लोकि केतए ज्ञा बहन छिथ ? ”

मंगणु प्रसाद कहनि-

“तद्दबिया ज्ञा बहन छी । द्रैण पकडि नहेबियासबाय ज्ञाएँ । गोपानकेँ मण खबारि छै । ”

तेपव हम कहलियनि-

“आग तँ बरि छी । डाकूठव प्रमोदो एरै कवता । हुनकासँ एक रैव देखा दैतिथ । गनाज तँ ओहो गीकू करै छथि आ रँचुटे रितागक छथिओ । ”

मंगणु प्रसाद कहनि-

“छोडू, हमवा नहेबियेसबाय ज्ञाए दिख । हम गाम-यवक हएबमे लै बहए चाँ छी । ”

ज्ञा कहि ओ बिक्रमिणवकेँ गशिवा दैत रिदा भऽ गेला ।

आठ रँजे डाकूठव प्रमोद कृमिकणव पहुँचना । हमरो रँड प्रेशिब जँटेरौक बहए तँए हमहुँ ओते बही । हमवा हूँसँ अनासुवती निकलि गेन-

“तद्दबिया प्रीमिणव मंगणु भेठेरौ केना । ”

डाकूठव सहिरै कहनि-

“लै तँ, से की ? केतए गेना लेश गिता काका ? ”

हम कहलियनि-

“गोपानकेँ डाकूठवसँ देखेरौले नहेबियासबाय गेना लेश । हम कहरौ केलियनि अहाँ दऽ जे एरै कवता । हूँदा कहनि जे छोडू, हमवा नहेबियेसबाय ज्ञाए दिख । ”

डाकूठव सहिरै रँजना-

“ज्ञाए दिगु । ”

नहेबियासबायमे मंगणु प्रसाद अणला गोपानकेँ डाकूठवसँ देखेनथि । डाकूठव सहिरै तीण सए हणिस लेनकनि । दु हजावक जाँट आ छह सएक अरुद्रैसाङ्गुड लिखनकनि । जाँट-पवतानक पढाति दु हजावक दर्राग लिखनथि । अदहा दर्रागसँ रैसीए दर्राग चनलोणव गोपानक प्पेठक दवद ठीक लै भेन । तथनि हारि-थाकि कऽ डाकूठव प्रमोद नग निरमली नऽ ज्ञा कहनथि-

“लै डाकूठव, नहेबियासबायमे चाबि हजावसँ रैसीए खट भऽ गेन हूँदा गोपानक दवद कनियोँ उरैस लै भेन । से कणी देखहक । ”

डाकूठव सहिरै गोपानक सभ्ठी जाँटक पुर्जा देखनथि । नहेबियासबायक डाकूठव सभ्ठी पठनियाँ दर्राग लिखल बहै । जाँटो अणाप-सणाप कवरौल छेलै । से सभ सभ देखि डाकूठव प्रमोद नहेबियासबायक सभ्ठी दर्राग रँन कऽ मात्र दु सए ठाकाक दर्राग लिखनथि । तीण दिस दर्राग खेना पढाति गोपानक दवद ठीक भऽ गेन ।

अणिना बरि मंगणु प्रसाद रैकामे डाकूठव सहिरैक कृमिकणव ज्ञा भेठै कऽ तावतमा कहनकनि-

“लै, हम तँ नहेबियासबाय ज्ञा ठका गेलौ । तौहव लिखनाल दर्राग तीमिए दिस खेनाणव गोपाना प्पेठक दवद सौनहणी ठीक भऽ गेन । ”

डाकूठव सहिरै मंगणु प्रसादकेँ कहनथि-

“लै काका, हम तँ राड ठीक पहुँआ छी । जे तीत सभ दिससँ लोगत बहलै लेश । ”

मंगणु रौरु किछ लै रँजना ।



अकृब र्छे

बामरुमार चर्षिया सभकेँ पठ । अँगना एना तँ पनीकेँ कलेत देखननि । देखिते ओ अकरका गेना ।

पुढनखि-
“की भेन ? ”

पनी कनिते कहनकनि-
“छिठेनीसँ राँबुजी हेलन केले बहखि, माएकेँ नकराँ मारि देनक । रँजुरी-तुकराँ ले कले छै ।”

बामरुमार पुढनकनि-
“कहिया नकराँ मारनक ? ”

पनी कहनकनि-
“पबनु बातिमे । राँबुजी रँजे छेनखि जे रँटत कि ले तेकब कोला ठीक ले । अगना सभकेँ पबनु

बातिमेसँ हेलन नगरै छेनखि दूदा हेलन ले नगननि ।”

बामरुमार रँजन-
“तखनि तँ आगए छिठेनी जए पडत । माएक उमेरो तँ अस्मीसँ कम ले हेतनि । कासे ठीक कखनि

चलि जेती । चनु दस रँजिया रँस पकडि नी । ओना तँ गहूमक दोषी कवरँ जकरी अछि । बहि-बहि क२ मेघ अरै छै । जँ रँवखा भ२ जाएत तँ रँमु गहूमक थिजालेत भ२ जाएत । प्रेसवरँना शिमत कक्का नाँ कहेल बहखि । दूदा अगना ले बहले दोषी केना हएत । शँतकेँ हेलन नगा कहि दग छिननि जे हम कान्हि ले बहरँ अण्त्तए जा बहन छी । ओतएँ एना पछाति दोष कवाएँ । अछा जे हएत से हएत । माएक जिन्दासँ कवरँ तँ जकरीए अछि । हुनका सभकेँ के छुनहि । एकठा रँठे छुनहि जे पठनामे डाकृवी करै छुनि, परिवार न२ क२ ओतए बहे छुनि ।”

छिठेनीरानी रँजनी-
“एकठा काज कर, खेखनाकेँ रँजा गहूमक रोम कविया दियो आ उँपवसँ तिवगान ओना माँपि दिओ ।

रँवखा हएत तँ लाकमान ले हएत । छिठेनीसँ कहिया आएँ तेकब कोल ठीक ।”

बामरुमार कहनकनि-
“ठीके कहे छि । तिवगान तँ अछि कनी मेहनति कवए पडत । दसरँजिया रँस ले पकडि

रँवहरँजिया पकडए पडत । गहूम माँपन बहले चिन्ता ले बहत ।”

सएह केननि । गहूमकेँ सेबिखा माँपि देन गेल । गौरकेँ पड मियाक जिम्मा नगा, घबमे ताना मारि दूनु पवानी रँठेकेँ न२ छिठेनी रिदा भेना ।

बामरुमार एकठा छेठ किमान । मात्र दू रिया खेतक मानिक । ओना तँ एम.ए. पास छुनि । दूदा रँवोजगार । कतेको रँव सबकारी लोकबी जेन परिवारो केननि दूदा एँ जुगमे भगवान भेठेँ अमान अछि दूदा सबकारी लोकबी कठिन । की कवता, खेतीक अनाँ चर्षिया सभकेँ छिशन पठ । कोला धवानी अगन गुजब करै छुनि । परिवारमे मात्र तीनि गोठे । दू पवानी अगना आ एकठा दस रँथक रँठे कनहिया । मात्रो जानक नाखाँपेव एकठा मात्र गोब । पनीओ मर्यादा पवीक्षा पास केले दूदा उँलो रँवोजगार । लोकबी हेरौ केना करितनि । जखनि री.ए., एम.ए.रँना सभ नख मारैए तखनि मैथ्रिक-मर्यादाक कोल गप ।

छिठेनीरानीक पिता बरि काशत जमाणाक मैथ्रिक छुनि । हुनका एकठा रँठे आ एकठा रँठे । रँठेक नाखाँ * फुन रुमार आ रँठेक सुनहो । बरि काशत बजियुँदी आहिसमे दूनीक काज करै छुना । पहिले तँ हुनका पाँच रिया खेत छेननि दूदा आँर घवाड कि अनाँ मात्र दस कष्टी रँटन छुनहि । रँठे फुन रुमार पठना मेडिकन कोलेजमे डाकृव । लोकबीक अनाँ खानगीओ कनीक खोनल छुनि । प्रायः पाँच हजारक आयदनी भवि दिनक छुनहि । दूदा एक नयाँवक मरुथीदुस आ अरँरनविक । रँहिन-रँहनासँ कोला सरोकार ले । माए-राँबु हेलन-पव-हेलन करैत बहे छुनहि दूदा



हूकका जेन वैगमन । गाम एरौ केशा कवता । कमातीमे चाबि दिन तँ नगते जे रीस हजावक
अ मादनीपव पाणि झेपडत, कहरौ तै रौग रँडे ले मोगा सभसँ शैव कपेखा ।

मनअनहारीमे वाम फुमार पबिरावक संग मान्नुव पहुँचना । गामक रीटमे सुचित्राक पिताक घब ।
अंगनामे पट्टिमसँ पुरि दूहेँ एकठाँ उ दोसव घब पुरिसँ पट्टिम दूहेँ । गँठाक देरौन आ डुपकर्म
खण्ड ।। अंगनाक उँतव आ दड्डिमसँ देरौन दइ घेवन । उँतवरबिये कातसँ अंगना एरौ-जेरौक
बसता । दड्डिमरबिया देरौनपव एकटावी जगमे भागमे-भात होगए । पड्डिमरबिया ओसावपव टोकी जगपव
सुचित्राक माए सुतन छेनी । बरि काण्त् रूठिीक पाँजवमे रैसन छना । ओसाविक कोबोमे नानठेण
ठँगन छन ।

वाम फुमार सुचित्रा आ कण्हया अंगना पहुँचना । सभ गोठे बरि काण्त्क पएव डुरि गोव
नगनकनि । सुचित्रा रैठी जमाए आ नातिकेँ देखि बरि काण्त्क ड्यारी सुप सनक भइ जेन । ओ फुवसी
आनि जमाएकेँ रैसले कहनकनि । सुचित्रा माएक पाँजवमे जा रैसनी । बरि काण्त् चाह रँगरैले छुहि
पजावए नगना । वाम फुमार कहनथि-
“रौरूजी, अथनि चाह रँगनाग ड्योर्डा देखुन पहिल एतए आरूथु ।”

माएक पाँजवमे रैसन सुचित्रा माएकेँ निहनेरौत रँजनी-

“माए, माए । माए छी, माए ।”

“माए, माए । माए छी, माए ।”

दूदा रूबलीक शीबोमे कोला हवकति ले भेननि । सुचित्राक अथिसँ दहो-रहो लाव जाए नगन । हूकव
रौरूजी कहनथि-

“छी रँताहि । आरँ माए थोड्के रँजतो । दु-चारि दिनक मेहमान छियो । पवसु बातिमे जे खसलो
से खसलो छे । कथला-कथला अथि टाक दिस तके छे । ठोबो पठपठरै छे दूदा दूहसँ अराज ले
निकनि परै छे ।”

पिताक रात सुनि सुचित्रा रौम फाडि काणए नगनी । वाम फुमार सन्नुवसँ पुछनथि-

“डाकूठव तैयारकेँ हण ले केनथि ?”

बरि काण्त् जराँ देनकनि-

“पवसुए जथनि अहाँ मान्नु गिवन तखल हुनरौरूकेँ हण केनौ तँ ओ कहनक, अथनि रँड रिजी छी, यँठी
भरि पडाति हण कवरँ । अहाँ सभकेँ नगेलौ तँ सुगट अँफ कहनक ।”

वामफुमार कहनथि-

“हँ पवसु मोरौगनक रैठेवी चार्ज ले बहए । की कहरनि, हमरा गाममे ले रिजनीए छे आ ले
जेनकेँले । नवहिया ले तँ निर्मनी जा मोरौगन चार्ज कवरै छी । कान्हि निर्मनी जेन बहिँ तँ
उतग चार्ज करौनिँ । अछ्छा तँ, बातिमे डाकूठव साहरिसँ रात भेननि ?”

बरि काण्त् कहनथि-

“बातिमे हण नगेलनिँ तँ सुगट अँफ कहनक । तिसव भेले जथनि हण नगेलौ तँ कनियाँ उँठरैत
कहनी जे अथनि एकठाँ बोगीमे नागन छथि । रावह रँजे कवीरँ हण कवए कहनी । रावह रँजे हण
केनौ तँ हुनरौरूसँ गप भेन । कहनक, कोला डाकूठव रँजा माएकेँ देखा दियए आ डाकूठव जे कहता
से हमरा हणपव रँताएरँ । जेँ पाग-कोडिीक अँतार हूअए तँ तारैए गँजाम कइ काज कवरँ पडाति
हम पठा देरँ । टोकपव सोम आ शुक्र दिन एकठाँ डाकूठव अँरै छथि । उला तँ हूकव कनीक
सिमावानी रँजावमे छुहि दूदा हाँठे-हँठ कमा जीक दरौग दोकापव बोगी सभकेँ देखे छथि ।
कान्हि सोम बहल डाकूठव साहरँ नग जेलौ तँ देखनिँ मारि भौड । बोगी सभकेँ देखेत-देखेत
साँम पडा जेननि । सिमावानीओ जेरौक बहनि । दूदा बमाजीकेँ कहनिथि तँ डाकूठव साहरँकेँ
कहनथि जे लिको रैठी डाकूठव छथि तथनि हमरा एँठाम एना । आना नगा देखनथि, रँनडपेसव
सेहो जँचनथि आ कहना जे रँडन छुहि जगसँ नकरौ मारि देनकनि । दरौग सभ निथि कहनथि



चनए दियौ । कानहिँ आग धरि दस रौतन पाणि चढ़ा गेननि दूदा कोला सुबाव ले भेननि । खानी कखला-कखला आँधि तकेत बहे छथि जेना केकरो खोजेत हुँए । ”

अ कहत कहत बरि काण्ठकेँ बूकोव नणि गेननि । आँधिँ छँप-छँप लाव सहबए नगननि । पितारकेँ कलेत देखि सुमित्रा सेहो काणए नगनी । बामफुमार हमारो प्छनकनि-
“डाकूँव तैयारकेँ हए हएण केनियनि आकि ले ? ”

बरि काण्ठ कहनथि-

“बातिमे हएणपर सभ रात रौतैनि । तैपर फुनरारूँ कहनक, कानि दू रौजे सिमवाही ज्ञा डाकूँव सहिरकेँ सभ रात कहिक । दूदा अणामँ फुनरारूँ हएण कए माएक हावति ले प्छनक । जेते रौव हएण केरौँ हमी केरौँ । ”

रिदुटेमे सुमित्रा पितारकेँ प्छनथि-

“बौजौँ ल हएण केनक ? ”

बरि काण्ठ रौजनी-

“लौँ रौताहि, जौँ अणम जन्मन ले प्छनक तँ आणक कोण रात । तौवा तँ सभ गण बूमने छौ जे केते कठिनसँ ओकवा पठ-लौँ । ”

सुमित्रा रौजनी-

“से कोला हमरा ले देखन अछि । अहाँक कमागसँ पुवा ले भेन तँ माएक सभ्ठा गहना-जेरब रौँटि कए दए देनियनि । तहसँ ले भेन तँ जमिला रौँटि दए देनियनि । हँ तँ सिमवाहीरना डाकूँव नग गेलिँ तँ ओ की कहनि ? ”

बरि काण्ठ रौजनी-

“कहननि जे नकरा मावले छनि । उमेरो अमसूसँ उंगले छनि से आरि उठरौँ मोसकन छनि । अणना ज्ञानि जे सेरा कए सकरनि से कवियन । ”

बातिमे खानपुवराणी सरहक खेलाग रौलोकक । खेलाग था बामफुमार आ बरि काण्ठ सुतेले चलि गेना । सुमित्रा माएक पाँजवमे रौसन छेनी । बातिम एगावह रौजे बूँठीक शीबबमे हबकति भेन ।

आँधि तकि रौजनी-

“रौँआ ले आएन ? डाकडव रौँआ ले डाकडव रौँआ ? ”

सुमित्रा छैकनकनि-

“माए हम छियौ, सुमित्रा गोव नछौ छियौ । ”

“के, बूँटी ? कखनि एनँह ? पाहूँला एनखुँल हें ? ”

“हँ उँहो आएन छथि आ कन्हियौ आएन अछि । ”

तखल बरि काण्ठ एनथि आ बाम फुमार सेहो ।

“गोव नछौ छियनि माए । ” बामफुमार बूँठीक पएव छरौँत कहनथि ।

“शीकूँ बहथु । जूँग-जूँग ज़रैथु । डाकडव रौँआ ले आएन । आरि ओकव दूँह ले देखरै । गौताक देखेक सिहता लणहि मरि ज़रै । ”

बामफुमार कहनथि-

“हिनका किछु ले हेतनि । हम तिनसले डाकूँव तैयारकेँ हएण कए गाम रौँजाएँ । ”

बूँठी कहनथि-

“अच्छा । ”

अच्छा कहिते बूँठीकेँ लिचकी उठननि आ गवदनि सिमवापरसँ गिब पडन । सुमित्रा माए-माए कहित काणए नगनी । बामफुमार बूँठीक शीब देखेत रौँजनि-

“माए चलि गेली । ”



शाल्कसव रैठी

गाम नाँउ योआहा । जिना सप्तरी । लपान अर्धिवाज्य । रैम नमठगव गाम । रौबहो रर्णक लोकक रैमोरौस करैरौना गाम । उग गाममे एक ठोठेक नाखाँ रौदी बाँउत । हुनकर उमेव नगधग अस्मी रैबथ । पाँट हाथक नमठग मवद । श्याम रर्ण । मेहनती आ मरातिमानी रैकती ।

हम अगना गाम जेन भैठै मागध योआहा गेन छैजौ । मया लपानक सर्निवाष सत्राक मदन्याक जेन ठाठ भेन छना । उरी एमामे हमरा बाँउतजीसँ भैठै भेन छन । जखनि हम आ हमर दुगो मंगी बामरौरु आ गिबिस सत्र कोण बाँउत जीक दवरैज्जापव पहुँचौ तँ उ ओते छना । हमरा सत्रकेँ रैडखातिव रौत केननि । अगना पौताकेँ रैजा जह पिठनि । हम हुनका अगन गामक जेन भैठै मगनिमनि तँ उ कहना-

“जे नीक लोक हएत तिनका हम जकव भौँ देरौ ।”

वातिमे हमरा सत्रकेँ ककरौक जेन आग्रह केननि । हमहुँ सत्र सोचौ, एतएसँ रैमिसनि रौबह किना मँठव अछि । उतए जगसँ नीक हएत वातिमे एते ककि आरौ भैठैव सत्रसँ सम्पर्क करी । हम बाँउत जीकेँ कहनिमनि-

“हम सत्र अही एठाग वातिमे ककरौ, भोजनो कवरौ आ अवायो कवरौ । तारै हम सत्र भैठैवसँ सम्पर्क करैजे गाम घुमे छी ।”

बाँउतजी कहनि-

“सरौले आरि ज्ञाएरौ ।”

हम सत्र आरु रैजे वातिमे हुनका उगठाम पहुँचौ । उ हमले सरहक रैठ तकि बहन छना । हमरा सत्रकेँ पहुँचते पौताकेँ हाक दऽ गनि अलेजे कहनिमनि । हम सत्र हाथ झूह थौलौ । बाँउतजी अगना पौताकेँ कहनिमनि-

“हिनका सत्रकेँ जन्दी भोजन कवा दहुन । तुख नगन हेतनि ।”

किहुए कान पछाति हमरा सत्रकेँ अगन नऽ गेना ।

भौतक देरौन आ उंगव खपड सँ छानन घब छन । अगना आ उमावा रैड टिकन-चूमन छन ।

पठरविगा उमाविगव हमरा सरहक भोजन जेन कमरौनक आसन नगौन छन । हम सत्र भोजन केरौ ।

जारै धरि हम सत्र भोजन केरौ तारै धरि बाँउतजी अगल रैसन बहना आ पौताकेँ कहि हमरा सत्रकेँ पवमन-पव-पवमन दिया खुँअरैत बहना । हम एक रैव हुनकासँ भोजनक आग्रह केनिमनि तँ कहना जे हम पछाति कवरौ । भोजन पछाति हम सत्र दवरैज्जापव आरि गेलौ । किहुए कान पछाति बाँउतजी भोजन कऽ हमरा सत्र नग आरि कऽ रैसना । हम हुनकासँ परिवारक रिषयमे चर्चा

कनिमनि । उ जे अगना परिवारक रिषयमे कहनि उगसँ हुनक रैदना रूमहनिमनि । उ कहना-

“रौआ, हमर रौरुजी हमरा मात्र दु रीया खेत दऽ गेन छना । हम दुध रैटि आ तवकावी खेती कऽ

आग दऽ रीया जमीन रैललौ । हमरा तीन्ठा रैठी आ एकठा रैठी अछि । रैठीक रिख ह भऽ गेन

अछि । जमाए मसठव छनि । एकठा रैठी गिबहन्त आ एकठा प्राहमव अछि । छैठका रैठी री.ए.पाम

कऽ गामे धनकछी मीन चनरैए । प्राहमव बाजुरिवाजमे मकाण रैलल अछि । लोकौ रैद ओते बँह

छै । एकठा प्रेस सेहो चनरैए । कपेआक नीक आमदनी छै ।”

तेपव हम पुछनिमनि-

“रौआ, प्राहमव सहिरै तँ तैगारी सत्रकेँ मदति करिबे हेथिन ।”

तेपव बाँउतजी कहना-

“रौआ, से जूमि पुछ । दुनियाँमे कोण केकरो ले छिथ । लोक केते दुख काँठ रौन-रैट्टाकेँ

पठरैए । ह्दरौ जखनि रैठी कमाए नलौ छै तँ सत्रा रिसवि जाग छै । लोकरेदक अनारै किहु

नजकिपव ल चठ छै ।”



पुढुनियनि-

“से किअए कहे छिअ, अहाँ ?”

बाँउतज्जी कहना-

“जखनि हमर ममिना रैथी दबउंगामे पढत बहए तखनि जेठका भाय हब जोति ओकवा देनक । जखनि पाग घटि गेलै तँ एम.ए.क फाकवा भले कान जेठकी कनियाँ अगल हौसनी रंगक नगा पाग पठेनक । जखनि बाजुरिवाजमे ग्राहमसबी भेलै तँ ओ सभ सभठाँ गिसबि गेल । पढाति एकठाँ प्रेम खोननक तँ कहनि जेठका भाएकेँ बधि नहक तँ हमर रात ले मनि अगला साबकेँ बखनक । किछु दिनक बाद हमरा जेठकी पुतोहूकेँ पेटमे दबद उठलै । बाजुरिवाजमे डाकूठब नग नउ गेलिअ । डाकूठब कहनक जे लिका पेटमे पाख भउ गेलनि । जन्दीसँ अंगरेशिन करब पडत । दबउंगा नउ जा कवा दियो । रीस हजाबक खटक अगला डाकूठरो कहनि । हम चाँउब-गहू मरैटि कउ पनबह हजाबक गजाम केरौँ आ पाँच हजाब ठाँका ग्राहमसबसँ मंगलिअ तँ कहनक, हमरा नग एकठाँ ठाँका ले अछि । परिवारमे रँड खटि लागए । तैपव हम कहलिअ, हो, रँडकी कनियाँ तौवा पढागमे रँड मदति केल छथु । अखनि ओ रौवाम अछि तँ तूँ कहे छह पागए ले अछि । केते दूथ हेतनि रँडकी कनियाँकेँ । दूदा ओ एका कपेखा ले देनक । अतमे हमर पनी अगल केठरी रैटि दबउंगा देनक । दबउंगा मंगे जागले ग्राहमसबकेँ कहलिअ तँ सेहो तैगाव ले भेल कहनक, मनि काज अछि । एका मिनटक छुट्टी ले अछि । तखनि हम हमर जेठका रैथी आ पनी सभ कोण दबउंगा जा रँडकी कनियाँक अंगरेशिन करेवौँ ।”

तैपव हम पुढुनियनि-

“अए यो, ग्राहमसब सहिरै किछु ले मदति केवधि ?”

बाँउत ज्जी कहनि-

“एकठाँ दोसब गप रँतलै छी । हमर किछु जमीन नहरिमे चलि गेल बहए । सबकाव जमीनक दूआरैजा भगतान केनक । बाजुरिवाजमे कपेखा भेलन । बातिमे हम कपेखा ग्राहमसबकेँ बखेले देलिअ । भिसब भल गाम अरै कान कपेखा मंगलिअ तँ ओ कहनक, हमरा कपेखा रँगवता अछि । अहाँ नग तँ बखले बहत दू मास पढाति आपस कवरै । जखनि तीन मास पढाति जेठका रैथीले धनकछी मीन आ अठाँ चक्री रैमरैले कपेखा मंगलौँ तँ कहनक, सभ खेत-पखाव तँ ओही भाय सभ लेन छोडाँ देल छिअ । हम तँ मात्र खबटे जोकव चाँउब-गहू-दालि-नननु-पिआजू अले छी राँकी सभ किछु तँ ओकरे सभ लेन बहि जागत अछि । पाँच हजाब कपेए बधि लेलौँ तँ कोण रँडका अहब भउ गेल । रैथीक जे रिखाह केनाँ ओहूमे एकठाँ छिदी ले देनक । अ ग्राहमसब तँ ओहू दूनु भाँगक सम्पति हबगेले छहिए । एतेक दिनसँ ग्राहमसब अछि । प्रेम से चनलैत अछि जगसँ कपेखाक नीक आमदनी छै । दूदा आग धरि हमरा आकि माएकेँ एका ठाँका ले देल हएत । रौखा, जे रिद्वान से रँगमान ।”

हमरा बाँउत ज्जीक रात सुलैत-सुलैत निन्न आरए नगन । कहनियनि-

“राँरी, हम सुते छी । अहूँ सुति बहू ।”



सोच

“राबूजी आग.आग.ठी. प्रतियोगिता परीष्कार तैयारी लेन कोटिंग करवै। बाजसंथाक केठामे नाँउ लिखाएवै। ओतए नीक तैयारी करौन जाग छै। तजले एक नाथ ठाका चाली।” अजीत दरुतगामँ अरित पिताकेँ कहनकनि।

रैठोक रात सुनि शीतल बाय रिंगलेत कहनथि-

“हरिदया ठाका केतएँ ओत, पाँचमे दिन तँ तैवारी पाँच हजार ठाका देल बहियो। एतए कि कपेआक गाढ अछि। जखनि मल लेन सखा निअ। देखे ले छिनी द्वादक गमाजमे केते खबट भ२ बहन छै। ओ किछए दिनक मेहमास छथि। अखनि धरि दराँगए रँले जरीतेत बहना अछि। द्वाद आरँ रैमी दिन ले खेपता।”

अजीत रौजल-

“सुजित भाय, केठामे नाँउ लिखौननि। ओ हमरा कोठेसँ हेलन केल छना। कहननि जे सतुरि हजार एडमिशनमे नगत आ बह-खागक अनगसँ। सुजित तँ अणना सभसँ गवारी छथि। हुनकर पिताकेँ तँ चाबि रीया खेत छन्हि। मिया-पुताकेँ प्रुशिन पठ। काज चनरै छथि। अणना तँ दस रीयामँ रैमीए खेत हएत। कपेआ ले अछि तँ पाँच कष्टा खेत रैटि निअ।”

शीतल बाय जेवसँ रँजना-

“देख, रैमी हमर मियाग ले चष्ट। हम खेत ले रैचरै। लोक की कहत। कहत ल जे शीतलो खेत रैटि-रैटि खाए नगन। पकराँ सान गीताक रिआहमे रीया भवि खेत रिकले बहए। हरिदया जँ खेत रैचरै तँ गाम-समाजमे कोष गज्जति बहत।”

राबू जीकेँ अणन गग ले मालेत देखि अजीत माए नग सेवरी नगौनक। माए सभ रात बुनि पति नग जा रँड खुशामद केनथि द्वाद शीतल बाय साह तैयार ले लेना।

शीतल बायकेँ दस रीया खेत। एकठा रैठी आ एकठा रैठी जेकर रिआह-दुवागमन सभठी भ२ गेन छन्हि। ओ अणना दुनहा सग बाँचमे बह छथि। शीतल बायक पिता तँ जरीते छथि द्वाद माए मरि गेन छथि। पिता दहाक प्रवाण रोगी छथि। रैठी अजीत पठमे नेशिगव छन्हि। मैट्रिको आ आग.एस.सी.मे नीक नमवार अणन अछि। द्वाद शीतल बाय पठ। गकेँ रैमी महत ले दग छथि। हुनकर सोच छन्हि एकठा रैठी अछि, दस रीया जमीन अछि। कोष जकवी छै रैमी पठराक। आरँ पठ। ग छोडा खेती-निबहनतीक काज देखह। अजीतकेँ कपेआ ले देनथि तँ ओ खेलाग-पीलाग छोडा देनक। तीनिए दिन पछाति शीतल बायक पिता मरि गेननि। आरँ भोज-भातक चर्ट हुअ नगन।

शीतल बायक पिता जेखन मरड गामेमे मात्र ले परोपष्टामे नामी रैकतीमे एक छना। जातिक मेनजन सेहो छना। शीतल बाय सोचए, राबूजी मेनजन छना। तँ हुनकर प्रीधक भोज खूँ नीक आ नमहव हेरौक चाली। बसगुनना-नानमोहनक भोज करवै। भोज आ मिया-कर्ममे दु नाथ ठाकासँ रैमी खर्ट हएत। द्वाद हाथगव तँ ले अछि। से ले तँ दस कष्टा खेत रैटि लेरै। ग काज दोहवा क२ हेल खोडए हएत। अणना नाआ क२ लेरै। अजीत सभ गग सुलेत बहए द्वाद रौजए किछ ले। ओकरा मियागमे केठोक अनारै किछ एरै ल करैत।

भोज-भातक गजामक लेन शीतल बाय अणन साव रैचनजी केँ रँजौना। रैचनजी हाग मुकुनमे शिक्क छथि। ओ अरिते रँहलागसँ कहनथि-

“जेतरेँ सकर्ता हुअए तेतरेँ भोज करव। जमीन रैटि भोज केनासँ कोष नाथ।”

तेपव शीतल बाय रँजना-

“यो मामूहव सहैरै, राबूजी जातिक मेनजन छना। परोपष्टामे हुनकर नाम छन्हि। नीकसँ भोज ले लेल लोक की कहत ?”



जखनि ग्ग गण-सगण दूनु साव-रहलागमे होग छन तखनि अज्जीतो ओते बहए । पिताक रात सुनि अज्जीत रोजन-

“माया यो, राँरुजी हमरा कोटिंग करैले एक माथ ठाँका ले देता रुदा दादाक भोज खेत रेटि कइ दु माथ ठाँका खटि कबखि ? ”

तेपव शीतन बाय छैकनखि-

“पहिले हमरा भोज कबए दे । तेकर पछाति आव किछ मोचरै । ”

रहलागक रात सुनि रोजनी रजना-

“अँग यो पाहुन, अहाँ कोन मसख छी । रोजनीक अँजनीमिगक प्रतियोगिता पबिष्का तैयारी लेन ठाँका ले देरै आव भोज-भात खुरै अँन-फगनसँ कबरै ? धुब जी ! केहेन अहाँक मोच अछि । जोड़ु भोज-भात । पहिले अँजितकेँ कपेआक अँजाम कइ दिखौ । तेकर पछाति भोज-भातक गण मोचरै । रोजनी जे अँजनीमिगक भइ जखत तँ रँडु पौघ रात हएत । ”

शीतन बाय मोचए नगना, रोजनी राँरु शीके कहे छथि ।

ई बचनपव अपन मतिर ggajendra@videha.com पव पठाउ ।

बिदेह नूतन अँक गद्य-पद्य भावती

१. मोहनदास (दीर्घकथा) लेखक उदय शंकरि (मुन हिन्दीसँ मैथिलीमे अखराद रिणीत उँगेल)

मोहनदास (मैथिली-देरणागरी)

मोहनदास (मैथिली-मिथिलाकर)

मोहनदास (मैथिली-ब्रँन)

२. छिन्नमस्ता- प्रभा खेतमक हिन्दी उँगनासक सुशीला मा द्रवा मैथिली अखराद

छिन्नमस्ता

३. कनकमती दीर्घकथा (मुन लंगादीसँ मैथिली अखराद लीमती कणा धीक आ ली धीरेन्द्र शैमरि)



ভগত বৈষ্ণব দেশ-ভূমা

১. ভূকাবাম বামা শৈষ্টক কোকশী ঔপন্যাসক মেথিলী ঔষ্মরাদ ডা. শিশু ফুমাৰ সিহ দ্বাবা
পাখলো

বানানা গ্ৰতে

বৈষ্ণব লোকনি দ্বাবা স্ববায় য়োক

১. প্রাত: কান ঔল্লঙ্কদ্বৰ্ত্ত (সূৰ্যোদয়ক এক ঘণ্টা পহিল) সৰ্বপ্রথম ঔগল দ্বু হাথ দেখরোক ঢালি, ঔ ঙা
লোক বৈষ্ণবক ঢালি ।

কবাগ্ৰে রসতে লক্ষ্মী: কবমল্য সবল্লতী ।

কবমুলে স্থিতো ঔল্লা প্রভাতে কবদৰ্শনম্ ॥

কবক ঔগাল লক্ষ্মী বৈসিত ডুথি, কবক মধ্যমে সবল্লতী, কবক মূলমে ঔল্লা স্থিত ডুথি । ভোবমে তাহি দ্বাবে
কবক দৰ্শন কবরোক থীক ।

২. সন্ধ্যা কান দীপ লেসরোক কান-

দীপমুলে স্থিতো ঔল্লা দীপমল্য জলদৰ্শন: ।

দীপাগ্ৰে শিফব: প্রাক্ত: সন্ধ্যাজ্যাতিৰ্ণমোঃস্তুতে ॥

দীপক মূল ভাগমে ঔল্লা, দীপক মধ্যভাগমে জলদৰ্শন (বিশ্ৰু) ঔঃ দীপক ঔগ্ৰ ভাগমে শিফব স্থিত ডুথি ।
হে সন্ধ্যাজ্যাতি ! ঔহাঁকৈ লমফাব ।

৩. স্মৃতরোক কান-

বাগ ফন্দ লক্ষ্মীশ্ৰু বৈষ্ণবের্য বুকোদবম্ ।

শিয়লে য: স্মলেষ্টিব দ্: স্মল্লস্তশ শষ্টতি ॥

জে সভ দিল স্মৃতরীস পহিল বাম, ফুমাৰল্লামী, লক্ষ্মী, গকড ঔঃ ভীমক স্মৰা করিত ডুথি, লক্ষকব
দ্: স্মল্ল শষ্ট ভঃ জাগত ডুহি ।

৪. লহেরোক সময়-

গঞ্জ চ ফললে টের গোদারবি সবল্লতি ।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

नर्मदे सिद्धु कारेवि जजेसिन् मल्लिर्नि हक ॥

हे गंगा, यद्गना, ग्गोदारवी, सबन्नती, नर्मदा, सिद्धु आः कारेवी धाव । एहि जनमे अपन मल्लिधा दिख ।

३. उतवै मसुद्धस्य हिमाद्रश्चर दक्षिणम् ।

रर्थी तत् भावतं नाम भावती यत्र सन्ततिः ॥

सद्गदक उतवमे आः हिमानयक दक्षिणमे भावत अछि आः उतका सन्तति भावती कहलैत छथि ।

३. अहना द्रोपदी सीता तावा मन्दादरी तथा ।

पशुकं ना सवेस्त्रिं महापातकशिकम् ॥

जे सत दिन अहना, द्रोपदी, सीता, तावा आः मन्दादरी, एहि पाँट माली-म्रीक मका करैत छथि, हुनकर सत पाप मरु भः जागत छथि ।

१. अश्वेतोमा रैनिर्वासो हनुमाश्च रितीयाः ।

स्रपः पवशुवामश्च सन्तते चिवश्रीरिणः ॥

अश्वेतोमा, रैनि, वाम, हनुमान्, रितीया, स्रपाचार्य आः पवशुवाम- ग्ग मात ठी चिवश्रीरी कहलैत छथि ।

४. साते भरतु स्रथीता देरी शिखर मसिणी

उग्रेण तगसा वृद्धा यया पशुपतिः पतिः ।

सिद्धिः साश्व सतामञ्जु प्रसादाञ्जु धूर्जठैः

जह्नरीहेमनेथेर यन्तुमि मेशिनः कना ॥

६. रौलोःहं जगदलन्द न मे रौला सबन्नती ।

अशुर्णे पचमे रर्थे र्णीयामि जगत्त्रगम् ॥

१०. दूर्ध्धित मरेशुनन यज्जुर्देद अध्याय २२, मत्र २२)

आ अँहल्लिबस्य अजापतिवृद्धिः । निभोकता देरताः । सुवाडुकैतिष्ठन्दः । यड्जः सुवः ॥

आ अँहल्लिबस्य अजापतिवृद्धिः । निभोकता देरताः । सुवाडुकैतिष्ठन्दः । यड्जः सुवः ॥
आ अँहल्लिबस्य अजापतिवृद्धिः । निभोकता देरताः । सुवाडुकैतिष्ठन्दः । यड्जः सुवः ॥
पेशुर्णीठल्लुड्वाणः सन्तिः पवशुर्णीरा जिष्णु वपेष्ठाः सन्तयो हराण्य यज्जमानस्य रौलो ज्जायता निकामे-
निकामे नः पृज्ज्या रर्थतु फनरवा नः उषयः पचन्ता योशेकूमो नः कपताम् ॥ २२ ॥

मन्त्रार्थः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मलावथाः । मन्त्रार्थं बुद्धिनामोऽस्तु मित्राणां दयानुत्तर ।



ॐ दीर्घासिर्भर । ॐ सौभाग्यरती भर ।

हे भगवान् । अणन देसमे सुयोग्य आ सररुत रिद्यार्थी उपेन्न होथि, आ शुकुके षशि कएसिहाव सनिक उपेन्न होथि । अणन देसिक गाय खुर दूध दय रानी, ररवद भाव रहण कवएमे सक्कम होथि आ योड । ह्रवित कएके दोगय रना होए । स्त्रीगण षगवक लहन्न कवरामे सक्कम होथि आ हरक सभामे ओजपूर्ण भाषण देरररना आ लहन्न देररामे सक्कम होथि । अणन देसमे जखण आरुशुक होय रर्या होए आ ओयधिक-रुपी सररदा परिणक होगत बहए । एर एमे सभ तवहे हमरा सभक कर्ण होए । शुकुके ररुहिक षशि होए आ हिक उदय होए ॥

मह्यारके कोण ररुुक गडा कवरक चाही तकव ररिण एहि मत्रमे कएल गेल अछि ।

एहिमे राचकगुणामानड् काव अछि ।

अणन-

ररुहण - रिद्य आदि गणसँ परिपूर्ण ररुह

बाह्ये - देसमे

ररुहणररुसी-ररुह रिद्यक तेजसँ हकत

आ ज्ञायता- उपेन्न होए

बाजुन्यः -बाजा

शुले२ रिषा डव रना

गयररा- ररुण चेररामे षिण्ण

रतिररुधी-शुकुके ताका दय रना

महाररुषो-पेय बथ रना रीव

दोशुधी-कामला(दूध पूर्ण कवए रानी)

पेणुररुठीररुडररुणः पेणु-रुी रा ररुणी ररुठीररुडररु- पेय ररुवद षणुः -आणुः -ह्रवित

सणुः -योड ।

पुवररुषोररु- पुवररुषु- ररुवहावके षाका कवए रानी ररुषीररु-स्त्री

जिणु-शुकुके जीतए रना



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका बिदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीसिंह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

बपेग्राः-बथ पब ह्रिव

सुभेयो-उत्तम सभामे

हराश-हरा जेहण

यजमानश-बाजाक बाज्यमे

रीबो-शेकुके पबाजित कबरना

निकामे-निकामे-निश्चयकरतु कार्यामे

नः-हमर सभक

पर्जन्या-मेघ

रथतु-रथी होए

हरनरवा-उत्तम हरन रना

उरधयः-उरधिः

पाछुता-पाकए

योगेक्यो-अनश नश करेबाक हेतु कएन गेन योगक बसा

नः'-हमरा सभक हेतु

कंपताम्-समर्थ होए

त्रिभुक्त अरुनाद- हे अरुना, हमर बाज्यमे अरुना नीक धार्मिक रिद्या रना, बाज्य-रीब,तीबदाज, दुध दए रानी गाय, दोगय रना जन्तु, उन्मी नारी होथि । पार्जन्य आरुशकता पडना पब रथी देथि, हरन देथ रना पाछु पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/संवसित कबी ।

बिदेह नूतन अंक भाषापाक बचानेखन-

अभिनेकोय-मैथिली- / मैथिलीकोय-अभिने- ग्राजेक्टके आगु रतु डि, अगल सुमार आ योगदान अ-
मेन द्वावा ggajendra@videha.com पब पठाई ।

१.भावत आ हपावक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वावा रनाउव मनक शैली आ २.मैथिलीमे भाषा
सम्पादन पाठक्य



१. लपान आ भावतक मैथिली भाषा-लेखनिक लेखन द्वारा रचनात्मक मूलक लेख

१.१. लपानक मैथिली भाषा लेखनिक लेखन द्वारा रचनात्मक मूलक लेखनिका आ लेखन लेख

(भाषाशास्त्री डा. बागारताव यादवक धारणाके पूर्ण रूपसँ सभ नऽ निर्धारित)

मैथिलीमे लेखनिका तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अक्षरावक: पञ्चमाक्षरवाच्यतात ७, ए, ए, ण एर म अरित अछि । संस्कृत भाषाक अक्षरावक शिष्टक अक्षरमे जाहि रक्षक अक्षर बहते अछि ओही रक्षक पञ्चमाक्षर अरित अछि । जेना-

अक्ष (क रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ७ आएन अछि ।)

पञ्च (च रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ए आएन अछि ।)

खण्ड (ख रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ण आएन अछि ।)

सखि (त रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे ण आएन अछि ।)

खण्ड (प रक्षक बहरीक कावणे अक्षरमे म आएन अछि ।)

उपर्युक्त रीत मैथिलीमे कम देखन जागत अछि । पञ्चमाक्षरक रचनामे अधिकशि जगहपर अक्षरावक प्रयोग देखन जागठ । जेना- अक्ष, पञ्च, खण्ड, सखि, खण्ड आदि । राकवणदिद पण्डित गोरिन्द नाक कहरी छनि जे करण, चरण आ षरणसँ पुरि अक्षरावक निखन जाए तथा तरण आ परणसँ पुरि पञ्चमाक्षरमे निखन जाए । जेना- अक्ष, चण, अण, अण तथा कण । ह्ना हिन्दीक शिष्ट बहन आधुनिक लेखक एहि रीतके नहि मानीत छथि । ओ लोकनि अण आ कणक जगहपर सेहो अत आ कण निखेत देखन जागत छथि ।

शरीर पद्धति किछु स्वरिधारक अरु छैक । किछक तँ एहिमे मया आ शूनक रीत होगत छैक । ह्ना कतेक लेखक लेखनिका रा ह्नामे अक्षरावक छोट मण रीन्दु स्पष्ट नहि लेनासँ अर्थक अर्थ होगत सेहो देखन जागत अछि । अक्षरावक प्रयोगमे लेखनिका-दोषक समझारणा सेहो ततरे देखन जागत अछि । एतदर्थ कसँ नऽ कऽ परण धरि पञ्चमाक्षरक प्रयोग करी उचित अछि । मसँ नऽ कऽ तऽ धरि अक्षरक सभ अक्षरावक प्रयोग करीमे कतहु कोणा रीरद नहि देखन जागठ ।

२. त आ त : तक लेखनिका “व ह”जकाँ होगत अछि । अतः जतः “व ह”क लेखनिका हो ततः मय त निखन जाए । आण ठाम खाली त निखन जेरीक छली । जेना-

त = तकी, तेकी, त्रि, तेउआ, तस, तेरी, तकनि, त्रि आदि ।

त = पढ़ा, रठरी, गठरी, मठरी, बूठरी, माँ, गाठ, वीठ, चाँ, सीरी, पीरी आदि ।

उपर्युक्त शिष्ट, सबके देखनासँ ज स्पष्ट होगत अछि जे साधारणतया शिष्टक शुकमे त आ मय तथा अक्षरमे त अरित अछि । गह मय ड आ डक सम्बन्ध सेहो नागु होगत अछि ।



३.र आ रँ : मैथिलीमे “र”क उँटाका रँ कएन जागत अछि, झुदा ओकवा रँ कएमे नहि लिखन जएरौक चाही । जेना- उँटाका : रँएण्णाथ, रँिया, नरँ, देरँता, रँिष्कु, रँी, रँन्दना आदि । एहि सभक स्थानपव फ्रमिः रँएण्णाथ, रँिया, नर, देरता, रँिष्कु, रँी, रँन्दना लिखरौक चाही । सामान्यतया र उँटाकाक जेन ओ प्रयोग कएन जागत अछि । जेना- ओकीन, ओजह आदि ।

४.य आ ज : कतहू-कतहू “य”क उँटाका “ज”जकाँ करैत देखन जागत अछि, झुदा ओकवा ज नहि लिखरौक चाही । उँटाकाये यरु, जदि, जझणा, जूग, जारँत, जोगी, जदु, जम आदि कहन जएरँना शिद्द, सभकेँ फ्रमिः यरु, यदि, यझणा, यग, यारत, योगी, यदु, यम लिखरौक चाही ।

३.ए आ य : मैथिलीक रतनीमे ए आ य दुनु लिखन जागत अछि ।

प्राटीन रतनी- कएन, ज्ञाए, हेखत, माए, भाए, गाए आदि ।

नरीन रतनी- कयन, ज्ञाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि ।

सामान्यतया शिद्दक शुकमे ए मात्र अरैत अछि । जेना एहि, एणा, एकव, एहन आदि । एहि शिद्द, सभक स्थानपव यहि, यना, यकव, यहन आदिक प्रयोग नहि कवरौक चाही । यद्यपि मैथिलीभायी थाक सहित किछु जातिमे शिद्दक आबन्नामे “ए”केँ य कहि उँटाका कएन जागत अछि ।

ए आ “य”क प्रयोगक सम्दर्भमे प्राटीन पछतिक अक्षरवण कवरँ उँगहाऊ मणि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएन गेल अछि । किएक तँ दुनुक लेखनमे कोणा सहजता आ दुकहताक रीत नहि अछि । आ मैथिलीक सरँसाधारणक उँटाका-मैथिली यक अपेक्षा एसँ रँसी निकठँ डैक । थाम क२ कएन, हएरँ आदि कतिपय शिद्दकेँ केन, हेरँ आदि कएमे कतहू-कतहू लिखन जएरँ सेहो “ए”क प्रयोगकेँ रँसी सगीटीन प्रमाणीत करैत अछि ।

३.हि, हू तथा एकाव, ओकाव : मैथिलीक प्राटीन लेखन-पक्कवामे कोणा रीतपव रँन दैत कान शिद्दक पाछँ हि, हू नगाउन जागत डैक । जेना- हूकहि, अणहू, ओकवहू, तकानहि, टोष्टहि, आणहू आदि । झुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपव एकाव एरँ हूक स्थानपव ओकावक प्रयोग करैत देखन जागत अछि । जेना- हूकके, अणला, तकाने, टोष्ट, आला आदि ।

१.य तथा थ : मैथिली भायामे अरिंकशितः यक उँटाका थ होगत अछि । जेना- यडलव (खडयलव), योडनी (थोडनी), यरँकोण (थरँकोण), वृषेण (वृथेण), सन्नाय (सन्नाथ) आदि ।

+.युनि-लोप : निम्नलिखित अरन्नामे शिद्दसँ युनि-लोप भ२ जागत अछि:

(क) फ्रिनायनी प्रवय अयमे य रा ए वृणु भ२ जागत अछि । ओहिमे सँ पहिले अक उँटाका दीर्घ भ२ जागत अछि । ओकव आगाँ लोप-सूचक टिन रा रिकारी (/ २) नगाउन जागछ । जेना-



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानकीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

पूर्ण कप : पठए (पठय) गेनाह, कए (कय) जेन, उठए (उठय) पडतोक ।

अपूर्ण कप : पठ गेनाह, क जेन, उठ पडतोक ।

पठ२ गेनाह, क२ जेन, उठ२ पडतोक ।

(थ) पूर्णकालिक प्राप्त आथ (थाए) प्रत्यये य (ए) वृथु भ२ जागड, ऋदा जोप-सूचक रिक्वी नहि नगाउन जागड । जेना-

पूर्ण कप : थाए (य) जेन, पठाथ (ए) देरै, नहाए (य) अएनाह ।

अपूर्ण कप : था जेन, पठा देरै, नहा अएनाह ।

(ग) स्त्री प्रत्ये गक उंचावण फियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनुमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : दोसबि यानिनि छनि गेनि ।

अपूर्ण कप : दोसब यानिन छनि जेन ।

(घ) रतमान प्रदन्तक अन्तिम त वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप : पठैत अछि, रँजेत अछि, गरैत अछि ।

अपूर्ण कप : पठै अछि, रँजे अछि, गरै अछि ।

(ङ) फियापदक अरमाण गक, उंक, एंक तथा हीकमे वृथु भ२ जागत अछि । जेना-

पूर्ण कप: छियोक, छियेक, छलीक, छोक, छैक, अरिठेक, होगक ।

अपूर्ण कप : छियो, छिये, छली, छो, छै, अरिठे, होग ।

(च) फियापदीय प्रत्ये ह, हू तथा हकावक जोप भ२ जागड । जेना-

पूर्ण कप : छहि, कहनहि, कहनहूँ, जेनह, नहि ।

अपूर्ण कप : छनि, कहननि, कहनौँ, जेनह, नग, नमि, ले ।

९. ध्रुनि स्थानानुवा : कोला-कोला स्वर-ध्रुनि अणवा जगहसँ हठि क२ दोसब ठाम छनि जागत अछि । थाम क२ दान्न ग आ उंक सङ्गमे ग रात नागु होगत अछि । मैथिलीकवा भ२ जेन शिष्टक मया रा अन्तमे जँ दान्न ग रा उ आरैए तँ ओकव ध्रुनि स्थानानुवित भ२ एक अक्षर आगाँ आरि जागत अछि । जेना- निनि (निगन), पाणि (पागन), दाणि (दागन), माष्टि (मागष्टि), काड (काडुड), मास्र (माडस) आदि । ऋदा तसेम शिष्ट, सभमे ग निथम नागु नहि होगत अछि । जेना- बयिकेँ बगम आ स्वयिकेँ स्वाडस नहि कहन जा सकैत अछि ।

१०. हनन्त ()क प्रयोग : मैथिली भाषामे सामान्यतया हनन्त ()क आरथकता नहि होगत अछि । कावण जे शिष्टक अन्तमे अ उंचावण नहि होगत अछि । ऋदा संस्कृत भाषासँ जहिनक तहिना मैथिलीमे आएन (तसेम) शिष्ट, सभमे हनन्त प्रयोग कएन जागत अछि । एहि पोथीमे सामान्यतया संपूर्ण शिष्टकेँ मैथिली



भाषा सङ्ग्रही निश्चय अङ्गसाव हनन्तुरिणीष बाखन गेन अछि । ह्नुदा र्याकवण सङ्ग्रही प्रयोजनक लेन अवारणक स्थानपव कतहू-कतहू हनन्तु देन गेन अछि । प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राप्तिन आ नरीन दनु शैलीक सवन आ समीचीन पक्ष सबकेँ समेष्टि कइ रर्षि-रिग्यास कएन गेन अछि । स्थान आ समयमे रँटतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनीकी दृष्टिसँ सेहो सवन होरँरँना हिंसाँरँ रर्षि-रिग्यास गिनाओन गेन अछि । रतिमान समयमे मैथिली माह्रभाषी पर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमँ मैथिलीक क्लान जेरँ पडि बहन परिश्रेष्णमे लेखनमे सहजता तथा एककपतापव ध्यान देन गेन अछि । तखन मैथिली भाषाक मुन रिशेयता सब कृष्टित षहि लोअक, ताहू दिस लेखक-सञ्जन सचेत अछि । प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. बासाँरताव यादरक कहँ छुनि जे सवनताक अङ्गसङ्गानमे एहन अरन्था किमूह ल आरँरँ देरँक टाही जे भाषाक रिशेयता डौहमे पडि जाए ।

-(भाषाशास्त्री डा. बासाँरताव यादरक धाकालेँ पुर्ण कपसँ सङ्ग नइ निर्धारित)

१.२ मैथिली अकादमी, षटना द्वारा निर्यारित मैथिली लेखन-गेवी

१. जे शिद्ध, मैथिली-साहित्यक प्राप्तिन कालसँ आग धरि जाहि रँटनीमे प्राचलित अछि, से सामान्यतः ताहि रँटनीमे निखन जाय- उँदहवणार्थ-

ग्राह

एखन

ठाग

जकव, तकव

तनिकव

अछि

अग्राह

अखन, अखनि, एखन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठाग

जेकव, तेकव

तिनकव । (रैकल्पिक कपेँ ग्राह)

अँड, अहि, ए ।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक कप रैकल्पिकतया अणनाओन जायः भइ गेन, भय गेन रा भए गेन । जा बहन अछि, जाय बहन अछि, जइ बहन अछि । कव गेनाह, रा कवय गेनाह रा कवइ गेनाह ।

३. प्राप्तिन मैथिलीक 'ह' ध्वनिक स्थानमे 'ष' निखन जाय सकेत अछि यथा कहननि रा कहनहि ।

४. 'अ' तथा 'अँ' ततय निखन जाय जत सप्रुतः 'अग' तथा 'अँड' सदृश उँटावा गप्रु हो । यथा- देथेत, ड्लोक, लौखा, ड्लोक गलादि ।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शिद्ध, एहि कपेँ प्रयाङ्ग होयतः जेह, सैह, गइह, अँह, लेह तथा देह ।

६. ह्नुद गकावात शिद्धमे 'ग' के अङ्ग कवरँ सामान्यतः अग्राह धिक । यथा- ग्राह देथि आरँह, मानिनि गेलि (मन्त्रया मात्रमे) ।



१. स्मृतं ज्ञान 'ए' रा 'य' प्राप्तिन मैथिलीक उच्चरणा आदिमे तँ यथारत बाखन जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे रैकपिक कर्षे 'ए' रा 'य' लिखन जाय। यथा:- कयन रा कएन, अयनाह रा अएनाह, जाय रा जाए गबदि।

४. उच्चारणमे दु स्वरक रीट जे 'य' धुनि स्मृतः आरि जागत अछि तकरा लेखमे स्थान रैकपिक कर्षे देन जाय। यथा- धीखा, अठेखा, रिखाह, रा धीया, अठेया, रियाह।

५. सांख्यिक स्मृतं स्वरक स्थान यथार्थर 'ए' लिखन जाय रा सांख्यिक स्वर। यथा:- मैएण, कनिएण, किवतनिएण रा मैखाँ, कनिखाँ, किवतनिखाँ।

१०. कावकक रिभक्ति क निम्नलिखित कण ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। मे मे अणुस्वाव सरथा बाज्य थिक। 'क' क रैकपिक कण 'केव' बाखन जा सकैत अछि।

११. पुरिकानिक क्रियापदक रौद 'कय' रा 'कए' अरय रैकपिक कर्षे नगाउन जा सकैत अछि। यथा:- देधि कय रा देधि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माँ, भाँ गबदि लिखन जाय।

१३. अर्ह 'ष' ओ अर्ह 'श' क रँदना अणुस्वाव बहि लिखन जाय, किंतु भाषाक स्वरिधार्य अर्ह 'ँ', 'एँ', तथा 'ण' क रँदना अणुस्वारो लिखन जा सकैत अछि। यथा:- अर्ह, रा अर्क, अरहन रा अरन, कर्ष रा कर्ष।

१४. हनंत छि निश्चयतः नगाउन जाय, किंतु रिभक्ति क संग अकारांत प्रयोग कएन जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

१५. सब एकन कावक छि शिष्टमे सँ क लिखन जाय, हँ क बहि, संशुक्ति रिभक्ति हेतु हवाक लिखन जाय, यथा घब पबक।

१६. अणुस्वावकेँ चन्द्ररिन्दू द्वारा रय कयन जाय। पर्वत रूद्राक स्वरिधार्य हि समाण जष्टन मात्रापव अणुस्वावक प्रयोग चन्द्ररिन्दूक रँदना कयन जा सकैत अछि। यथा- हि केव रँदना हि।

१७. पूर्ण रिवाग पासिसँ (।) सृष्टि कयन जाय।

१८. समाप्त पद सँ क लिखन जाय, रा हांगफेणसँ जोडि क , हँ क बहि।

१९. लिख तथा दिख शिष्टमे रिकारी (२) बहि नगाउन जाय।

२०. अक देरणागरी कणमे बाखन जाय।

२१. किंतु धुनिक लेव नरीन छि रँदना जाय। जा अ बहि रँदना अछि तँरत एहि दुनु धुनिक रँदना पुरिबत् अय/ आय/ अय/ आय/ आउ/ अउ लिखन जाय। आकि ए रा आँ सँ रय कएन जाय।

ह.- लारिन्दू माँ ११/१३ श्रीकांतु श्रीरुव ११/१३ सुरेन्द्र माँ सुम ११/०४/१३



२. मैथिलीमे भाषा संपादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देश: (ब्रॉन्ड कथन कथन ब्राह्मण):-

दशु न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सँत- जेना रौजू नाम, ददा न क उच्चारणमे जीह मुर्धामे सँत (ले सँतैए तँ उच्चारण द्योय अछि)- जेना रौजू गणेश। तावरा श्येमे जीह तावुसँ, श्येमे मुर्धामे आ दशु म्ये दाँतसँ सँत। निमाँ, सत आ शोषा रौजि कइ देखु। मैथिलीमे श केँ ऐदिक संस्कृत जकाँ थ सेहो उच्चारित कथन जागत अछि, जेना बर्या, द्योय। य अलको श्वाणव ज जकाँ उच्चारित होगत अछि आ न ड जकाँ (यथा संयोग आ गणेशे संज्ञोय आ

पडसे उच्चारित होगत अछि)। मैथिलीमे र क उच्चारण रँ ने क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होगत अछि।

ओहिना दशु ग ऐशिकान मैथिलीमे पहिल रौजम जागत अछि काका देरणागवीमे आ मिथिलाक्षरमे दशु ग अक्षरक पहिल लिखल जागत आ रौजलो जखरीक टाली। काका जे हिन्दीमे एकर द्योयपूर्ण उच्चारण होगत अछि (लिखत तँ पहिल जागत अछि ददा रौजम रौदमे जागत अछि), से शिक्षा पछतिक द्योयक काका हम सत ओकर उच्चारण द्योयपूर्ण ठगसँ कइ बहन छी।

अछि- अ ग ड एँड (उच्चारण)

छथि- छ ग थ छैथ (उच्चारण)

गहँटि- ग हँ ग ट (उच्चारण)

आरँ अ आ ग ज ए एँ ओ ओ अ अः म एँ सत लेन यावो सेहो अछि, ददा एँमे ज एँ ओ ओ अ अः म केँ संशुद्धाक्षर कथमे गगत कथमे प्रशुद्ध आ उच्चारित कथन जागत अछि। जेना म केँ वी कथमे उच्चारित करब। आ देखियौ- एँ लेन देखिओ क प्रयोग अछि। ददा देखिँ लेन देखियौ अछि। क सँ ह धवि अ समितित लेनसँ क सँ ह रँलेत अछि, ददा उच्चारण कान हनुप्र शुद्ध शैलिक अक्षरक उच्चारणक प्रवृत्ति रँठन अछि, ददा हम जखन मलाजमे ज अक्षरमे रँजेत छी, तखना प्रकाका लोककेँ रँजेत सुनरँहि- मलाज२, राहुँरमे ओ अ शुद्ध ज = ज रँजेत छथि।

हव त्र अछि ज् आ ए३ क संशुद्ध ददा गगत उच्चारण होगत अछि- गा। ओहिना छ अछि क आ य क संशुद्ध ददा उच्चारण होगत अछि छ। हव नै आ व क संशुद्ध अछि त्रै (जेना श्रेणिक) आ स आ व क संशुद्ध अछि स्र (जेना मिस्र)। त्र लेन त+व।

उच्चारणक ऑडियो फागत विदेह आर्कागर <http://www.videha.co.in/> गव उगनद्व अछि। हव केँ / सँ / गव पूर्व अक्षरसँ सँ कइ लिखु ददा तँ / कइ लँ कइ। एँमे सँ मे पहिल सँ कइ लिखु आ रौदरँना लँ कइ। अकक रौद थी लिखु सँ कइ ददा अथ ठाम थी लिखु लँ कइ जेना

लँ ददा सत थी। हव ३थ य सतय लिखु- छथय सतय लँ। धवरँमे रँवा ददा धवरँमे रावै प्रशुद्ध कक।

बहए-

बहँ ददा सकेँए (उच्चारण सकेँ-ए)।



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

रुदा कथला कान बरुए आ वहे ये अर्थ तिल्लता सेहो, जेना से कचा जगहमे पाकिंग कवरौक अन्नास
बहे ओकरा । खुदनापव गता नागन जे दुनदुन नाम्ना आ ड्रांगरव कनष्ट हसक पाकिंगमे काज कबैत
बरुए ।

हुनो, हुनए ये सेहो ए तबहक भेन । हुनए क उँचावण हुन-ए सेहो ।

संयोगले- (उँचावण संयोगले)

कै/ क२

केव- क (

केव क प्रयोग पद्यमे ले कर, पद्यमे क२ सके छी ।)

क (जेना बागक)

बागक आ संग (उँचावण बाग के / बाग क२ सेहो)

सँ- स२ (उँचावण)

चन्द्ररिन्दु आ अन्नबाव- अन्नबावमे कठ धरि प्रयोग होगत अछि रुदा चन्द्ररिन्दुमे ले । चन्द्ररिन्दुमे
कलक एकावक सेहो उँचावण होगत अछि- जेना बागसँ- (उँचावण बाग स२) बागकेँ- (उँचावण बाग
क२/ बाग के सेहो) ।

कै जेना बागकेँ भेन हिन्दीक को (बाग को)- बाग को= बागकेँ

क जेना बागक भेन हिन्दीक का (बाग का) बाग का= बागक

क२ जेना जा क२ भेन हिन्दीक कव (जा कव) जा कव= जा क२

सँ भेन हिन्दीक से (बाग से) बाग से= बागसँ

स२ , त२ , त , केव (पद्यमे) एते टाक भेद, सरहक प्रयोग अरुद्धित ।

के दोसव अर्धे प्रशङ्क भ२ सकेए- जेना, के कहनक ? रिभक्ति “क”क रँदना एकव प्रयोग
अरुद्धित ।

नधि, नहि, ले, नग, नँग, नगँ, नगँ ए सभक उँचावण आ लेखन - ले

ओरु क रँदनामे रु जेना मरुगुर्ण (महओरुगुर्ण ले) जतए अर्थ रँदनि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक
संशुद्धाक्षरक प्रयोग उँचित । सम्पति- उँचावण स स ग त (सम्पति ले- काका सही उँचावण आसागीसँ
सम्भर ले) । रुदा सरुतिम (सरुतिम ले) ।

बाह्रिय (बाह्रिय ले)

सकेए/ सके (अर्थ परिवर्तन)

पोडेले/ पोडे लेन/ पोछे लेन



पोडिअ/ पोडिअ/ (अर्थ परिवर्तन) पोडिअ/ पोडि

उ लोकनि (हठी कर, उ ये रिंकावी ले)

उअ/ उहि

उहिय/

उहि लय/ उले वर

ऊयरीं/ बैसरीं

गँचअयाँ

देधियोक/ (देधिअक ले- तहिना अ ये द्वाय आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अद्युचित)

ऊकाँ / जेकाँ

तँग/ तँ

हेअत / हयत

नहिअ/ नहि/ नँग/ नगँ/ ले

सोँसे/ सोसे

रँच /

रँची (सोवाअव)

गाअ (गाअ नहि), रुदा गाअक दूध (गाअक दूध ले ।)

बहरीं/ गहियतेँ

हयरी/ अरी

सरँ - सभ

सरँरुक - सभरुक

धवि - तक

गग- रौत

रूमरँ - समयरँ

रूमरँ/ समयरँ/ रूमरँ - समयरँ

हयरीं/ अरी - हय सभ

आकि- आ कि

सकेअ/ कवेअ (गद्यमे प्रयोगक आरंभकता ले)



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मन्त्रीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

होअण/ होमि

जाअण (जामि ले, जेना देम जाअण) द्ददा जामि-रूमि (अर्थ परिवर्तन)

गअठ/ जाअठ

थाड/ जाड/ थाडु/ जाडु

मे, केँ, सँ, गव (मिदँसँ सँ क२) तँ क२ ध२ द२ (मिदँसँ सँ क२) द्ददा दूठी रा रौसी रिभक्ति संग
बहनागव गहिन रिभक्ति ठाँकेँ सँठुँ । जेना एँमे सँ ।

एकठी , दूठी (द्ददा क२ ठाँ)

रिकावीक प्रयोग मिदँक अन्तुमे, रीचमे अन्तुमे कर्पेँ ले । आकावातु आ अन्तुमे अ क रौद रिकावीक
प्रयोग ले (जेना दिथ

, था/ दिथ , था, था ले)

अपेन्द्रार्थीक प्रयोग रिकावीक रौदनामे कवरँ अन्तुमे आ मात्र हर्षक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)-
उना रिकावीक संयुत क२ अन्तुमे कहन जागत अछि आ रतनी आ उँचावा दूनु ठाय एकव जाग बहेत
अछि/ बहि सकेत अछि (उँचावणमे जाग बहिते अछि) । द्ददा अपेन्द्रार्थीक सेहो अन्तुमे गमेमिर
कसमे होगत अछि आ हँचमे मिदँमे जतए एकव प्रयोग होगत अछि जेना *raison d'être*
एतए सेहो एकव उँचावण बेजेल डेठव होगत अछि, माल अपेन्द्रार्थीक अन्तुमे ले देत अछि रवण
जोडेते अछि, से एकव प्रयोग रिकावीक रौदना देनाग तकनीकी कर्पेँ सेहो अन्तुमे ।

अगसे, एहिसे/ एँमे

जअसे, जाहिसे

एथन/ अथन/ अगथन

केँ (के बहि) मे (अन्तुमे बहित)

भ२

मे

द२

तँ (त२, त ले)

सँ (स२ स ले)

गाठ भव

गाठ वग

सॉस खन



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका बिदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

जो (जो go, कर्ते जो do)

तो/तथ जेना- ते दुखारे/ तगमे/ तगले

जो/जथ जेना- जे कावना/ जगसाँ/ जगले

ए/थथ जेना- ए कावना/ एसँ/ थगले/ रुदा एकव एकठी खास प्रयोग- नावति कतेक दिसँ कहेत
बहेत थग

लो/वथ जेना लेसाँ/ नगले/ ले दुखारे

नहँ/ लो

लोलो/ लेलो/ लेले/ लेनहँ/ लेनहँ/ लेन

जथ/ जाहि/ जे

जहिगाम/ जाहिगाम/ जगगाम/ जेगगाम

एहि/ थहि

थग (बालक थतमे ब्राह्म / ए)

थगड/ थडि/ थड

तथ/ तहि/ तो/ ताहि

उहि/ उथ

सीथि/ सीथ

जीरि/ जीरी/ जीर

बलेही/ बवहि

ते/ तँग/ तँ

जाथर/ जएर

नग/ ले

डग/ डे

नहि/ ले/ नग

गग/ ले

डहि/ डवहि ...



समय गेरुँदक संग जखन कोला रिभक्ति जूठै छै तखन समे जना समेगव गत्यादि । असगवमे छन्द
था रिभक्ति जूठल छन्दे जना छन्देसँ, छन्देमे गत्यादि ।

जग/ जाहि/

जे

जहिग/ जाहिग/ **जगग/ जेगग**

एहि/ अहि/ अग/ **ए**

अगछ/ **अछि/ अछ**

तग/ तहि/ **ते/ तहि**

उहि/ **उग**

सीथि/ **सीथ**

जीरि/ **जीरी/**

जीर

भने/ **भनेही/**

भवहि

ते/ तग/ तै

जावर/ जवर

नग/ **ने**

छग/ **छे**

बहि/ **बे/ बग**

गग/

गे

ठग/ ठगहि

छकन अछि/ **छेन गछि**

२.२. मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

नीटाँक सूटमे देन रिक्पमेसँ लेखज एडिटर द्वावा कोष कग छन जेरौक चाली:

रौलेड कएन कग ग्राह:



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१. होयरौना/ होरौयरौना/ होमयरौना/ हेरौरौना, हेमरौना/ होयरौक/होरौयरौना /होरौक

२. आ/आ२

आ

३. क जेल/क२ जेल/क३ जेल/कय जेल/न/न२/नय/न३

४. भ' गेल/भ२ गेल/भय गेल/भ३

गेल

५. कव' गेनाह/कव२

गेनाह/कव३ गेनाह/कवय गेनाह

६.

विथ/दिथ विथ,दिय,विथ,दिय/

७. कव' रौना/कव२ रौना/ कवय रौना **करौरौना/क'व' रौना /**

करौरौनी

८. रौना रौना (प्रकय), रौनी (सूनी) ९

.

आइव आइ

१०. आइव: आइव

११. दु: थ दुथ १

१२. चलि गेल **चव गेल/चैन गेल**

१३. **देवथिह देवकिह, देवथिन**

१४.

देखवहि देखवनि/ देखवैह

१५. **डथिह/ डनहि डथिन/ डलेण/ डवनि**

१६. **चलैत/दैत चनति/दैति**

१७. एथला

एथला

१८.



रैठनि रैठण रैठहि

१६. उ/उ२(सरनाग) उ

२०

. उ (सियाजक) उ/उ२

२१. फागि/फासि फागग/फागु

२२.

जे जे/जे२ २३. ना-बुबब ना-बुबब

२४. केवहि/केवसि/कयवहि

२५. तथगत/ तथन ठ

२६. जा

बहव/जाय बहव/जाय बहव

२७. निकय/निकय

वागव/ वगव रैहवाय रैहवाय वागव/ वगव निकव/रैहवै वागव

२८. उतय/ जतय जत/ उत/ जतय/ उतय

२९.

की बुबब जे कि बुबब जे

३०. जे जे/जे२

३१. कुदि / यादि(मोन पावर) कुगद/यागद/कुद/याद/

यादि (मोन)

३२. ओहो/ ओहो

३३.

हैस/ हैस हैस

३४. लो खाकि दस/लो किरा दस/ लो रा दस

३५. सस-ससब सस-ससब

३६. छह/ सात छ/छः/सात

३७.



की की/ की२ (दीर्घीकारावृत्तये २ ब्रजित)

३१. ऊराँ उराँ

३२. कवयताह/ कवयताह कवयताह

४०. दलान दिशि दलान दिशि/दवान दिय

४९

. लोवाह गयवाह/गयवाह

४२. किड आब किड उव/ किड आब

४३. जाग डव जागत डव जाति डव/जेत डव

४४. गहुँटा जेठ जागत डव जेठ जाग डव गहुँटा/ जेठ जागत डव

४३.

ऊराँ (श्रर)/ ऊराँ(शोली)

४७. वय/ वय क/ क२/ वय क / व२ क२/ व२ क२

४१. व/व२ कय/

क२

४४. एखन / एखन / अखन / अखन

४९.

अहीकेँ अहीकेँ

३०. गहीव गहीव

३९.

धाव पाँव केनाँ धाव पाँव केनाँ/केनाँ

३२. जेकाँ जेकाँ/

ऊकाँ

३३. तहिना तहिना

३४. एकव अकव

३३. रँहिण रँहिण

३७. रँहिण रँहिण



३.१. रँहिन-रँहिलोग

रँहिन-रँहण्ड

३.१. नहि/ ली

३.२. कवरौ / कवरौया/ कवरौध

३.३. तँ/ त २ तय/तध

३.४. तैयारी मे जेठ-बाध/ते, जेठ-बाध/जध

३.५. गिनतीमे दु भाग/बाध/बाँध

३.६. अ पोथी दु भाँक/ भाँग/ भाध/ लेन। यारत झरत

३.७. माय मे / माध दूदा माँक मयत

३.८. देहि/ दण दनि/ दधहि/ दधहि दहि/ दैहि

३.९. द/ द२/ दध

३.१०. उ (सँयोजक) उ२ (सरँगया)

३.११. तका कय तकय तकध

३.१२. गेले (on foot) गधले कधक/ केक

१०.

तहुमे तहुमे

११.

गुनीक

१२.

रँजा कय कय / क२

१३. रँगनाय/रँगनाग

१४. कोवा

१५.

दिवका दिवका

१६.

ततसि



११. गवरौउजहि/ गवरौवनि/

गवरौवहि/ गवरौवनि

१४. रौव रौव

१७.

देह देह(अक्षर)

+०. जे जे'

+१

- से/ के से/के

+२. एखका अखका

+३. बुझिब बुझिब

+४. सुख

/ सुखका सुख

+३. सठलक सठलक +३.

बुझि

+१. कवगयो/उ करेयो ल देवक /कविये-कवगयो

+२. प्रवादि

प्रवाध

+७. सगड १-सष्टी

सगड १-सष्टी

७०. गखे-गखे पौले-पौले

७१. खेवखेक

७२. खेवखेक

७३. वगा

७४. लेख-ले लेख

७५. बुसव बुसव

७६.



बुझव (संबोधन अर्थमे)

९१. योह यएह / अएह/ सेह/ सएह

९१. तातिव

९२. अयनाय- अयनाग/ अयनाग/ अयनाग

९०. निह- निह

९०.

बिबु बिब

९०. जग जग

९०.

जग (in different sense)-last word of sentence

९०. छत गव खाँदि जग

९०.

ल

९०. खेवाए (play) खेवाए

९०. शिकायत- शिकायत

९०.

ठग- ठग

९०

. गठ- गठ

९०. कनिए/ कनिये कनिये

९०. वाकस- वाकस

९०. लोए/ लोय लोए

९०. अडवदा-

उबदा

९०. बुझवहि (different meaning- got understand)

९०. बुझवहि/बुझवहि/ बुझवहि (understand himself)



११७. छलि- छव/ छमि छव

११९. ख्याग- ख्याय

११५.

मोम गौचमबिह/ मोम गौचमबि/ मोम गौबमबिह

११७. कैक- कथक- कथक

१२०.

मग मग

१२१. जमनाग

१२२. जमनाग जवनाग- जमनाग/

जमनाग

१२३. लोगत

१२४.

गवरेमहि/ गवरेमनि गवरेमहि/ गवरेमनि

१२५.

छिखेट- (to test) छिखेट

१२७. करवयो (willing to do) करवयो

१२९. जेकवा- जकवा

१२५. तकवा- तेकवा

१२७.

बिदेमर सुममे/ बिदेमरे सुममे

१३०. करवैमनहुँ/ करवैमनहुँ/ करवैमनहुँ करवैमनहुँ

१३१.

हाबिक (उचकवा लखक)

१३२. ओजम रजम अखमोच/ अखमोस कागत/ कागच/ कागज

१३३. आवे भाग/ आवे-भाग

१३४. पिछा / पिछाम/ पिछा



१३३. कष/ ल

१३७. रैठा कष

(ल) पिठा ज्ञाय

१३१. तखण ल (कष) कहेत अछि। कहे/ सुलै देखे भव द्दम कहेत-कहेत/ सुलैत-सुलैत/ देखेते-देखेते

१३४.

कतेक लोठे/ कतक लोठे

१३६. कमाङ-धमाङ/ कमाङ- धमाङ

१४०

- वग वग

१४१. खेवाङ (for playing)

१४२.

डबिहा डबिग

१४३.

लोअत लोअ

१४४. का कियो / केउ

१४७.

कमे (hair)

१४७.

कस (court-case)

१४१

- रैलगाङ/ रैलगाय/ रैलगा

१४४. जलगाङ

१४६. ककरी कसी

१४०. चवटा चर्टा

१४१. कर्म कवग

१४२. डुराँरै/ डुराँरौ/ डुराँरि डुराँरिग/ डुराँरि



Fortnightly ejournal बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका बिदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

१३.३. एखुनका/

खुनका

१३.४. कष/ बिखष (राकाक खतिम गेहँ)- कष

१३.५. कषक/

कषक

१३.६. गवरी गर्ग

१३.७

रवरी ररी

१३.८. सुना लोवाह सुना/सुना२

१३.९. एनाग-लोनाग

१३.१०

तेना ल खेववहि/ तेना ल खेववनि

१३.११. नरी / ले

१३.१२

छवा छवा

१३.१३. कतह/ कतो कही

१३.१४. उमरिगव-उमेवगव उमरगव

१३.१५. भरिगव

१३.१६. धोम/धोखम धोएम

१३.१७. गग/गग

१३.१८

क क

१३.१९. दवरैजा/ दवरैजा

१३.२०. गी

१३.२१

धवि तक



११२.

घुबि खोष्ट

११३. खोबखोक

११४. बंड

११५. खो/ तू

११६. खोहि (गद्यमे खोहि)

११७. खोखी / खोहि

११८.

कवखोखो कवखोखो

११९. एकखी

१२०. कवखि / कवखि

१२१.

खोखि / खोखि

१२२. खोखि बखि / बखि

१२३.

खोखि खोखि खोखि

१२४.

खो (उँखावा खो)

१२५. खो (उँखावा खो)

१२६. खो खो

१२७. खो / खो

खो

१२८. खोखि / खोखि

खोखि / खोखि

१२९. खोखि / खोखि

१३०.



आक्ति/ क्रि

१९९. **पुँटि**

पुँट

१९२. रैती जवाय/ **जवाँ जवाँ** (आणि नगा)

१९३.

से से

१९४.

हाँ से हाँ (हाँसे हाँ बिभक्तिसे ली कए)

१९३. **खैन खैन**

१९६. **खणव(spacious) खैन**

१९१. होयतहि/ होएतहि/ **होएतनि/होतनि/ होतहि**

१९४. **हाथ मटियाएँ/ हाथ मटियाँ/हाथ मटियाएँ**

१९६. **खैका खैका**

२००. **देखाँ देखा**

२०९. **देखाँ**

२०२. **सतुरि सतुर**

२०३.

सालेरँ सालेरँ

२०४. **सालेरँ/ सालेरँ/ सालेरँ**

२०३. **सालेरँ/ सालेरँ**

२०६. **कैला/ कएनहँ/कैला/ कैला**

२०१. **किड न किड/**

किड न किड

२०४. **घुमेनहँ/ घुगुनहँ/ घुमेनहँ**

२०६. **एनाक/ अनाक**

२१०. **अः/ अह**

२१९. **नया/**



मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

दध (अर्थ-परिवर्तन) २१२ कर्षक/ कलक

२१३.सर्वलक/ सलक

२१४.गिला२/ गिवा

२१५.क२/ क

२१६.जा२/

जा

२१७.आ२/ आ

२१८.भ२ /भ' (१ शकिक कमीक ग्रातक)

२१९.गिअम/ गियम

२२०

लेकईअवा/ लेकईयव

२२१.गहिव अकव ठा/ रीदका/ रीटक ठ

२२२.तहि/तहिं/ तमिं/ तै

२२३.कहि/ कही

२२४.तँअ

तै / तँअ

२२५.नँग/ नगँ/ नमिं/ नहि/लै

२२६.है/ हय / एवोहै/

२२७.डमिं/ डै/ डैक /डग

२२८.दृष्टिअं/ दृष्टियै

२२९.आ (come)/ आ२(conj unct i on)

२३०.

आ (conj unct i on)/ आ२(come)

२३१.कला/ कोला, कोवा/कवा

२३२.कोलै-कोवहि-कोवमि

२३३.कोरौक- कोएरौक

२३४.कोलौ- कएलौ-कएलहुँ/कलौ



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह १३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२३३. किछ न किछ- किछ ल किछ

२३७. केहेन- केहन

२३७. आँ (come)- आँ (conjunction-and)/ आँ । आँ- आँ / आँ- आँ

२३४. लखत- लखत

२३६. घुमेनहुँ- घुमेनहुँ- घुमेनहुँ

२४०. एकाक- एकाक

२४५. लोहि- लोहि/ लोहि

२४२. उ- बाय उ आँक रीट (conjunction), उ कहक (he said)/ उ

२४३. की ल/ कोसी एकी ल/ की हे । की ल

२४४. दृष्टि/ दृष्टि

२४३.

. गोमि/ गोमि

२४७. तै/ तै/ तै/ तै

२४७. जै

/ जाँ जाँ

२४४. सभ/ सभ

२४६. सभक/ सभक

२४०. कहि/ कहि

२४५. कला/ कला/ कला/

२४२. कबकती भय ल/ भय ल/ भय ल

२४३. कला/ कला/ कला/ कला

२४४. अः/ अः

२४३. जल/ जल

२४७. लोहि/

लोहि (अर्थ परिवर्तन)

२४७. केनहि/ केनहि/ केनहि/

२४४. नय/ नय/ नय (अर्थ परिवर्तन)



२३९. कर्षक/ कलक/कर्ष-मर्ष

२४०. गठवहि गठवनि/ गठनगण/ गणठगणहि/ गठवोवनि/

२४१. निशय/ निशय

२४२. हेबर्षथव/ हेबर्षथव

२४३. गहिव अरुव बहल ठा रीचमे बहल ठ

२४४. आकावाप्तमे रिंकारीक प्रयोग उचित ले/ अपोस्ट्रॉफीक प्रयोग हान्स्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक
उकव रँदना अरुग्रह (रिंकारी) क प्रयोग उचित

२४५. कव (गद्यमे ज्ञाह) / -क/ क२/ के

२४६. डेहि- डहि

२४७. वलोथ/ वलोथे

२४८. होएत/ हएत

२४९. जाधत/ जधत/

२५०. आधत/ अधत/ आउत

२५१

. अधत/ अधत/ येत

२५२. निशयरीक/ निशयरीक/ निशयरीक

२५३. गुरु/ गुरुह

२५४. गुरुह/ गुरुह

२५५. अगतह/ अगतह/ एगतह/ एगतह

२५६. जाहि/ जाग/ जग/ जे/

२५७. जागत/ जेतए/ जगतए

२५८. अधव/ अधव

२५९. केक/ केक

२६०. अधव/ अधव/ अधव

२६१. जाध/ जाध/ जध (नामति जाध नगदीह ।)

२६२. गुरुधन/ गुरुधन

२६३. कर्षुअधव/ कर्षुअधव



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिमीक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

२+४. ताहि/ तै/ तथ

२+३. गायरौ/ गाएरौ/ गएरौ

२+७. सके/ सकए/ सकय

२+१.सेवा/सवा/ सकए (भात सवा जेव)

२+१. कहेत बली/देखेत बली/ कहेत छलौ/ कहे छलौ- एहिना चलेत/ गटेत

(गटे-गटेत अर्थ कथला काव परिवर्तित) - आव बूसे/ बूसेत (बूसे/ बूसे छी कदा बूसेत-बूसेत)/ सकेत/ सके। कवेत/ कवे। दे/ देत। छेक/ छे। रचले/ रचलेक। बखरौ/ बखरौक। विष/ विष। वातिक/ वातिक बूसे आ बूसेत केव अण-अण जगहन शयोग समीप अछि। बूसेत-बूसेत आर बूसमिर्ष। हमर बूसे छी।

२+६. दुखारे/ द्राव

२६०.तेष्ट/ तेष्ट/ तेष्ट

२६१.

खन/ खीन/ खुना (जेव खन जेव खीन)

२६२. तक/ धवि

२६३.ग२/ लो (meaning different -जनरौ ग२)

२६४.स२/ स (कदा द२, न२)

२६३.७.७. (तीन अक्षरक मेव रँदना प्रकृष्टिक एक आ एकठा दोसबक उँगयोग) आदिक रँदना ह्र आदि। मह७.७. मह७.७. कर्ता/ कर्ता आदिस उ सशुद्धक कोला आरुष्टकता मैथिलीमे ले अछि। रउर

२६७.रौमी/ रौमी

२६१.रौना/रौना रौना/ रना (बहरौना)

२६१+

.रावी/ (रिन्दरौवावी)

२६६.राती/ राती

३००. अशुबिष्टिय/ अशुबिष्टीय

३०१. लमए/ लमए

३०२. लमउवका/ लमउवका

३०२. लाली/ लाली (

लेटेत/ लेटेत)



३०३. वागव/ वगव

३०४. ठरौ/ ठरौ

३०५. बाखवक/ बखवक

३०६. थी (come)/ थी (and)

३०७. पश्याताग/ पश्याताग

३०८. २ केव बारहाव गेहक अस्तुमे मात्र, यथासंभर रीटमे ले ।

३०९. कहेत/ कहे

३१०.

बल्ह (डव)/ बहे (डवे) (meaning different)

३११. तागति/ ताकति

३१२. खवाग/ खवारौ

३१३. लौग/ लौगि/ लौगि

३१४. जार्ति/ जार्ति

३१५. कागज/ कागज/ कागज

३१६. गिले (meaning different - swallow)/ गिल (थस)

३१७. बह्दिय/ बाह्दिय

DATE-LIST (year - 2013-14)

(१४२५ फसरी साल)

Marriage Days:

Nov.2013- 18, 20, 24, 25, 28, 29

Dec.2013- 1, 4, 6, 8, 12, 13

January 2014- 19, 20, 22, 23, 24, 26, 31.

Feb.2014- 3, 5, 6, 9, 10, 17, 19, 24, 26, 27.

March 2014- 2, 3, 5, 7, 9.

April 2014- 16, 17, 18, 20, 21, 23, 24.



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

May 2014- 1, 2, 8, 9, 11, 12, 18, 19, 21, 25, 26, 28, 29, 30.

June 2014- 4, 5, 8, 9, 13, 18, 22, 25.

July 2014- 2, 3, 4, 6, 7.

Upanayana Days:

February 2014- 2, 4, 9, 10.

March 2014- 3, 5, 11, 12.

April 2014- 4, 9, 10.

June 2014- 2, 8, 9.

Dviragaman Din:

November 2013- 18, 21, 22.

December 2013- 4, 6, 8, 9, 12, 13.

February 2014- 16, 17, 19, 20.

March 2014- 2, 3, 5, 9, 10, 12.

April 2014- 16, 17, 18, 20.

May 2014- 1, 2, 9, 11, 12.

Mundan Din:

November 2013- 20, 22.

December 2013- 9, 12, 13.

January 2014- 16, 17.

February 2014- 6, 10, 19, 20.

March 2014- 5, 12.

April 2014- 16.

May 2014- 12, 30.



June 2014- 2, 9, 30.

FESTIVALS OF MTHILA (2013-14)

Mauna Panchami -27 July

Madhusr avani - 9 August

Nag Panchami - 11 August

Raksha Bandhan- 21 Aug

Kr i shnast ami - 28 August

Kushi Amavasya / Somvar i Vr at - 5 Sept ember

Har t al i ka Teej - 8 Sept ember

Chaut hChandr a-8 Sept ember

Vi shwak arma Pooj a- 17 Sept ember

Anant Catur dashi - 18 Sep

Pi t ri Paksha begi ns - 20 Sep

Ji moot avahan Vr at a/ Ji ti a-27 Sep

Mat ri Navami -28 Sep

Kal ashst hapan- 5 Oct ober

Bel naut i - 10 Oct ober

Pat ri ka R avesh- 11 Oct ober

Mahast ami - 12 Oct ober

Maha Navami - 13 Oct ober

Vi j aya Dashami - 14 Oct ober

Koj agar a- 18 Oct



Dhant er as - 1 November

Di yabat i , shyama pooj a-3 November

Annakoot a/ Govar dhana Pooj a-4 November

Bhr at ri dwi ti ya/ Chi tr agupt a Pooj a- 5 November

Chhat hi -8 November

Sama Pooj aar ambh- 9 November

Devot t han Ekadashi - 13 November

r avi vr at ar ambh- 17 November

Navanna par van- 20 November

Kar ti k Poor ni ma- Sama Vi sar j an- 2 December

Vi vaha Panchmi - 7 December

Makar a/ Teel a Sankr anti -14 Jan

Nar akni var an chat ur dashi - 29 Januar y

Basant Panchami / Sar aswati Pooj a- 4 Febr uar y

Achl a Sapt mi - 6 Febr uar y

Mahashi var at ri -27 Febr uar y

Hol i k adahan -Fagua -16 Mar ch

Hol i - 17 Mar ch

Sapt ador a- 17 Mar ch

Var uni Trayodashi -28 Mar ch

Jur i shi t al -15 April

Ram Navami - 8 April

Akshaya Tri ti ya-2 May



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाश्चिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानुषीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA

Janaki Navami - 8 May

Ravi Br at Ant - 11 May

Vat Savi tri -bar asai t - 28 May

Ganga Dashhar a-8 June

Har i vasar Vr at a- 9 July

Shr ee Guru Poorni ma-12 Jul

VI DEHA ARCHI VE

१.पत्रिकाक सब्ठा पुराण अंक ब्रैल-रिदेह अ, तिवहूत आ देरणागरी कषमे Vi deha e journal 's all old issues in Braille Tirhuta and Devanagari versions

रिदेह अंक ३.०पत्रिकाक पहिल -

रिदेह अंक ३ आगाँक अंक ३.०पत्रिकाक -

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-i/>

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-archi-ve-part-ii/>

२.मैथिली पोथी डाउनलोड Mait hili Books Downl oad

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pot hi>

३.डियो संकलन आँ मैथिली. Mait hili Audi o Downl oads

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-audi o>

४.मैथिली वीडियोक संकलन Mait hili Vi deos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-vi deo>

५. आधुनिक चित्रकला आ चित्र /मिथिला चित्रकला.M t hila Pai nting/ Mbdern Art and Photos

<http://sites.google.com/a/videha.com/videha-pai nt i ngs -phot os/>



रिदेहक एहि सभ मल्लयोगी विकसव सेहो एक खेव जाई ।

७. रिदेह मैथिली क्लिज :

<http://videhaquiz.blogspot.com/>

१. रिदेह मैथिली जानवृत एग्रीजेषव :

<http://videha-aggregation.blogspot.com/>

+ रिदेह मैथिली साहित अंग्रेजीमे अशुदित

<http://madhubani-art.blogspot.com/>

९. रिदेहक पूर्व-कप "भानसविक गाछ" :

<http://gajendratyakur.blogspot.com/>

१०. रिदेह गडिअ :

<http://videha123.blogspot.com/>

११. रिदेह फागल :

<http://videha123.wordpress.com/>

१२. रिदेह: सदेह : पहिन तिवहता (मिथिलाखबर) जानवृत (बैंगल)

<http://videha-sadeha.blogspot.com/>

१३. रिदेह:खेन: मैथिली खेनमे: पहिन खेव रिदेह द्वावा

<http://videha-braille.blogspot.com/>

१४. VI DEHA I ST MAI THI LI FORTNI GHTLY EJ OURNAL ARCHI VE

<http://videha-archives.blogspot.com/>

१५. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका मैथिली सौथीक आर्कागर

<http://videha-pothi.blogspot.com/>

१६. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऑडियो आर्कागर

<http://videha-audio.blogspot.com/>

१७. रिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका रीडियो आर्कागर



<http://videha-videh.blogspot.com/>

१५. बिदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक अ पत्रिका मिथिला टिचकना, आधुनिक कना आ टिचकना

<http://videha-paintings-photos.blogspot.com/>

१६. मैथिल आब मिथिला (मैथिलीक सभसँ लोकप्रिय जानबूत)

<http://maithilaurmitihila.blogspot.com/>

२०.श्रुति प्रकाशन.

<http://www.shrutipublication.com/>

२१.<http://groups.google.com/group/videha>

२२.<http://groups.yahoo.com/group/VIDEHA/>

२३.गजेन्द्र ठाकुर गडेक

<http://gajendratyakur123.blogspot.com>


२४. लषा कथा

<http://mangan-khabas.blogspot.com/>

२३.बिदेह रेडियोकरिता आदिक पहिल पोडकास्ट सांठ-मैथिली कथा:

<http://videha123radio.wordpress.com/>

२७.  [Videha Radio](http://VidehaRadio)

२१.  [Join official Videha facebook group](http://JoinofficialVidehafacebookgroup)

२५. बिदेह मैथिली नाँठ उमेर

<http://maithili-drama.blogspot.com/>

२६.समादिया

<http://esamad.blogspot.com/>

३०. मैथिली फिल्म

<http://maithilifilms.blogspot.com/>



३१. अक्षरचिह्नव आथव

<http://anchinharakhar.kolkata.ablogspot.com/>

३२. मैथिली हाङ्कु

<http://maithili-hai.ku.blogspot.com/>

३३. मानक मैथिली

<http://manak-maithili.blogspot.com/>

३४. विहनि कथा

<http://vihani.katha.blogspot.in/>

३५. मैथिली करिजा

<http://maithili-kavita.blogspot.in/>

३६. मैथिली कथा

<http://maithili-katha.blogspot.in/>

३७. मैथिली समालोचना

<http://maithili-samalochna.blogspot.in/>

महत्वपूर्ण सूचना: The Maithili pdf books are AVAILABLE FOR free PDF DOWNLOAD AT

<https://sites.google.com/a/videha.com/videha/>

<http://videha123.wordpress.com/>

<http://videha123.wordpress.com/about/>



Fortnightly ejournal विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका विदेह'१३७ म अंक ०१ सितम्बर २०१३ (वर्ष ६ मास ६९ अंक १३७)

मानसीमिह संस्कृतम् ISSN 2229-547X VIDEHA



बिदेह.सदेह.१: २: ३: ४:३:७:१:+२.१० "बिदेह"क शिष्ट संस्करण: बिदेह-३-पत्रिका (<http://www.vidaha.co.in/>) क छूत बच्चा समिति।

संपादक: गजेन्द्र ठाकुर।

Details for purchase available at publisher's (print-version) site <http://www.shruti-publication.com> or you may write to shruti_publication@shruti-publication.com

बिदेह



मैथिली साहित्य आन्दोलन



(c) २००४-१३. सर्वाधिकार लेखकाराणी आ जतए लेखकक नाम नहि अछि ततए संगोदकाराणी । रिदेह- प्रथम मैथिली पाष्किक ई-पत्रिका । SSN 2229-547X VI DEHA **सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर । सह-सम्पादक: उमेश महि । सहायक सम्पादक: मिर कमार साँ, बाग बिवास साँ, श्री कल्याणी (मलाज कमार कर्ण) । भाषा-सम्पादन: गजेन्द्र कमार साँ आ पञ्जीकाव विद्यानन्द साँ । कवि-सम्पादन: ज्योति साँ चौधरी आ बमि लेखा मिह । सम्पादक-लेख-अनुवाद: साँ. जया रमि आँ साँ. बाजरीर कमार रमि । सम्पादक-वाचक-वर्ग-चर्चा-लेख-लेखक: साँ. ठाकुर । सम्पादक-सूचना-सम्पर्क-समाद-पुनः महि आँ शिवा साँ । सम्पादक-अनुवाद विभाग- विनीत उमेश ।**

बचनाकाव अपन मूलिक आ अग्रकाशित बचना (जकब मूलिकताक संपूर्ण उतबदासिह लेखक गणक मला छहि) ggajendra@videha.com केँ मेल अछिटेचमेष्टक कगमै .doc, .docx, .rtf आ .txt फॉर्मेटमे पठा सकैत छुथि । बचनाक संग बचनाकाव अपन सक्रिप्ट परिवेय आ अपन फेल कएन गेल फोर्गे पठैतह, मे आशि करैत छी । बचनाक अंतमे ठाँगप बह्य, जे ई बचना मूलिक अछि, आ पहिने प्रकाशिक हेतु रिदेह (पाष्किक) ई पत्रिकालेँ देन जा बहन अछि । मेल प्राप्त होयराक बाद यथार्थतः शीघ्र (सात दिनक तीतव) एकव प्रकाशिक अंकक सूचना देन जायत । 'रिदेह' प्रथम मैथिली पाष्किक ई पत्रिका अछि आ एमै मैथिली, संस्कृत आ अंग्रेजीमे मिथिला आ मैथिलीसँ संरहित बचना प्रकाशित कएन जायत अछि । एहि ई पत्रिकालेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १३ तिथिलेँ ई प्रकाशित कएन जायत अछि ।

(c) 2004-13 सर्वाधिकार स्वकृत । रिदेहमे प्रकाशित सञ्ज्ञा बचना आ आर्काइवरक सर्वाधिकार बचनाकाव आ संग्रहकर्ताक नगमे छहि । बचनाक अनुवाद आ पुनः प्रकाशिक किरा आर्काइवरक उपयोगक अधिकार किराक हेतु ggajendra@videha.com पब संपर्क कक । एहि साँकेँ शीति साँ ठाकुर, मधुनिका चौधरी आ बमि शिवा द्वारा डिजायन कएन गेल ।



मिह वञ्जु

